पत्रिका पंजीयन क्र./2001/6505 दिनांक 29/04/2002

पोस्ट पंजीयन क्र. 536

माहेश्वरी महिला

धर्मो रक्षति रक्षितः

* वर्ष : 24 जनवरी 2025
* अंक : 1 मूल्य : बीस रुपए

जानिए सनातन धर्म को

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन का द्विमासिक मुखपत्र

सादर नमन

सौ. मनोरमा जी लड्ढा

परिवार जिनका मंदिर था, स्नेह जिसकी शक्ति थी
परिश्रम जिसका कर्त्तव्य था, परमार्थ जिसकी भक्ति थी
समाज सेवा जिसकी शक्ति थी,
ऐसी महान दिव्यात्मा को श्रद्धांजलि

स्वर्ण मंजूषा सम्पन्न

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

सौ. मनोरमा जी लड्ढा

यह सर्व विदित है कि जीवन नश्वर है और मृत्यु शाश्वत है तथापि अपनों का श्री हरि शरण हो जाना बहुत दुखदाई होता है। लेकिन ईश्वर के आगे हम सभी नतमस्तक हैं और इस सत्य को हमें स्वीकार करना ही होता है। हम सबकी प्रिय पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष महिला संगठन शिरोमणि परम श्रद्धेय आदरणीय मनोरमा जी लड्ढा दीदी के देवलोक गमन की सूचना ने हम सबको व्यथित कर दिया। है। राष्ट्रीय महिला संगठन व समाज हित के प्रति समर्पित, विनम्र व्यवहार, अत्यंत सेवाभावी, कर्मठ, सरल एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी का यूं चले जाना माहेश्वरी महिला संगठन एवं संपूर्ण माहेश्वरी समाज के लिए अपूर्णीय क्षति है। उनका स्नेह, आदर्श, सुयश एवं मधुर स्मृतियां सदैव हमारे लिए प्रेरणादायक रहेगी।

अश्रुपूर्ण भाव समर्पित श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम भगवान उमा महेश परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर दिवंगत पुण्य आत्मा को श्री चरणों में स्थान दे एवं इस शोकाकुल घड़ी में आदरणीय जीजाजी श्री लड्ढा साहब, लड्ढा परिवार एवं समस्त परिजनों को इस असीम दुख को सहने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करें। ओम शांति।

श्रद्धानवत....

अ. भा. मा. महिला संगठन की समस्त बहनें

माहेश्वरी महिला

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी
महिला संगठन का द्विमासिक मुखपत्र

* प्रकाशक *
माहेश्वरी महिला समिति
22/16, [illegible], इन्दौर
मो.: 9329211011
maheshwarimahilaind@gmail.com

अध्यक्ष
श्रीमती मनोरमा लड्ढा

उपाध्यक्ष
श्रीमती विमलादेवी साबू

सचिव
श्रीमती लता लाहोटी

संयुक्त सचिव
श्रीमती शोभा सादानी

सदस्य
श्रीमती सुशीला काबरा
इन्दौर
श्रीमती गीतादेवी मूंदड़ा
इन्दौर
श्रीमती शान्तिदेवी काबरा
मुंबई
श्रीमती कल्पना गगरानी
मुंबई
डॉ. श्रीमती लता माहेश्वरी
अकोला

संपादक मण्डल
संरक्षक-सौ. लता लाहोटी
संपादक-श्रीमती सुशीला काबरा
सह-संपादक-प्रो. कल्पना गगरानी

अध्यक्ष-सौ. शैला कलंत्री, देवास
उपाध्यक्ष-सौ. विनीता लाहोटी, कोटा
सचिव-सौ. उर्मिला [illegible], इन्दौर
सदस्य-सौ. कविता दीवान, मथुरा
सदस्य-सौ. रमा साबू, इन्दौर

संपादकीय

सनातन धर्म के लिए एकजुट होना अत्यंत आवश्यक है

सस्नेही बहनों, **मकर संक्रांति पर्व की बधाई**

बहुमुखी प्रतिभा की धनी, सदैव समाज के विकास हेतु चिंतक रहने वाली, दूरदृष्टि एवं पारखी नजर वाली, नये-नये कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाने वाली, माहेश्वरी महिला पत्रिका की प्रणेता, जन्मदात्री मनोरमाजी लड्ढा का देवलोकगमन हो गया हो, पर लगता है, वे हमारे बीच महिला पत्रिका के रूप में अमर हैं, अविस्मरणीय हैं। उनकी स्मृतियां अमिट हैं। वे सदैव हमारे बीच जीवंत रहेंगी। दिवंगत आत्मा को हम समस्त राष्ट्रीय बहनों की ओर से शोक संवेदना प्रकट करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मामृतः गमयं, ॐ शांति शांति शांति।।

असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर, उनकी आत्मा पहुंचे व शांति मिले हम यही प्रार्थना करते हैं।

हमारी भारतीय सनातन संस्कृति प्रत्येक व्यक्ति, जीव व वस्तु में परमात्मा का दर्शन करने की शिक्षा देती है। सनातन याने शाश्वत, सदैव टिकने वाला, बना रहने वाला, सनातन धर्म को ही हिन्दू धर्म या वैदिक धर्म कहते हैं। सनातन धर्म सिर्फ एक धर्म नहीं, अपितु जीवन जीने की एक योजनाबद्ध कला या क्रम का तरीका है। मनुष्य के जीवन के हर पड़ाव में क्या क्या योजनाएं हैं व संस्कार निहित है, सब बातों का क्रमबद्ध ज्ञान सनातन धर्म उच्च आचरण के साथ मनुष्य को जीवन जीने की सभ्यता का विशेष मार्ग का दर्शन कराता है।

सनातन धर्म का मूल मंत्र है-सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार, जप, तप, यम, नियम, दान तथा क्षमा का पालन। इस धर्म का पालन एक कठिन तपस्या है, जो सिर्फ स्वयं के बारे में नहीं, विश्व कल्याण की बात करता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का मंत्र किसी को छोटा, बड़ा या ऊंच-नीच का भेदभाव नहीं मानता है। हिंदू धर्म में संस्कारों का बड़ा महत्त्व है। संस्कारों से जीवन में पवित्रता, सुख, शांति और समृद्धि का विकास होता है और उन्हीं के माध्यम से नैतिक कर्त्तव्यों व दायित्वों का बोध कराया जाता है। वैसे हिंदू धर्म का उद्भव वर्षों के अध्ययन वा साधना से हुआ है एवं इसमें उपासना के अनेक मार्ग हैं जैसे-भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग, योग मार्ग एवं इसकी 5 बातें मुख्य हैं-वंदना, वेद पाठ, व्रत, दान और तीर्थ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सभी सनातन धर्मावलंबियों को एकजुट होना अत्यंत आवश्यक है। सभी जानते हैं-संगठन में ही शक्ति है। महिलाओं का भी सशक्तिकरण होना आवश्यक है, साथ ही स्वसुरक्षा का प्रशिक्षण भी जरूरी है। समाज को जागरुक व संगठित होना अति आवश्यक है। लड़कों को बचपन से लड़कियों के प्रति सम्मान के भाव व उनकी सुरक्षा का ध्यान रखना सिखाना होगा। सभी की मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा, तभी हमारा हिन्दू धर्म व सनातन संस्कृति की रक्षा कर पायेंगे। जय श्रीराम

सुशीला काबरा, संपादक, महिला पत्रिका

अखिल भारतवर्षीय
माहेश्वरी महिला संगठन
(कार्यकाल सत्र 2023-25)
* राष्ट्रीय अध्यक्ष *
सौ. मंजु बांगड़, कानपुर
*
* राष्ट्रीय महामंत्री *
सौ. ज्योति राठी, रायपुर
*
* राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष *
सौ. किरण लड्ढा, दिल्ली
*
* राष्ट्रीय संगठन मंत्री *
सौ. ममता मोदानी, भीलवाड़ा
*
* रा. निवृत्तमान अध्यक्ष *
सौ. आशा माहेश्वरी,कोटा
*
* आंचलिक उपाध्यक्ष *
सौ. मंजु मानधना, नई दिल्ली
उत्तरांचल
सौ. अनुसूइया मालू,कोल्हापुर
दक्षिणांचल
सौ. उर्मिला कलंत्री, अहमदाबाद
मध्यांचल
सौ. गिरिजा सारडा, विशाखापत्तनम
पूर्वांचल
सौ. मधु बाहेती, कोटा
पश्चिमांचल
*
* आंचलिक संयुक्त मंत्री *
सौ. मंजु हुरकट, मेरठ
उत्तरांचल
श्रीमती रेणु सारडा, हैदराबाद
दक्षिणांचल
सौ. अनिता जवंधिया, बनखेड़ी
मध्यांचल
सौ. निशा लड्ढा, कोलकाता
पूर्वांचल
सौ. शिखा भदादा, भीलवाड़ा
पश्चिमांचल
*
* कार्यालय मंत्री *
सौ. प्रीति तोषनीवाल (कानपुर)

अध्यक्षीय एक विचार

आने वाली पीढ़ियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर को समझें और उसे गर्व से अपनाएं

प्रिय बहनों , जय उमा महेश

सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मां कश्चिद दुख भाग भवेत्।।

सभी सुखी होवे, सभी रोग मुक्त रहें, सभी मंगलमय के साक्षी बने और किसी को भी दुख का भागी न बनना पड़े। सर्व कल्याण के इसी सुखद भाव के साथ आप सभी को राष्ट्रीय अध्यक्ष मंजु बांगड़ का राम-राम।

हमारी सनातन संस्कृति का एक सूत्र वाक्य है ''धर्मो रक्षति, रक्षितः अर्थात धर्म की रक्षा करो, धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा। सनातन धर्म को दुनिया का सबसे प्राचीन धर्म माना जाता है। सनातन का मतलब है शाश्वत या सदा रहने वाला। कहा भी गया है-

यह अनवरत अक्षुण्ण नित्यगामी संस्कृति है, जिसका अस्तित्व कभी मिट नहीं सकता,

यही सनातन संस्कृति है-

''वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना से ओत-प्रोत
जिसका महत्व कभी कम हो नहीं सकता

परंतु आज के इस महत्वाकांक्षी युग में हम अक्सर धर्म की बातों में चुप हो जाते हैं, जब हमें अपने व्यक्तिगत या आर्थिक नुकसान का डर होता है। लेकिन जैसे ही हमें धर्म से कोई सहयोग या लाभ होता है, हम अपने धर्म के प्रति जागरूक हो जाते हैं। यह सोचने का समय है कि क्या हम सच में धर्म के रक्षक हैं, या केवल तब धर्म की बात करते हैं जब हमें इससे व्यक्तिगत फायदा होता है?

अगर हमें अपनी एकता और संस्कृति की रक्षा करनी है, तो यह जरूरी है कि हम सभी मिलकर अपनी संस्कृति के संरक्षण हेतु काम करें। हमें यह समझना होगा कि जब हम एकजुट होते हैं, तो कोई भी ताकत हमारे धर्म और संस्कृति को नष्ट नहीं कर सकती।

आज हम अपनी जिम्मेदारी उठाते हैं, ताकि हम अपने धर्म, संस्कृति और परंपराओं को सुरक्षित रख सकें। बांग्लादेशी हिंदुओं के समर्थन में हमारे प्रयासों से यह साबित होता है

कि हम एक सशक्त और संगठित समुदाय हैं। हमें यह भी सुनिश्चित करना है कि हम कभी भी उन ताकतों को बढ़ावा नहीं देंगे जो हमारे धर्म और संस्कृति के खिलाफ हैं।

हम जानते हैं कि क्रिसमस जैसे त्यौहार अन्य समुदायों की परंपरा हैं, और हमें अपनी संस्कृति की रक्षा करते हुए समाज में सभी के साथ सम्मानपूर्वक और सौहार्दपूर्ण तरीके से रहना चाहिए। लेकिन साथ ही, हमें यह भी समझना होगा कि हमें अपनी परंपराओं और धार्मिक विश्वासों को भी सशक्त बनाना है।

आजकल हम देख रहे हैं कि कई हिंदू अपने घरों, दुकानों, और आयोजनों में क्रिसमस की सजावट करते हैं, सांता क्लाज के साथ अपनी पार्टियों का थीम, उसका माहौल चर्च जैसा बनाने की कोशिश करते हैं। यह सोचने का समय है, कि हम अपने संस्कारों और परंपराओं के साथ समर्पण से क्यों नहीं जुड़ते? क्या यह सही है, कि हम अपनी हिंदू संस्कृति और परंपरा से जुड़ी चीजों को छोड़कर, केवल दूसरों की परंपराओं को अपनाते जाएं?

हम क्यों अपनी संस्कृति को छोड़कर किसी और की परंपराओं को अपनाएं?

आइए, हम संकल्प लें कि हम अपनी पहचान और धर्म को गर्व से जीएं, बिना किसी दबाव या भटकाव के। हम अपने घरों, दुकानों और आयोजनों में अपने हिंदू धर्म की छाप छोड़ेंगे, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर को समझें और उसे गर्व से अपनाएं।

याद रखें:

जब हम एकजुट होते हैं, तो कोई भी शक्ति हमारे धर्म और संस्कृति को नष्ट नहीं कर सकती।

हमें अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और गौरवपूर्ण समाज छोड़कर जाना है। हमारे समाज की रक्षा हमारे हाथों में है, और हम इसे छोड़ने नहीं देंगे।

आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि हम किसी भी ताकत को हमारी संस्कृति और धर्म के खिलाफ उठने नहीं देंगे। हम अपनी पहचान और संस्कृति को गर्व से जीएं।

संगठित रहें, जागरूक रहें, और धर्म की रक्षा करें।

कैलेंडर नव वर्ष 2025 का शुभारंभ हो चुका है अतः आप सभी को आने वाले स्नेह व ऊर्जा से परिपूर्ण संक्रांति पर्व की हृदय पूर्वक बधाई। चंद पंक्तियां अपनी सनातन संस्कृति के प्रति समर्पित है...

यह जिंदा है

राम की मर्यादा में, श्री कृष्ण के ज्ञान और प्यार में,

महाराणा के शौर्य और शिवाजी की हुंकार में,

शिवशंकर के अद्वैत में, विवेकानंद के दर्शन जीवन आधार में,

यह कल जिंदा थी,आज जिंदा है और कल भी जिंदा रहेगी इस संसार में,

जय भारत, वंदे मातरम

मंजु बांगड़

राष्ट्रीय अध्यक्ष

जानिये सनातन धर्म को

सनातन : नींव, विकास चुनौती और बदलाव

सनातन धर्म अर्थात् जिसका ना आदि है, ना अंत। जिसे हम **वैदिक, आर्य, हिन्दू धर्म** के नाम से जानते हैं। पंद्रहवीं शताब्दी ईसा पूर्व अर्थात् आज से सत्रह हजार साल पहले से इसके अस्तित्व के सबूत मिलते हैं। **प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद 8000 वर्ष** पूर्व बना जिसे वेद पाठी ब्राह्मणों ने दूसरी पीढ़ी को रटकर, सुनाकर आगे बढ़ाया। इसके दस चैप्टर हैं जिसे मंडल कहते हैं जो एक बार में नहीं मानव विकास की जरूरतों को समझते हुए विस्तार करता रहा।

ऋग्वेद लेखन के बाद वर्षों में सनातन धर्म जो एक जीवन पद्धति थी उसमें वर्ण व्यवस्था **ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र** आई जो जन्म से नहीं कर्म से जुड़ी थी।

इंद्र, वरुण, सोम, वायु, मारुत उस काल के देवता थे। 1000 बी.सी. की यह व्यवस्था थी। अपनी जीविका और कर्म के अनुरूप वर्षा के लिये इंद्र तो जंगलों के लिये वायु, निर्माण के लिये अग्नि को पूजा जाने लगा। अथर्ववेद काल में सिंधु घाटी सभ्यता में रुद्र पूजन अर्थात् लिंग पूजन होने लगा। इसके अवशेष मिले तथा आर्य के साथ अन्य लोगों ने भी ये वेद विस्तार किया।

अर्थात् सनातन विस्तार और बदलाव में विश्वास करता है

सनातन धर्म के समक्ष आई चुनौतियां

(1) छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक वर्ण व्यवस्था विकृत रूप में पहुंची। ब्राह्मणों के सुपर पॉवर के विरोध और सामान्य के अस्तित्व को बचाने के लिये जैन और बौद्ध धर्म का उदय और बहुत तेजी से विस्तार हुआ। मौर्य राजाओं, चंद्रगुप्त और अशोक ने इसे पूरे एशिया महाद्वीप में फैलाया।

इस चुनौती का सामना करते हुए सनातन में वेद के बाद अब **उपनिषद लिखे गये जो संख्या में 108 हैं।** वेद जीवन शैली पर बताने वाले ग्रंथ थे, जबकि उपनिषद व्यक्ति केंद्रित अर्थात् **जन्म-मृत्यु, मोक्ष, निर्वाण** की व्याख्या करते हैं।

(2) दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य के अंत के बाद विदेशी शाका, कुशाण, कुशना, इंडो ग्रीक आने से फिर धर्म के समक्ष चुनौती आई, टुकड़ों में बंटी संस्कृति में 600 साल बाद बदलाव स्वीकारते हुए धर्मशास्त्र, धर्म सूत्र, पुराण लिखे गये।

ब्रह्म, विष्णु, महेश के देवत्व को माना।

2nd B.C. से 2nd A.D. तक स्मृति और पुराण सामने आये, जिनका प्रभाव सनातन में पांचवीं शताब्दी तक रहा।

(3) पांचवीं से सातवीं शताब्दी में हूण, तुर्क, मुगलों के आने से पुनः संस्कृति बदली और सनातन की परम्परा को बचाने के भक्ति आंदोलन पूरे भारत में हुआ। **नानक, कबीर, चैतन्य (बंगाल), ज्ञानेश्वर, नामदेव (महाराष्ट्र),**

मीरा (राजस्थान) जयदेव सामने आये। **वैष्णव (शंकराचार्य, वल्लभाचार्य) नैनार** आदि। किताबें, **प्रवचन, कर्मकांड, नवधा भक्ति के रूप में पूजन, कंठी, व्रत, उपवास, पाठन, स्मरण** की परम्परा चल निकली।

(4) यूरोपियों के आगमन अर्थात् **15वीं शताब्दी** में ईसाई धर्म फिर चुनौती के रूप में सामने आया। धर्मांतरण बहुत तेजी से होने लगा। इस बार सनातन की इस चुनौती का जवाब सामाजिक आंदोलनों और राजनैतिक आंदोलनों से हुआ। आर्य समाज, ब्रह्म समाज और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान से धर्म निरेक्षता भाव सनातन ने विकसित किया।

सनातन समक्ष आज की चुनौती

विगत **17000 वर्षों** में सनातन धर्म परिस्थिति अनुरूप चुनौतियों के अनुरूप अपने को बदला और विस्तारित किया। इस महान संस्कृति ने अपने विचारों को पहले श्रुत परम्परा बोल कर रटाकर दूसरी पीढ़ी को सुनाना, शिलालेख, ताड़पत्र लेख, पुस्तकों में लिपिबद्ध किया।

आज का युवा वैश्विक स्तर पर ज्ञान और तर्क पर आधारित बातों को स्वीकार करता है। भक्ति के कालांतर में विकृत स्वरूप अंध श्रद्धा में उसकी तार्किक शक्ति विश्वास नहीं कर सकती। आज हमें समझना और समझाना होगा।

चुनौती का एक सहज विकल्प

ब्रह्मा, विष्णु, महेश त्रिदेव हैं तीनों कार्यों के।
निर्माण, रक्षण, अंत या बदलाव।

ये तीन आवश्यकताएं हैं, निर्णय हैं, जीवन की प्रगति और सफलता के।

ब्रह्मा–निर्मिति–जन्म के बाद अपने व्यक्तित्व का निर्माण आपको ही करना होगा। अपनी शक्ति और क्षमता से।

रक्षण–विष्णु– राम और कृष्ण को हम अपना रोल माडल समझें। वैश्वीकरण के इस प्रतिस्पर्धी भौतिक संस्कृति में जीवन जटिलतर हो रहा है। राम और कृष्ण, दो अलग अलग राह से अर्थात् सात्विक नीति और कूटनीति जो आपके स्वभाव के अनुरूप है उसे अपना कर सफलता के शीर्ष पर पहुंच सकते हैं। आपकी हर समस्या पर आपका कृत्य कब कहां कैसा होना चाहिये इसका हाल आपको रामायण, महाभारत और भगवत गीता में आसानी से मिल जायेगा।

महेश–शांत और तांडव–व्यवहार की दो परिस्थितियां, कार्य का आरंभ और परिस्थिति अनुरूप उसका अंत। व्यवहार में शांतता, परंतु अतिरेक होने पर उसका संहार भी जरूरी है।

जीवन की हर परिस्थिति में इन चरित्रों से आप अपनी सही राह चुन सकते हैं। जितना दुख दर्द इनकी जीवन कथा में है उतना आपकी मैं नहीं फिर भी उनका सामना करते हुए ये मनुष्य रूप में राजाधिराज बने तो फिर आप टेंशन, फ्रस्ट्रेशन, डिप्रेशन में क्यूं जायें।

सनातन ग्रंथ आपके गुरु, आपके मेंटर, आपके मनोचिकित्सक, आपके सच्चे दोस्त हैं।

आवश्यकता है इन्हें पूजने की जगह, इन्हें पढ़िये। अनेको भाषाओं में ये उपलब्ध हैं। ऑडियो–वीडियो संग आपकी मुट्ठी में है, मुट्ठी से इन्हें दिल–दिमाग में पहुंचाइये।

सच्चे सनातनी बनने की शुभकामनाओं सह

आपकी
प्रो. कल्पना गगडानी, सह संपादक

शाश्वत है वही सनातन है

सनातन धर्म यानी अनवरत, लगातार की बुनियाद सत्यम् शिवम् सुंदरम् है, ऋग्वेद के अनुसार जो सदा के लिए सत्य है यानी शाश्वत है वही सनातन है। ईश्वर, आत्मा और मोक्ष सत्य है, इसलिए इस मार्ग को बताने वाला धर्म ही सनातन धर्म है और सत्य भी है। यह सत्य अनादिकाल से चल रहा है, जिसका अंत नहीं होगा।

हमारे गौरव... समाज को किया है गौरवान्वित

महाराष्ट्र में भाजपा माहेश्वरी समाज का परचम

महाराष्ट्र में भाजपा की टिकट पर हमारे माहेश्वरी समाज के यह तीन विधायक जीते हैं समस्त माहेश्वरी समाज की ओर से बहुत-बहुत बधाई। आप तीनों ने महाराष्ट्र में समाज का परचम फहराया। प्रशासन में आप समाज की सहभागिता दर्शायेंगे।

सम्मानपूर्ण उपलब्धि

मणिकर्णिका चंद्रिका राजे झंवर बॉक्सिंग रेफरी

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन गौरवान्वित है, भारतीय बॉक्सिंग के इतिहास में राजस्थान की पहली महिला और सबसे कम उम्र की उम्मीदवार, जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर उच्चतम रैंक (3 स्टार) की बॉक्सिंग रेफरी/जज परीक्षा उत्तीर्ण की है, जो भारतीय बॉक्सिंग महासंघ (वर्ल्ड बॉक्सिंग, भारतीय ओलंपिक संघ से सम्बद्ध और युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रमाणित) द्वारा आयोजित की जाती है। यह कोई और नहीं बल्कि राजस्थान से हमारी अपनी मणिकर्णिका चंद्रिका राजे झंवर हैं। चंद्रिका, खेलो इंडिया यूथ और यूनिवर्सिटी गेम्स, राष्ट्रीय बॉक्सिंग चैंपियनशिप, ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी चैंपियनशिप, ऑल इंडिया पुलिस मीट, इंटर सर्विसेस चैंपियनशिप, और विभिन्न प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय बॉक्सिंग चैंपियनशिप के लिए एशियाई चैंपियंस, एशियाई गेम्स, राष्ट्रमंडल खेल, प्री ओलंपिक इंडिया कैम्प्स और एक्सपोज़र टूर्स जैसी प्रतियोगिताओं के लिए भारतीय बॉक्सिंग स्क्वाड चयन में ऑफिशियल के रूप में कार्य कर रही हैं। इस क्षेत्र में एक और कदम आगे बढ़ाते हुए, चंद्रिका का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय बॉक्सिंग अधिकारी के रूप में प्रतिनिधित्व करना है। उज्जवल भविष्य हेतु राष्ट्रीय संगठन की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

मंजू बांगड़, राष्ट्रीय अध्यक्ष ❋ ज्योति राठी, राष्ट्रीय महामंत्री

दीपाली भंडारी

दक्षिण राजस्थान की श्रीमती स्नेह लता भंडारी के देवर श्री अनिल भंडारी एवं श्रीमती कृष्णा भंडारी की सुपुत्री **दीपाली भंडारी** ने अपनी स्वर्णिम उपलब्धि द्वारा माहेश्वरी समाज के गौरव में चार चांद लगाए। राष्ट्रीय संगठन की ओर से बहुत-बहुत बधाई तथा शुभकामनाएं।

स्मृति मंधाना (मानधना)

देश का नाम रोशन करने वाली भारतीय महिला क्रिकेट टीम की सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना (मानधना) को अर्जुन अवार्ड से पुरस्कृत किया गया ।

समाज को किया गौरवान्वित

भामिनी राठी बनीं सिविल जज

अगर आप खुद पर विश्वास रखते हैं और मेहनत के साथ आगे बढ़ते हैं, तो सफलता आपके कदमों में होती है। हर मुश्किल राह सफलता की एक नई मंज़िल की ओर ले जाती है। बस, सच्ची लगन और सही मार्गदर्शन की जरूरत होती है।

इंदौर ग्रामीण जिला संग संपन्न माहेश्वरी समाज के लिए गर्व के पल इंदौर ग्रामीण जिला के छोटे से स्थान कंपेल से आने वाले हमारे आदरणीय भैया श्री युगल किशोर,सुधा जी राठी (शांति ट्रेवल्स)की छोटी बालिका **भामिनी राठी** CIVIL JUGDE बनने पर पश्चिमी मध्यप्रदेश प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से हार्दिक बधाईयां शुभकामनाएं।

भामिनी राठी की प्रेरणादायक कहानी :

भामिनी राठी की सफलता इस बात का प्रमाण है कि मेहनत, अनुशासन, और परिवार के समर्थन से हर कठिन लक्ष्य को पाया जा सकता है। उनके बड़े पापा जस्टिस बी.डी. राठी ने उनके जीवन में गुरु की भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल भामिनी को कानून के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया, बल्कि हर कदम पर उनका मार्गदर्शन और समर्थन किया।

जस्टिस बी.डी. राठी ने भामिनी को सिखाया कि संघर्ष सफलता का हिस्सा है और अनुशासन जीवन का मूलमंत्र। उनकी दी हुई सीख और परिवार का सहयोग भामिनी के आत्मविश्वास को बनाए रखने में सहायक रहा।

भामिनी ने इस प्रेरणा को अपनी मेहनत और सही रणनीति के साथ जोड़ा। उन्होंने सिविल जज बनने का सपना पूरा कर यह साबित कर दिया कि सही मार्गदर्शन, परिवार का समर्थन, और कठिन परिश्रम किसी भी लक्ष्य को साकार कर सकता है। उनकी कहानी हर युवा को प्रेरणा देती है कि बड़ी सफलता के लिए छोटे-छोटे कदम और निरंतर प्रयास ही मायने रखते हैं।

भामिनी राठी की अध्ययन तकनीक और उनकी मेहनत का तरीका हर उस विद्यार्थी के लिए प्रेरणादायक है जो सिविल जज या किसी अन्य प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहा है। उनके सफलता के सफर में उनकी अनुशासनप्रियता और पढ़ाई के प्रति गंभीरता ने मुख्य भूमिका निभाई ।

भामिनी राठी की पढ़ाई की रणनीति:

1. सुबह जल्दी उठने की आदत:

* भामिनी का मानना था कि सुबह का समय सबसे शांत और फोकस्ड पढ़ाई के लिए उपयुक्त है।

* उन्होंने सुबह जल्दी उठने और उस समय सबसे कठिन और ध्यान देने वाले विषयों को पढ़ने की आदत विकसित की।

2. क्लास के बाद तुरंत रिवीजन:

* भामिनी क्लास में जो कुछ भी पढ़ाया जाता था, उसका तुरंत रिवीजन कर लेती थीं।

* उनका मानना था कि पढ़ाई को ताजा रखने के लिए रिवीजन सबसे महत्वपूर्ण है।

* यह आदत उन्हें विषयों को गहराई से समझने और लंबे समय तक याद रखने में मदद करती थी।

3. बेयर एक्ट्स पर फोकस :

* उन्होंने कानून की तैयारी में बेयर एक्ट्स और

उनकी व्याख्या को प्राथमिकता दी।

* भामिनी का मानना था कि कानून की जड़ को समझने के लिए मूलभूत कानून का अध्ययन बेहद जरूरी है।

* वह शब्दों के अर्थ, उनकी कानूनी व्याख्या, और प्रावधानों के विभिन्न पहलुओं को ध्यान से समझती थीं।

4. प्रत्येक विषय का विश्लेषण:

* भामिनी ने केवल पढ़ाई नहीं की, बल्कि हर विषय का गहन विश्लेषण भी किया।

* उन्होंने न केवल प्रावधानों को रटने का प्रयास किया, बल्कि उनके व्यावहारिक उपयोग और केस लॉ को समझने पर जोर दिया।

5. अभ्यास और समय प्रबंधन:

* भामिनी ने नियमित रूप से मॉक टेस्ट और पुराने प्रश्नपत्र हल किए।

* समय प्रबंधन उनके पढ़ाई के तरीके का मुख्य हिस्सा था, जिससे उन्हें परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने में मदद मिली।

प्रेरणा :

भामिनी राठी की कहानी यह सिखाती है कि अनुशासन, सही रणनीति, और निरंतरता से बड़े से बड़ा लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। उनकी पढ़ाई की आदतें और उनकी मेहनत का तरीका उन सभी के लिए प्रेरणा है जो अपने करियर में उत्कृष्टता प्राप्त करना चाहते हैं।

शोभना सारड़ा को सोशल वर्कर का अवार्ड

हित का भाव रहे मन में,दिल में सबसे प्रीत रहे
वही होता मानव जग में , जन जन का उद्धार करता रहे
पर के लिए जीना, पर उपकार करते रहना
दुसरों के लिए, स्वयं को बीमार कर लेना
ईश्वर रखें दूर उसे, संसार की हर गलत बातों से
वो नासमझ और मजबूर है अपनी अच्छी आदतों से।
ऐसी ही एक हस्ती है हमारी सखी शोभना जी सारड़ा।

बीकानेर की बेटी और पश्चिम बंगाल प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के अन्तर्गत सिक्किम संगठन से

अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की कार्यकारणी सदस्य श्रीमती शोभना जी सारडा को सिक्किम के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रेम सिंह तमांग के हाथो सोशल वर्कर का अवार्ड मिलना हम सभी के लिये गर्व की बात है और इस गौरवान्वित पलों के लिये उन्हें पश्चिम बंगाल प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन परिवार की तरफ से असंख्य हार्दिक शुभकामनायें। राष्ट्रीय संगठन की ओर से हार्दिक बधाई।

अदिति डाड ने जीता स्वर्ण पदक

माहेश्वरी समाज मंदसौर सहित संपूर्ण प्रदेश का गौरव, समाज की लाड़ली बिटिया अदिति अभिनवजी डाड (माहेश्वरी) और पूरी भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम को ओमान में आयोजित महिला जूनियर एशिया कप 2024 में चैम्पियन ट्रॉफी स्वर्ण पदकजीतने एवं आगामी वर्ष 2025 में आयोजित महिला जूनियर वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई होने पर हार्दिक-हार्दिक बधाईयां एवं शुभकामनाएं।

हम प्रभु से यही विनती करते है कि अदिति एवं महिला जूनियर टीम वर्ल्ड कप जीतने में सफलता प्राप्त कर समाज और देश का नाम गौरवान्वित करें।

ज्ञान सिद्धा साहित्य समिति

मंथन के मोती

''घर बैठे मतदान''
व्यंग्य कविता प्रतियोगिता

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत ज्ञानसिद्धा - राष्ट्रीय साहित्य समिति की तृतीय प्रतियोगिता ''घर बैठे मतदान'' - व्यंग्यात्मक कविता लेखन 30 सितम्बर 2024 को निश्चित की गई समयावधि में संपन्न हुई। सभी 27 प्रदेशों से निर्धारित संख्या में प्रस्तुतियाँ आई । लेखिकाओं ने अत्यंत उत्साहपूर्वक इस प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रत्येक 6 माह के अंतराल पर होने वाली यह लेखन प्रतियोगिता हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं को पटल पर रखती है। हमेशा की तरह समिति ने महिलाओं की व्यस्तता, त्योहार, शादी-ब्याह की गहमा-गहमी को ध्यान में रखते हुए लेखन के लिये तीन माह का समय दिया था। इस बीच चार-पांच कार्यशालाएं लेखन में सहायता हेतु ली गई।

2024 के मध्यावधि चुनावों में मतदाता और मतदान की स्थिति को ध्यान में रखते हुए इस प्रतियोगिता का विषय चयन किया गया था। हम सभी ने देखा कि मतदान का प्रतिशत कितना कम था, और मतदाता छुट्टियाँ मनाने के मूड में आकर राष्ट्र के प्रति अपनी बड़ी ज़िम्मेदारी को नज़रअंदाज़ कर गया। नतीजा सबके सामने ... अल्पमत की सरकार । हमारे अकेले के वोट से क्या ही होगा वाली मानसिकता ही अल्पमत की सरकार ले आई। बहुमत की सरकार जो देशहित के निर्णय सहजता से ले सकती है, यह जानने के बाद भी मतदान जैसे महत्वपूर्ण कार्य को अपने किंचित् स्वार्थ की बलि चढ़ाना अंततोगत्वा कितना भारी पड़ा, यह हर जागरूक नागरिक जानता है।

इस प्रतियोगिता का उद्देश्य इसी स्वार्थी, आलस्यपूर्ण, लापरवाह मानसिकता को झकझोरना था, जिससे हम आत्मावलोकन करें, अपने महत्वपूर्ण अधिकार के प्रति जागरूक होकर देश के प्रति कर्तव्य निर्वहन करें।

व्यंग्यात्मक शैली में 22 लाइन की कविता माँगी गई थी, प्रत्येक लाइन में न्यूनतम 5 व अधिकतम 8 शब्द लिखने थे। कई लेखिकाओं ने अपने लेखन को पूरी तरह जाँचा नहीं, शब्द या तो कम थे या बहुत ज्यादा, इसीलिए बहुत सी रचनाएँ निरस्त हुई। ये शायद वही मानसिकता थी कि इतनी रचनाओं के बीच मेरी अकेले की रचना के शब्द क्या समिति ध्यान से देखेगी, शायद नहीं । पर निर्णायक मंडल की तीक्ष्ण दृष्टि से नियमों की अनदेखी छुपी नहीं रहती। विषय ऐसा था कि यदि थोड़े से भी मनोयोग से लिखते तो कविता का स्तर काफ़ी अच्छा होता, पर खानापूर्ति के लिए किया लेखन हमेशा उथला-उथला ही रहता है। कई कार्यशालाओं में चर्चा के बाद भी कुछ लोगों ने व्यंग्य को बड़े सपाट तरीके से उपदेशात्मक रूप में लिखा, कुछ ने आपबीती बना कर व्यक्त किया, जिसमें व्यंग्य का लेशमात्र भी नहीं था । शब्द चयन साधारण स्तर का था । इस तरह अनिच्छा से या पदाधिकारियों के कहने पर किया लेखन रचनाओं को बेहद स्तरीय बना गया ।

यद्यपि व्यंग्य लेखन सहज नहीं होता, पर धारदार, चुटीले शब्द, कसा हुआ लेखन, गूढ़ार्थ, सभ्य कटाक्ष आदि ऐसी खूबियाँ हैं, जिनसे व्यंग्य निखरता है। इस कविता लेखन के माध्यम से समिति ने एक सामाजिक, राजनीतिक बुराई को इंगित करने का प्रयास किया। कई लेखिकाओं ने इसके मर्म को समझ कर शाब्दिक प्रहार किया। अच्छा कसा लेखन, गूढ़ार्थ, कटाक्ष और विषय पर पकड़ रखने वाली रचनाएँ ऊपर आई। व्यंग्यात्मक शैली को आद्योपांत बनाये रखने की भी भरपूर कोशिश की गई। माना कि ये प्रतियोगिताएँ सर्व साधारण की साहित्यिक रुचि, वैचारिक चिंतन- मनन

प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित की जाती हैं, पर इन्हीं के बीच से समय-समय पर कुछ मणि- माणिक्य ऐसे भी निकले हैं, जिन्होंने अपना व समाज का नाम रौशन किया है। बस यही सब समिति को कुछ अनूठा प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करता है ।कुल मिलाकर अच्छा लेखन हमेशा की तरह ऊपर आया, कविताएँ यदि सर्व साधारण के अंतस् को झकझोर कर मतदान के प्रति जागरुकता लाने में सक्षम हो सकें तो विषय की सार्थकता एवं एक सोच की विजय होगी। यूँ भी बदलाव तो लिखने-पढ़ने और चिंतन-मनन से ही आयेगा।

सार संक्षेप में कहूं तो हमारे अटूट प्रयासों और लेखिका वर्ग द्वारा अपना सर्वोत्तम देने की उत्कट आकांक्षा के परिणाम स्वरुप व्यंग्यात्मक कविता लेखन जैसी विधा में भी इस बार कई शानदार, जानदार प्रस्तुति आई। हम राष्ट्रीय नेतृत्व के बहुत आभारी हैं, जिन्होंने समिति पर अटूट विश्वास किया है और हमें कार्य करने हेतु खुला आसमान दिया है। प्रदेश पदाधिकारियों का दिल की गहराइयों से धन्यवाद, जिनके अप्रतिम सहयोग और तत्परता के कारण प्रतियोगिता परवान चढ़ती है। लेखिका वर्ग की हिंदी भाषा, साहित्य के प्रति उत्तरोत्तर जाग्रत होती अभिरुचि, परिमार्जित भाषा, परिष्कृत होते विचारों और लेखन के सतत प्रयासों के परिणाम स्वरुप प्रतियोगिता नवीन आयामों को छूती है। हमारे निर्णायक मंडल का भी विशेष आभार, जिनकी तत्परता के चलते समिति समय से पहले ही परिणाम घोषित करती है और सफलता के अनूठे मापदंड स्थापित कर पाती है।

समिति प्रदर्शक-**मंजू मानधना**, दिल्ली

राष्ट्रीय समिति प्रभारी-डा. अनुराधा जाजू, हैदराबाद

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन के अन्तर्गत ज्ञानसिद्धा - साहित्य समिति की राष्ट्रीय स्तर की तृतीय प्रतियोगिता ''घर बैठे मतदान'' व्यंग्यात्मक कविता लेखनके परिणाम निम्नलिखित हैं-

प्रथम स्थान - श्रीमती जयश्री भंडारी ,दिल्ली प्रदेश।

द्वितीय स्थान- श्रीमती सुनीता माहेश्वरी, नासिक, महाराष्ट्र प्रदेश ।

तृतीय स्थान - श्रीमती लक्ष्मी काबरा , गाडरवाडा, नरसिंह पुर, पूर्वी मध्य प्रदेश ।

सान्त्वना पुरस्कार परिणाम निम्नलिखित हैं.....

चतुर्थ स्थान-श्रीमती संगीता अनिमेष चाँडक, सिलवासा, गुजरात प्रदेश। पंचम -श्रीमती पूनम मोहता, पुरलिया, पश्चिम बंगाल प्रदेश। षष्ठम-श्रीमती दीपाली दिलीप रांदड, लातूर, महाराष्ट्र प्रदेश। सप्तम - श्रीमती रश्मि बाहेती, जोरहाट, असम प्रदेश। अष्टम- श्रीमती मंजू राठी, हैदराबाद, तेलंगाना आन्ध्रप्रदेश ।

उपरोक्त पुरस्कारों के अतिरिक्त कई प्रतिभागियों ने अच्छे प्रयास किये और राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचे । पुरस्कार वितरण की नियत संख्या निर्धारित होने के कारण हम चयनित प्रतिभागी सदस्यों के केवल नाम घोषित कर रहे हैं।

श्रीमती सुचेता माहेश्वरी मांधना, जयपुर, पूर्वोत्तर राजस्थान प्रदेश, श्रीमती रुक्मण लढ़ा, मुंबई प्रदेश, श्रीमती तपस्या लोकेश सोनी, अलीराजपुर,पूर्वी मध्यप्रदेश, श्रीमती डॉ. चेतना जागेटिया, भीलवाड़ा, दक्षिणी राजस्थान प्रदेश, श्रीमती पल्लवी दरक न्याती, कोटा, पूर्वी राजस्थान प्रदेश, श्रीमती प्रेमलता माहेश्वरी, लुधियाना, हरियाणा पंजाब प्रदेश, श्रीमती रेनू दमानी, मुंबई प्रदेश, श्रीमती रितु मूंदड़ा, टोंक, मध्य राजस्थान प्रदेश, श्रीमती शशि मालानी, गुमला, बिहार झारखंड प्रदेश, श्रीमती स्नेहलता मालपानी, कालीकट, तमिलनाडु केरल पांडुचेरी प्रदेश, श्रीमती विनीता धूत, गुवाहाटी,असम प्रदेश, श्रीमती कृष्णा जॉवधिया, राठ, हमीरपुर, मध्य उत्तर प्रदेश ।

राष्ट्रीय अध्यक्षा - श्रीमती मंजू बांगड़ * महामंत्राणी - श्रीमती ज्योति राठी, स. प्रदर्शक - श्रीमती मंजू मानधना * समिति प्रभारी - अनुराधा जाजू, सह प्रभारी मंडल-अर्चना लाहोटी, सरोज मालपानी, मीनू झंवर, प्रभा जाजू, सरोज गट्टानी

प्रथम

चुनाव – राष्ट्र निर्माण का पर्व या छुट्टी का दिन

घोषणा हुई चुनावों की पकड़ा चर्चाओं ने तूल,
लगे जांचने नेताओं की छोटी-छोटी हर भूल ।
दफ्तर दावत ब्याह शादी, जहां भी जाते हैं,
ज्ञानीराम ज्ञानचंदों संग राजनीतिक फरमाते हैं।
महंगाई की कहीं दुहाई, कहीं बिजली-पानी की
इनकम टैक्स और जीएसटी, कहीं बातें बेइमानी की
हुई घोषणा तारीखों की लगे देखने कैलेंडर
अनपेक्षित छुट्टी देख गया मन प्रसन्नता भर
फोन घुमाया साथियों को योजना ऐसी बनाते हैं
लाभ उठाकर छुट्टियों का कहीं घूम कर आते हैं
पैंतालीस पार पारा पहुंचा मानो लगी हुई है
करे सैर पहाड़ों की ज्ञानचंद ने दी सलाह
क्या बदलेगा चंद वोटो से क्यों व्यर्थ पसीना बहाएं
छुट्टी मिली मुश्किलों से क्यों भीड में धक्के खाएं
सरकारें तो ऐसे ही आएंगी और जाएंगी
समस्याएं हैं चुनावी मुद्दे इनको ना सुलझाएंगी
देश प्रेम का जज्बा मौसमी बुखार सा उतर गया
लोकतंत्र का पर्व एक छुट्टी बन रह गया
पांच साल में मात्र एक बार चुनाव आते हैं
हम जैसे ज्ञानचंद घर बैठे टर्राते हैं
बस एक दिन कर दे, गर देश के नाम
परिवर्तन की लहर उठेगी लोकतंत्र की बढेगी शान ।

जयश्री भंडारी, नोएडा, दिल्ली प्रदेश
9810905015

द्वितीय

घर बैठे मतदान

लोकतंत्र मैं भारत का हूँ, करता उन्हें प्रणाम ।
मन ही मन मतदान करें, जिन्हें प्रिय आराम
मतदाता जी खोए हुए, अपने ही सुख – स्वार्थ ।
छुट्टी मनाकर मतोत्सव की, करते हैं पुरुषार्थ ।
मुझसे आशा – झड़ी लगाते हैं वे कर्मठ वीर ।
एक मत से क्या होगा? बाँटे ज्ञान सुधीर ।
स्वप्न भविष्य के देख निराले, बने मुंगेरी लाल
कैसे भाग्यविधाता हैं जो, खूब बजाते गाल ।
पड़े अक्ल पर पत्थर, बाँट रहे हैं ज्ञान
अपने पैर कुल्हाड़ी मारें, ऐसे ये विद्वान ।
चुनाव के परिणाम का, नहीं करें ये ध्यान ।
अल्पमत सरकार रहें, चाहें हो प्रजातंत्र अपमान ।
चाहें रुके विकास की गाड़ी, हो कुर्सी व्यापार ।
चाहें देश विरोधी पनपें, हो भविष्य पर मार ।
टूटे रीढ़ लोकतंत्र की, इन्हें नहीं कुछ भान
ऐसे देश प्रेमियों का, मैं करता हूँ गुणगान
कर्तव्यों से कन्नी काटें, माँगे रहे अधिकार ।
घर बैठे ही सजा रहे हैं, मनचाहा दरबार ।
मन ही मन घोड़े दौड़ाते, देखें सब्ज बाग
विपक्ष की तूती बोले, लगती जी में आग ।
नहीं जानते लोकतंत्र में, मत ही है आधार ।
सोते सोते करें मान्यवर, देश का बंटाधार ।

सुनीता माहेश्वरी नाशिक, महाराष्ट्र प्रदेश
मो. 8055391450

तृतीय

घर बैठे मतदान

हे परमवीर प्रकांड क्रियाशील मतदाता, नमन,
विराट हिंद के जागृत भविष्य भाग्य विधाता, नमन,
अप्रतिम परिकल्पना के धनी बुद्धिजीवियों से रोमांचित धरा,
किया 60% मतदान अकल्पनीय स्वर्णिम इतिहास रचा,
व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी मे अग्रणी लोकतंत्र विश्वगुरु भारत,
शिक्षादायी पाठ पढाएगा, मतदान सम ना तुच्छ कार्य,
इस ज्ञानमयी स्वर्ण कलश का प्रत्येक तंदुल,
कृतज्ञ हो अपनी अहम भूमिका निभाएगा,
चहूंओर व्यापित नारी की अस्थिर अस्मिता का दिव्यफल,
विवेकशील मतदाता घर बैठे हर वृक्ष पर लगाएगा,
बेरोजगारी की लहलहाती फसलों को घर बैठे उगाएगा,
यह सुशिक्षित समाज, मतदान करने कदापि नहीं जाएगा,
शादी-ब्याह सैर-सपाटा, परम राष्ट्र हितकारी कार्य,
महत्वपूर्ण बहानों की श्रृंखला से सुमेरू यह बनाएगा,
शीर्ष चोटी को मतदान विहीन भारत से सजाएगा,
प्रेरणादायी युवा जो उपलब्ध प्रति नुक्कड पर,
देश की समस्याओं पर चर्चा करता पाया जाएगा,
चाय की चुस्कियों संग उत्कृष्ट हिंद यह बनाएगा,
शहीदों की माताएं अब आरती की थाल सजाएंगी,
असुरक्षित विजय तिलक नाममात्र के मतदाताओं को लगाएंगी,
अब तो जागो मतदाता, भारत भविष्य तुम्हें बुलाता,
जनमानस, घर बैठने से राष्ट्र नहीं चल पाता

लक्ष्मी काबरा, गाडरवारा जिला नरसिंहपुर, पूर्वी मध्य प्रदेश

मुंबई प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा साहित्य यात्रा का आयोजन

अगस्त माह में दक्षिणांचल द्वारा आयोजित कार्यक्रम साहित्य चक्र के अंतर्गत मुंबई प्रदेश से साहित्य की ग्रन्थ यात्रा विषय पर अति ज्ञान वर्धक चर्चा को ब्राड कास्ट विधा द्वारा प्रेषित किया गया, जिसमें हमारे शास्त्र और ग्रंथों की जानकारी को सरल रूप में पहुंचाने के उद्देश्य से रुक्मण जी लड्ढा एवं सुषमाजी चांडक ने सफल प्रयास किया। तृतीय लेखन प्रतयोगिता घर बैठे मतदान.. एक व्यनात्मक कविता का सफल आयोजन किया गया. प्रदेश से प्रथम तीन रचनाएँ भेजी गयीं जिनमें श्रीमती रुक्मन लड्ढा और श्रीमती रेनू दमानी की रचनाओं को सराहना मिली।

अध्यक्षा-अनिता सुशील माहेश्वरी

मंत्री-सीमा बागला

जीवन तो एक सिलसिला है

खिलना मुझे सुहाता हैं

कल फिर मैंने एक फूल से कहा
कल तुम मुरझा जाओगे:..!
फिर क्यों मुस्कुराते हो ..?
व्यर्थ में यह ताजगी ...
किस लिए लुटाते हो ..?
फूल चुप रहा...!!
इतने में एक तितली आई ..!
पल भर आनंद लिया ..!
उड गई ..!!
एक भौंरा आया..!
गान सुनाया ..!
सुगंध बटोरी..!
और आगे बढ गया ..!!
एक मधुमक्खी आई..!
पल भर भिन भिनाई ..!
पराग समेटा ..! और ...
झूमती गाती चली गई ..!!
खेलते हुए एक बालक ने ...
स्पर्श सुख लिया ..!
रूप-लावण्य निहारा..!
मुस्कुराया..! और...
खेलने लग गया..!!
तब फूल बोला:
मित्र: !
क्षण भर को ही सही:...
मेरे जीवन ने कितनों...
को सुख दिया ..!
क्या तुमने भी कभी..?
ऐसा किया ..???
कल की चिन्ता में ...
आज के आनंद में ...
विराम क्यो करूँ..?
माटी ने जो ...
रूप; रंग; रस; गंध, स्पर्श दिए ..!
उसे बदनाम क्यो करूँ..?
मैं हँसता हूँ..! क्योंकि...
हँसना मुझे आता हैं ..!
मैं खिलता हूँ..! क्योंकि ...
खिलना मुझे सुहाता है ..!
मैं मुरझा गया तो क्या ..?
कल फिर एक ...
नया फूल खिलेगा ..!
न कभी मुस्कान
रुकी हैं ..
नही सुगंध ...!!
जीवन तो एक
सिलसिला है ..!
इसी तरह चलेगा :!!
जो आपको मिला है ...
उस में खुश रहिये ..!
और प्रभु का ...
शुक्रिया कीजिए ..!
क्योंकि आप जो ...
जीवन जी रहे हैं ...
वो जीवन कई लोगों ने ...
देखा तक नहीं है..!
मुस्कुराते रहिये ..!
और सभी को ...
खुश रखिए ..!!

सबका अपना स्वार्थ

शशी डोंगरा
कटक (उड़ीसा)

तन्हा बैठा था एक दिन मैं अपने ही मकान में,
चिड़िया बना रही थी घोंसला एक रोशनदान में।
बना लिया था उसने भी अपना घर एक न्यारा,
केवल तिनके से ही जोड़ कर,ना ईंट ना गारा।
कुछ दिनों के बाद
मौसम बदला, हवा के झोंके आने लगे,
नन्हे से दो उसके बच्चे घोंसले में चहचहाने लगे।
पाल रही थी चिड़िया उनको
दाने खिला खिला कर
उड़ने की कोशिश वो करते फिर
गिरते थे लडखडा कर।
देखता था मैं हर रोज उन्हें,
जज्बात मेरे उनसे कुछ जुड़ गए,
पंख निकलने पर दोनों बच्चे,
मां को छोड़कर आसमाँ में उड़ गए।
चिड़िया से पूछा मैंने
तुम्हारे बच्चे तुम्हें अकेला क्यों छोड़ गए,
तूम तो थी मां उनकी,
फिर तुमसे ये रिश्ता क्यों तोड़ गए।
चिड़िया बोली भाई
परिन्दे और इंसान के मन में यही तो फर्क है,
इंसान की औलाद
बड़ा होते ही अपना हक जताते है,
कुछ ना मिलने पर वो मां बाप से बिल्कुल ना,
बतियाते है।
मैंने अपने बच्चों को जन्म तो दिया है
पर करता कोई मुझे याद नहीं,
क्यों रहेंगे साथ मेरे वो
मेरे पास तो कोई जायदाद नहीं।

जन्म तारीख का गड़बड़झाला

हमारा जमाना भी क्या जमाना था। बचपन में घर बाहर में ही खूब धमाचौकड़ी करते रहते, और पांच बरस के होते-होते फिर कहीं स्कूल की बात माता-पिता को याद आती थी। स्कूल भी सरकारी होते थे और बस घर में से कोई भी जाकर प्रवेश करा देता था। हमारे साथ भी यही हुआ। हमारी उम्र के सभी लोगों के साथ लगभग यही हुआ है। पिताजी ने एक भाई को कह दिया कि इसका स्कूल में नाम लिखा दो, अंगुली पकड़कर हम चल दिये स्कूल। हेडमास्टर/मास्टरनी ने कहा कि फार्म भरो। फार्म में पूछा गया कि जन्म तारीख क्या है? अब भाई को कहाँ याद जन्मतारीख क्या है? पहले की तरह हैपी बर्थडे का रिवाज तो था नहीं बस माँ ने बताया कि फला तिथि पर हुई थी। भाई को जो याद आया वह लिखा दिया गया। तारीख भी और वर्ष भी। आपके साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ होगा। हमारी पढ़ाई शुरू हो गई, एक जन्म तारीख हमारी भी लिख दी गई, कागजों पर।

लेकिन जब दसवीं कक्षा में पहुँचे तब पता लगा कि हम दसवीं की परीक्षा नहीं दे सकते क्योंकि उम्र कम है। पिताजी पढ़ाई के प्रति जागरूक थे तो आनन-फानन में नए कागजात मय जन्मपत्री बनाई गयी और अब हमारी जन्म तारीख बदल गई।

माँ कहती कि तुम्हारा जन्म नवरात्रों की दूज को हुआ है और स्कूल कहता कि 11 महीने पहले सितम्बर में हुआ है। जैसे-जैसे हम बड़े हो रहे थे, जन्मदिन मनाने की प्रथा भी बड़ी हो रही थी। हमें लगता कि हम तो माँ ने जो बताया है उसे ही जन्मदिन मानेंगे लेकिन स्कूल में जो दर्ज था लोग उसी दिन बधाई दे देते। इतना ही नहीं तिथि तो अपनी गति से आती और अंग्रेजी कलेण्डर से आगे-पीछे हो जाती, अब तिथि और तारीख में भी झगड़ा होने लगा। हमने फिर पंचांग को सहारा लिया और असली तारीख ढूंढ ही डाली। वास्तविक जन्मपत्री भी मिल गयी तो तारीख पक्की हो गई।

लेकिन कठिनाई यह है कि सरकारी कागजों में जन्म तारीख कुछ और है और हमारे मन में कुछ और सरकारी कागजों की तारीख याद रहती भी नहीं, लेकिन कभी-कभी अचानक से कोई कह देता है कि जन्मदिन की बधाई तो हम बगलें झांकने लगते हैं कि आज? आपके साथ भी होता ही होगा। कल ऐसा ही हुआ, चुनाव आयोग का बीएलओ आया, उसने कहा कि मतदाता सूची आनलाइन हो रही है तो आप बदलाव कराने हो वे करा सकती हैं, जन्म तारीख की जब बात आयी तो ध्यान आया कि यहाँ तो सरकारी ही लिखवानी है। मैंने बताया कि 14 सितम्बर तो वह युवा एकदम से बोल उठा कि अभी से जन्मदिन की बधाई दे देता हूँ। मैं चौंकी, लेकिन मुझे ध्यान आ गया और उसकी बधाई स्वीकार की।

ऐसी ही एक बार अमेरिका के इमिग्रेशन ऑफिसर के सामने हुआ। उसने आने का कारण पूछा, मैंने कहा कि बेटे से मिलने आयी हूँ। फिर वह बोला कि ओह आपका जन्मदिन सेलीब्रेट होने वाला है, मैं एक बार तो चौंकी लेकिन दूसरे क्षण ही मुझे ध्यान आ गया और उसकी हाँ में हाँ मिलाकर आ गई। यदि मुझे तारीख का पता नहीं होता तो शायद वह मुझे वापस भेज देता कि कागजों में गड़बड़ है।

लेकिन ठाट भी हैं कि मैं जब चाहे बधाई स्वीकार कर लेती हूँ, ज्यादा सोचने का नहीं। कौन से जन्मदिन पर तीर मारने हैं। ना तो हम अनोखे लाल हैं जो हमने धरती पर आकर किसी पर अहसान किया है और ना ही हमारे जाने से धरती खाली हो जाएगी, लेकिन जन्मदिन मनाते समय एहसास जन्म लेता है कि चलो एक दिन ही सही, कोई हमें विशेष होने का अवसर तो देता है। नहीं तो हमारे आने की सूचना थाली बजाकर भी नहीं दी गयी थी और ना ही किन्नर आए थे नाचने। लेकिन माँ बहुत खुश थी, पिताजी भी खुश थे। हम उन्हीं की खुशी लेकर बड़े होते रहे और अब अपने जमाने की रीत के कारण दो-तीन जन्मदिन मना लेते हैं। सोच लेते हैं कि क्या कुछ अच्छा कर पाए या यूँ ही बोझ बढ़ाते रहे। अभी बधाई मत देना, अभी जन्मदिन दूर है।

सौ. मधु बाहेती, कोटा, उपाध्यक्ष पश्चिमांचल

हर समाज के लिए
विचारणीय

बेटी हेतु संस्कारी घर तलाशें

कभी हालात यह थे कि बिना पढ़ी लिखी लड़की भी अच्छे पढ़े लिखे लड़कों की जीवन संगिनी बन जाती थी और मज़े से जिंदगी गुज़रती थी। वर्तमान में लड़कियां ज्यादा पढ रहीं हैं पर लड़कों पर घर चलाने का बोध रहते उनमें ज्यादातर काम धंधों में लग जाते हैं और लड़कियां अपने से कम पढ़े लड़कों को पसंद नहीं कर रही।

हालात बहुत खराब है लड़कियां 32-35 साल की कुंवारी बैठी है और बुढ़ापा मुंह बाए खड़ा है। पर कम्प्रोमाइज करना कोई नहीं चाहता, बहुत सारे मां-बाप को वे दुधारू गाय नज़र आती है। इस पर समाज, संस्थाएं राजनीति करने की जगह कोई ठोस समाधान निकालें तो समाज का बहुत भला होगा।

हर समाज के लिए विचारणीय

1 आज काफी लड़कियों के माँ-बाप अपनी बेटियों की शादी में बहुत विलंब कर रहे हैं, उनको अपने बराबरी के रिश्ते पसंद नहीं आते और जो बड़े घर पसंद आते हैं उनको लड़की पसंद नहीं आती,शादी की सही उम्र 20 से 25 होती है। आज माँ-बाप ने और अच्छा करते-करते उम्र 30 से 36 कर दी है,जिससे उनकी बेटियों के चेहरे की चमक भी कम होती जाती है और अधिक उम्र में शादी होने के उपरांत वो लड़का उस लड़की को वो प्यार नहीं दे पाता जिसकी हकदार वो लड़की है। किसी भी समाज में 30% डिवोर्स की वजह यही दिखाई दे रही है,आज जीने की उम्र छोटी हो चुकी है,पहले की तरह 100+ या 80+ नहीं होती। अब तो केवल 65+ तक जीने को मिल पायेगा,इसी वजह से आज लड़के उम्र से पहले ही बूढ़े नजर आते हैं,सर गंजा हो जाता है।

2 आज ज्यादातर लड़की वाले लड़के वालों को वापस हाँ/ना का जवाब नहीं दे रहे हैं, संभवत: कुछ लोग मन में आपको बुरा-भला बोलते होंगे। आप अपनी लाड़ली का घर बसाने निकले हैं, किसी का अपमान करना अच्छा नही होता। कृपया आप लड़के वालों से सम्मान जनक जरूर बात करें।

3 कुंडली मिलाकर जिन्होंने भी रिश्ते किये,आज उनके भी रिश्ते टूटे हैं, फिर आप लोग क्यों कुंडली का जिक्र करके रिश्ता ठुकरा देते हैं। इतिहास गवाह है, हमारे पूर्वजों ने शायद कभी कुंडली नहीं मिलाई और सकुशल अपनी शादी की 75 वीं सालगिरह तक मनाई आप कुंडली को माध्यम बना कर बच्चों को घर में बैठाकर रखे हैं। उम्र बढ़ती जा रही है, आता-जाता हर यार-दोस्त-रिश्तेदार सवाल कर जाता है, कब कर रहे हो शादी..? आपसे 10 वर्ष कम आयु के लोगों को 8 साल के बच्चे भी हो गए । आप 32-35 में शादी करेंगे तो आपके बच्चों की शादी के वक्त आप अपने ही बच्चों के दादा- दादी नजर आएंगे।

4 आप घर कैसा भी चयन करें। लड़की का भाग्य उसके पैदा होने से पहले ही भगवान ने लिख दिया है। भाग्य में सुख लिखे हैं तो अंधेरे घर में भी रोशनी कर देगी और दुख लिखे हैं तो पैसे वाले भी डूब जाते हैं।

5 अंतिम में बस इतना ही कहना है कि अपने बच्चों की उम्र बर्बाद ना करें, गई उम्र लौट कर नहीं आती, दूसरों को देख कर अपने लिए भी वैसा ही रिश्ता देखना मूर्खता है आप अपने बच्चों की बढ़ती उम्र के दुख को समझिए रिश्ता वो करिए, जिस में लड़के वालों में लालच ना हो। लड़का संस्कारी हो, जो आपकी बेटी को प्यार करे,उसकी इज्जत करे। उम्र

बहुत छोटी है । आप इतने जमीन–जायदाद देख कर क्या कर लेंगे ? कौन अपने साथ एक तिनका भी ले जा पाया है। बच्चों की बाकी उम्र उनके जीवन साथी के साथ जीने दीजिये। समय बहुत बलवान है। आज की लड़कियाँ पढ़ी–लिखी हैं,वो अपने परिवार के साथ कुछ अच्छा तो कर ही सकती हैं।

6 अपनी लड़कियों के लिए साधन संपन्न घर में रिश्ता तलाशने की बजाय संस्कारी घर में तलाश करें। योग्यता होगी तो साधन सम्पन्न वे खुद हो जाएंगे और सही मायने में तभी उसकी कद्र करेंगे।

7 यदि कन्या वाले मध्यमवर्गीय परिवार से हैं तो अपने बीच के परिवार से ही रिश्ता करिये, आपकी लड़की अपना भाग्य खुद सँवार लेगी, योग्यता और संस्कार के बूते।

शादी से पहले 'लड़कियों की नौकरी' भी एक सामाजिक समस्या का कारण बन रही है

(1) आत्मनिर्भर हो जाने के बाद अधिकांश पुत्रियां माता–पिता का निर्णय नहीं मानती हैं।

(2) नौकरी में लड़कियों का वेतन यदि लड़कों से अधिक होता है। पसन्द भी नहीं आते हैं एवं एक समस्या भी है।

(3) एक बार नौकरी शुरू करने पर छोड़ने के लिये तैयार नहीं होती है और विजातीय लड़कों से संपर्क होने पर उनसे ही संबंध करना स्वाभाविक है। सजातीय मिलना मुश्किल होता है, ऐसे में उम्र बढ़ती जाती है।

(4) दूसरे शहर में रहने से लड़कियां स्वच्छंद तरीके से रहना सीख लेती है। लोक लाज का भय भी नहीं रहता है। रोक–टोक भी नहीं रहती है, जिससे उचित मार्ग का निर्णय नहीं ले पाती है और गलत राह पर भी चल सकती है। अतः पाठकों को यह नहीं सोचना चाहिये कि कुछ वर्ष नौकरी करा लेंगे फिर शादी करेंगे। या फिर उसके योग्य नौकरी पेशा से ही शादी करें जो नौकरी करवाये।

(5) वर्तमान समय में तलाक के केस इसीलिये बढ़ रहे हैं, शादी के बाद भी वे परिवार में किसी की नहीं सुनती है, बस यही भाव मन में रहता है, मैं इतना पैसा कमाती हूं तो क्यों किसी की सुनूं व कोई भी परिस्थितियों से सामंजस्य करने को तैयार नहीं होती है, जिसका कारण तलाक तक पहुँच जाता है।

(6) बहुत ही विपरीत परिस्थितियों में अगर नौकरी करवानी हो तो हो सके तब तक अपने ही शहर में अपने घर में रहकर नौकरी करें तो उचित होगा। लड़कियों की शादी सही समय पर करें, ज्यादा उम्र न होने दें।

गहरे मन से विचार करें। जरूर आपको एक उम्मीद की रोशनी दिखेगी और रिश्तों की राह आसान हो जाएगी।

वास्तविक सुन्दरता

उद्यान में भ्रमण करते हुए राजा विक्रमादित्य सहसा महाकवि कालिदास की ओर आकर्षित हुए, 'आप कितने प्रतिभाशाली हैं, मेधावी हैं, पर भगवान ने आपका शरीर भी बुद्धि के अनुरूप सुन्दर क्यों नहीं बनाया?' प्रतिभाशाली कालिदास सम्राट की गर्वोक्ति समझ गये। उस समय उन्होंने खामोश रहना ही बेहतर समझा। राजमहल आकर उन्होंने कहा– 'राजन, दो पात्र मंगवा दें, एक मिट्टी का और दूसरा सोने का।'

आज्ञा का तुरन्त पालन हुआ। दोनों में जल भर दिया गया। कुछ देर बाद कवि ने विक्रमादित्य से पूछा, 'राजन किस पात्र का जल अधिक शीतल है?'

'मिट्टी के पात्र का राजा का उत्तर था। तब कालिदास ने मुस्कराते हुए कहा, जिस प्रकार शीतलता पात्र के बाहरी आधार पर निर्भर नहीं है, उसी प्रकार प्रतिभा भी शरीर की आकृति एवं रंग–रूप पर निर्भर नहीं है। विद्वता और महानता का संबंध आत्मा से है, शरीर से नहीं । राजा विक्रमादित्य का सौंदर्य अभिमान और दर्प क्षण में टूट गया और उन्होंने कहा कि, 'आप वास्तव में सुन्दर हैं, कालिदास। कुरूप तो वे हैं जो केवल आकृति के मोह में फंसे हुए हैं।'

संजीवन सिद्धा समिति

राष्ट्रीय स्तर पर मरणोपरांत नेत्रदान हेतु आह्वान

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की पांचवी कार्य समिति बैठक मंगल प्रेरणा में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मंजुजी बांगड़ द्वारा पूरे राष्ट्र में मरणोपरांत नेत्रदान करने हेतु आह्वान किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती ज्योतिजी राठी द्वारा कार्यक्रम का संचालन करते हुए नेत्रदान हेतु प्रेरित किया गया। राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रभारी चित्तौड़गढ़ से श्रीमती कुंतल तोषनीवाल ने कहा कि यदि चाहते हैं कि दुनिया से जाने के बाद भी आपकी आंखें इस खूबसूरत दुनिया को देख सके तो सभी मरणोपरांत नेत्रदान करें। जो इन आंखों से देखेगा वह हर पल आपको दुआएं देगा। नेत्रदान संबंधित भ्रांतियां को दूर करते हुए बताया कि एक स्वस्थ कॉर्निया से पांच व्यक्ति देख सकते हैं। नेत्रदान में आंख कि केवल पुतली निकाली जाती है, पूरी आंख नहीं। उससे चेहरे पर कोई विकृति नहीं होती।इसमें कोई खर्च नहीं आता। इस मुहिम के तहत देश के 27 प्रदेशों व नेपाल चैप्टर सहित सभी प्रदेश, जिलों, नगरों व गांवों में नेत्रदान की जानकारी हेतु वीडियो व नेत्रदान प्रतिबद्धता हेतु संकल्प पत्र प्रेषित किए गए हैं। सभी से फॉर्म भरवा कर उन्हें मरणोपरांत नेत्रदान करने हेतु जागरूक किया जाएगा।इसमें लिंग, जाति व उम्र का कोई बंधन नहीं है। संगठन की बैठकों, क्लबो, किटी पार्टियों या कोई भी सामाजिक कार्यक्रमों में भी नेत्रदान हेतु संकल्प पत्र भरवाए जा सकते हैं। नजदीकी आई बैंक के नंबर संयोजिकाओं व सहसंयोजकाओं द्वारा साझा किए जाएंगे। फॉर्म भरकर पुनः प्रदेश संयोजकों के पास जमा किए जाएंगे। प्रदेश द्वारा आंचलिक सह प्रभारी को रिपोर्ट भेजी जाएगी ।उत्कृष्ट कार्य करने वालों को राष्ट्र द्वारा सम्मानित भी किया जाएगा। पूर्व में भी अगर किसी ने ये फॉर्म भरे है, तो भी ये फॉर्म पुनः भरें । फॉर्म भरने के बाद अपने परिवार व आसपास के लोगो को ज़रूर अवगत कराये व उन्हें भी फॉर्म भरने हेतु

प्रेरित करें । कार्यक्रम में समिति प्रदर्शक श्रीमती मंजु हरकूट, पश्चिमांचल सह प्रभारी रीना राठी, पूर्वांचल सह प्रभारी अर्चना लापड़िया, मध्यांचल सह प्रभारी प्रतिभा नत्थानी, दक्षिणांचल सह प्रभारी डॉ. अल्पना लड्ढा व उत्तरांचल सह प्रभारी सुजाता राठी सहित अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की राष्ट्रीय कार्य समिति के लगभग 200 सदस्य मौजूद थे।

कुंतल तोषनीवाल, राष्ट्रीय प्रभारी, संजीवन सिद्धा (स्वास्थ्य समिति)

अष्ट सिद्धा : व्यक्तित्व विकास एवं नेतृत्व प्रशिक्षण समिति

''स्पंदन'' सफलतापूर्वक आयोजित

मंगल प्रेरणा के द्वितीय सत्र प्रेरक प्रबोधन के अंतर्गत ही अष्टसिद्धा समिति का कार्यक्रम शिखर की ओर, सफलता का स्पंदन आयोजित किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में लायन अविनाश शर्मा, पास्ट मल्टीपल काउंसिल चेयर पर्सन उपस्थित थे। प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित लायन अविनाश शर्मा का राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा शब्द सुमन से स्वागत करते हुए सफलता के स्पंदन की व्याख्या की गई। अष्ट सिद्धि समिति प्रभारी डॉ. प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित लायन अविनाश शर्मा का राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा शब्द सुमन से स्वागत करते हुए सफलता के स्पंदन की व्याख्या की गई अष्टसिद्धा समिति प्रभारी डॉ. नम्रता बियाणी द्वारा आपका बहुआयामी परिचय प्रस्तुत किया गया।

अविनाश शर्माजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि लीडर किसी पोस्ट से नहीं व्यक्तित्व से होता है, हम कैसे बेस्ट बने, हममें क्या है, उसे देखें और बेस्ट बनने का सोचे, अपने साथियों को बेहतर लीडर बनाएं जो हमारे ईर्ष्या रखें उसे पहले सम्मान दें, पोस्ट का आदर और व्यक्तित्व का आधार दोनों में बहुत फर्क है अतः पद की बात करने की बजाय इस संगठन की बात करें और हमेशा अपना बेस्ट दें। श्री राम, हनुमान व श्री कृष्ण के जीवन से उदाहरण देकर बहुत ही सहज व सरल शब्दों में अपने व्यक्तित्व के विकास की परिभाषा की जिसने उपस्थित बहनों द्वारा बहुत सराहा गया।

डॉ. नम्रता बियाणी, समिति प्रभारी, अष्टसिद्धा समिति

युगल सिद्धा गठबंधन समिति

400 प्रत्याशियों ने नि:शुल्क परिचय सम्मेलन का लाभ लिया

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की युगल सिद्धा गठबंधन समिति द्वारा 3, 4 अगस्त 2024 को नि:शुल्क ऑनलाइन परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्षा मंजु जी बांगड के द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलन कर महामंत्राणी ज्योति जी राठी द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। स्वागत गान राष्ट्रीय समिति प्रभारी शर्मिला राठी व शाब्दिक स्वागत समिति प्रदर्शक श्रीमति अनिता जी जावंधिया द्वारा किया गया।

19 प्रदेशों की समिति संयोजिकाओं, आंचलिक सह प्रभारी व राष्ट्रीय प्रभारी की मेहनत से शादी के लायक 170 प्रत्याशियों के परिचय वीडियो चले। दो दिनों में करीब 400 अभिभावक और प्रत्याशियों ने इस नि:शुल्क परिचय सम्मेलन का लाभ लिया। जिन जिन प्रदेशों से प्रत्याशियों के वीडियो आए, उनकी लिस्ट अधिकतम से न्यूनतम के क्रम में निकाली गई है। परिचय सम्मेलन में आए अभिभावकों ने भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए बहनों को लिखित में अपने विचार भेजे।

प्रत्याशियों को जो जो बायोडाटा पसन्द आये, वे बहनों के माध्यम से ऐप से मैचिंग ले रहे है और कई संबंधों की बात चल रही है। परिचय सम्मेलन की सफलता का श्रेय

समिती की कर्मठ बहनों को जाता है।

उत्तरांचल सह प्रभारी करुणा अटल ने कोलाज बनाने का काम किया, दक्षिणांचल सह प्रभारी श्रीमति सरिता तापड़िया ने कार्ड बनाने का काम किया, पश्चिमांचल सह प्रभारी श्रीमति मधु मोदानी ने संचालन किया, मध्यांचल सह प्रभारी श्रीमति शांता मंत्री ने आभार दिया व पूर्वांचल सह प्रभारी श्रीमति वर्षा मूंधड़ा ने सभी पूर्व अध्यक्षों को निमंत्रण देने का काम किया।

हमारी पूर्व अध्यक्षों श्रीमती गीता जी मूंधड़ा, श्रीमती विमला जी साबू, श्रीमती शोभा जी सादानी, श्रीमती सुशीला जी काबरा व श्रीमती कल्पना जी गगड़ानी, श्रीमती रत्नी मां काबरा और श्रीमती ममता जी मोदानी ने परिचय सम्मेलन में आए प्रत्याशियों के लिए शादी में काम आने वाले बहुत अच्छे अच्छे सन्देश के साथ वीडियो बनाकर भेजे जिसकी सभी ने बहुत सराहना करी।

युगल सिद्धा राष्ट्रीय प्रभारी–शर्मिला राठी, दिल्ली

रघुकुल रित सिद्धा समिति

दक्षिणांचल द्वारा ''आपकी संपत्ति आपका अधिकार'' कार्यक्रम संपन्न

अखिल भारत वर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन अंतर्गत रघुकुल रित सिद्धा समिति द्वारादक्षिणांचल में आयोजित ''आपकी संपत्ति आपका अधिकार'' कार्यक्रम जुम पर 20 नवंबर 3:30 बजे से 5:30 बजे तक सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। मुंबई प्रदेश द्वारा प्रस्तुत महेश वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कार्यक्रम का सुंदर संचालन कर्नाटक गोवा प्रदेश सचिव सुनीताजी लाहोटी ने किया।

वसीयत कब व कैसे बनायें

पांच प्रदेश की संयोजिका द्वारा सुंदर स्वागत गीत के साथ फूल बिखेर कर तिलक लगाकर राखी बांधकर हार पहना कर चुनरी उड़ाते हुए बहुत सुंदर प्रस्तुति दी गई। उज्वलाजी कासट ने गीत प्रस्तुत किया है। कमला तोषनीवाल ने सम्माननीय सभी अतिथियों का एवं सभागार में उपस्थित सभी सखियों का हर्षित हृदय से स्वागत किया। रेणुजी सारडा दक्षिणांचल संयुक्त मंत्राणी ओर अनसुया मालु दक्षिणांचल उपाध्यक्ष ने शुभकामना संदेश देते हुए पधारे सभी का शाब्दिक स्वागत किया। विशेष अतिथि अर्चनाजी काबरा का परिचय अध्यक्ष ममताजी दमाणी ने दिया। अर्चनाजी काबरा राष्ट्रीय प्रभारी ने अपने आशीर्वचन में शुभकामना के साथ दक्षिणांचल रघुकुल रीति सिद्धा के नई सोच और कार्यक्रमों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। प्रमुख अतिथि शिखाभदादा का परिचय तेलंगाना आंध्र की अध्यक्ष रजनी राठी ने दिया। शिखा भदादा राष्ट्रीय प्रदर्शक ने अपने साक्षीजी का परिचय करवाया और आपकी वजह से यह कार्यक्रम सफल हुआ आपके मार्गदर्शन से सब में एक नई ऊर्जा भर दिया। मुख्य वक्ता साक्षीजी का परिचय महाराष्ट्र प्रदेश की अध्यक्ष सुनिताजी पलोड ने दिया। साक्षीजी का वक्तव्य सभी के लिए बहु उपयोगी था विल बनाना कितना आसान है इसकी हम सबको पहली बार जानकारी मिली इसको कैसे रजिस्टर करें किसके नाम करें कब करें यह सब बातें बहुत ही क्लियर तरीके से उन्होंने हमें समझाई बहुउपयोगी इस कार्यक्रम में साक्षी जी ने अपने विचार और अनुभवों से उदाहरण देते हुए हम सबकी समझ को और गहरा कर दिया और सबके मन को जीत लिया। सपना लाहोटी, प्रीती भुतडा ने आधुनिक तकनीकी संचार से वीडियो झूम को संबोधित किया और सफलता प्राप्त की।

धन्यवाद ज्ञापन दक्षिणांचल सह प्रभारी कमला तोषनीवाल ने किया, जिसमें उन्होंने साक्षी जी के वक्तव्य की तारीफ करते हुए उनका धन्यवाद किया एवं पधारे हुये सभी अतिथि और जिन बहनों ने सहयोग दिया एवं सभागार में उपस्थित सभी का दिल से धन्यवाद किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम को विराम दिया।।

उपाध्यक्ष–अनसुया मालु * संयुक्त मंत्राणी–रेणु सारडा

महाभारत का नव सार सूत्र सबके जीवन में उपयोगी सिद्ध होगा...

रीति,नीति,विद्या,विनय, ये द्वार सुमति के चार

1) संतानों की गलत माँग और हठ पर समय रहते अंकुश नहीं लगाया, तो अंत में आप असहाय हो जायेंगे । – **कौरव**

2) आप भले ही कितने बलवान हो, लेकिन अधर्म के साथ हो, तो आपकी विद्या, अस्त्र, शस्त्र, शक्ति और वरदान, सब निष्फल हो जायेगा। **–कर्ण**

3) संतानों को इतना महत्वाकांक्षी मत बना दो, कि विद्या का दुरुपयोग कर स्वयंनाश कर, सर्वनाश को आमंत्रित करे। **–अश्वत्थामा**

4) कभी किसी को ऐसा वचन मत दो कि आपको, अधर्मियों के आगे समर्पण करना पड़े। **–भीष्म पितामह**

5) संपत्ति, शक्ति व सत्ता का दुरुपयोग और दुराचारियों का साथ, अंत में स्वयंनाश का दर्शन कराता है।

–दुर्योधन

6) अंध व्यक्ति – अर्थात मुद्रा,मदिरा,अज्ञान,मोह और काम (मृदुला) अंध व्यक्ति के हाथ में सत्ता भी, विनाश की ओर ले जाती है। **–धृतराष्ट्र**

7) व्यक्ति के पास विद्या विवेक से बँधी हो, तो विजय अवश्य मिलती है। **–अर्जुन**

8) हर कार्य में छल, कपट व प्रपंच रच कर, आप हमेशा सफल नहीं हो सकते। **–शकुनि**

9) यदि आप नीति, धर्म व कर्म का सफलता पूर्वक पालन करेंगे, तो विश्व की कोई भी शक्ति आपको पराजित नहीं कर सकती। **–युधिष्ठिर**

रीति,नीति,विद्या,विनय, ये द्वार सुमति के चार,

इनको पाता है वही, जिसका हृदय उदार,

यदि इन 09 सूत्रों से सबक ले पाना सम्भव नहीं होता है, तो महाभारत संभव हो जाता है। महाभारत कहता है। धर्म और सदाचार: यह महाकाव्य व्यक्ति के कर्तव्य (धर्म) को बनाए रखने और धार्मिकता के मार्ग पर चलने के महत्व पर जोर देता है। यह पात्रों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक दुविधाओं का पता लगाता है और धर्म का पालन करने या उससे विचलित होने के परिणामों को दर्शाता है।

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करहि सो तस फल चाखा।।

सकल पदारथ हैं जग मांही। कर्महीन नर पावत नाहीं।

भावार्थ–तुलसीदास जी कहते हैं कि यह विश्व, यह जगत कर्म प्रधान है। जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। मनुष्य का जीवन उसके कर्मों से ही निर्धारित होता है। यूँ तो इस जगत ने अनेकों पदार्थ हैं और इस संसार में किसी पदार्थ की कोई कमी नही है, कर्महीन मनुष्य के लिए कुछ भी उपलब्ध नही है। इस संसार में कुछ भी पाने के लिए पहले उद्यम रूपी कर्म करना पड़ेगा तभी कुछ प्राप्त हो सकता है।

उत्तरांचल

पूर्वी उत्तर प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

स्वर्ण जयंती महोत्सव ''काशवी'' भव्यतापूर्ण सम्पन्न

पूर्वी उत्तरप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन
पंचम कार्यसमिति एवं तृतीय कार्यकारिणी बैठक ''काशवी'' का था आगाज।
माहेश्वरी भवन में उपस्थित, सभी को मिल गई जैसे एक नई परवाज।।
आगाज से अंजाम तक सब कुछ था लुभावन।
यादगार बन गया हर पल, कुछ यूं पकड़ा खुशियों ने दामन।।
दिल जीत लिया,आपकी उपस्थिति ने।
बिना बरसे भी बरस गया, स्नेह का सावन।।
उत्तरांचल के सभी पदाधिकारियों का आशीर्वाद मिला।
किस-किस का धन्यवाद करूं, सभी से इतना स्नेह मिला।
राष्ट्रीय अध्यक्षा, मंजू जी बांगड़ का प्रेरणात्मक उद्बोधन।
सिखा गया हमें, नीतिपूर्ण प्रबंधन
संगठन के महत्व को बतलाता,ज्ञानवर्धक व्याख्यान।।
प्रभावपूर्ण वाणी और ओजस्वी शैली जिसने खींचा सबका ध्यान
किरण जी की सरल वाणी, शोभा जी का अर्थपूर्ण संबोधन।।
मंजूजी मानधना की साहित्य पर चर्चा
मंजू जी हरकूट द्वारा स्वर्ण जयंती पर भावपूर्ण वाचन ।
करतल ध्वनि से प्रांगण गूंज उठा,आप सभी को शत-शत नमन।
अनुपम स्वागत गीत, कीर्ति मूंदड़ा ने गाया।
श्रेया,स्नेहा और हर्षिता ने महेश वंदना से सब का मन हर्षाया।।
काशी की विशेषताओं को झलक के माध्यम से दिखलाया।
बनारसी खाने का जायका,पान व बनारसी साड़ियों का जलवा दर्शाया।।
संगठन में ही शक्ति है ,काशी वासियों ने नाटक के माध्यम से दर्शाया।
सद्भावना, सकारात्मकता, रचनात्मकता, परंपरा का परिचय करवाया।।
सोशल मीडिया और किशोरों पर इसका प्रभाव, वाद विवाद के माध्यम से करवाया।
इसके फायदे और नुकसान के बारे में भी विस्तार से बतलाया।।
काशवी नाम को सार्थक कर गया,
मिर्जापुर के नारी सशक्तिकरण नृत्य ने सबका दिल जीत लिया।।
भावना की नपी-तुली एवं सधी हुई वाणी ने,
पूरे कार्यक्रम को गतिमान कर दिया।।
तुलसी विवाह कार्ड की सुंदर मनमोहक कृतियां।
एक से बढ़कर एक थी सारी, मुश्किल था निर्णय करना।
सभी समितियां ने किया अलग, अनूठा काम।
अपने-अपने स्तर पर सबका बढ़ा दिया है ज्ञान।।
वाराणसी के महिला संगठन ने अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मनाया
अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन में यह पहला स्वर्ण जयंती

वर्ष मनाया गया।
राष्ट्रीय अध्यक्ष मंजू जी बांगड़ ने बाबा काशी विश्वनाथ का दर्शन व रुद्राभिषेक करवाकर स्वर्ण जयंती प्रोग्राम की शुभ शुरुआत की।
शहनाई वादन से किया सभी अतिथियों का स्वागत।
चटपटी चाट के साथ शुरू किया शाम का अद्भूत कार्यक्रम ।
सभी सदस्याओं को दी सुप्रेम भेंट।
50 वर्षों का वाराणसी का सफर, गौरवशाली इतिहास।
मनाया सुवर्णाशी (स्वर्ण जयंती उत्सव), जागा हर दिल में विश्वास।
भूतपूर्व अध्यक्ष, मंत्रियों को स्मृति चिन्ह भेंट देकर सम्मानित किया गया।
सुनहरी यादों का संकलन,स्वर्ण मंजूषा पुस्तक का विमोचन भी किया गया।
सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से दिखाएं नारी जीवन के विभिन्न रस।
प्रत्येक जीवन में नारी की महत्वता, नारी से ही है जीवन में नवरस
संगठन के ये पचास साल, एक प्रेरणा की ज्योति,
नारी शक्ति का गीत, है अटूट ये मोती
बधाई है हम सभी को, इस स्वर्णिम अवसर पर,
सतत संघर्ष और प्रेम को, शत-शत नमन कर।
आगे भी बढ़ते रहें, ये प्रार्थना है हमारी,
संगठन का हर कदम, हो गाथा शुभकारी।
हमें राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती मंजू जी बांगड़ का सानिध्य मिला
अभीभूत हुए उपस्थित सभी, आशीर्वचनों से मन खिला
शोभाजी,किरणजी,मंजू जी मानधना,मंजू की हरकूट का हृदय से आभार।
जिनके स्नेहिल साथ ने कर दी आशीवादों की बौछार।
खुशी हर चेहरे पर दिख रही थी प्रत्यक्ष।
जब समागार में सभी बहने ,आयी एक दूसरे के समक्ष।।
यूं ही चढ़ता रहे प्रदेश नितें नए सोपान।
बढ़ता रहे सदा प्रदेश का सम्मान।।

पूर्वी उत्तरप्रदेश द्वारा निर्गुण, निराकार भजन संध्या

पितृ पक्ष के पावन अवसर पर प्रदेश के सदस्य, जूम बैठक में उन महान आत्माओं का स्मरण करने के लिए एकत्रित हुए , जिन्होंने अपने संघर्ष, परिश्रम और तपस्या से न केवल हमारे परिवार की नींव रखी, बल्कि हमारे जीवन को दिशा दी। उनके द्वारा स्थापित आदर्श और सिद्धांत हमारे लिए जीवन पथ पर चलने के लिए प्रकाशस्तंभ की तरह हैं। चाहे वह संस्कार हों, संस्कृति हो, या परिवार के प्रति उनकी निष्ठा, उनकी विरासत हमें हमेशा प्रेरणा देते है। उनका अमूल्य योगदान हमारे जीवन में सदैव जीवंत रहेगा। भजन कीर्तन द्वारा उनको श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर सभी ने अपने पितरों के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की। उनका स्नेह, आशीर्वाद और मार्गदर्शन सदैव हमारे साथ रहे, यही प्रार्थना की।

वाराणसी माहेश्वरी महिला संगठन ने पूरे किए स्वर्णिम पाँच दशकों की अप्रतिम यात्रा-
स्वर्ण महोत्सव का बिगुल बजाकर मंगल गान है गाया।
आनन्द उत्सव की स्वर्णिम बेला में चहुं और आनन्द छाया ।
50 वर्षों के अथक प्रयास और परिश्रम से शुभ बेला है आई ।
इस उत्सव की देते है सबको मंगल बधाई ।।
नई ऊंचाइयों तक संगठन ने यश की पताका फहराई ।
तब जाकर महिला संगठन ने स्वर्णिम आभा चमकाई।।
स्वर्णिम आभा से दमक उठा महिला संगठन का यह वर्ष।
मेहनत, लगन, शुभ संकल्पों से करना है संगठन का जतन।।
स्वर्णिम वर्ष में आपसी एकता का हम करते ऐलान हैं ...
सभी को करना है इस सफरनामा का सम्मान है ...

अध्यक्ष-भारती करवा * सचिव-पुष्पा धूत वाराणसी

धर्म और संस्कृति के बीच का रिश्ता जटिल है। भारत में ज़्यादातर लोग किसी न किसी धर्म का पालन करते हैं, लेकिन भारतीय संस्कृति धर्मनिरपेक्ष भी है।

मध्य उत्तर प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

दिव्यांग बच्चों को स्मार्ट टीवी, दरी, सहयोग राशि भेंट

प्रदेश कार्यसमिति एवं कार्यकारिणी बैठक पार्थवी में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मंजुजी बांगड़ ने उद्बोधन में कहा त्रैमासिक रिपोर्ट को इतना अच्छा होना यह दर्शाता है कि प्रदेश द्वारा उत्साहित हो कार्य को अंजाम देना। महासभा द्वारा लिए तीसरे बच्चे पर निर्णय, आदित्य बिरला ट्रस्ट, जाजू ट्रस्ट, नागपुर बैठक की विस्तृत जानकारी दी। प्रदेश द्वारा सक्षम, प्रोजेक्ट के अंतर्गत प्रशिक्षण के बाद कपड़ों से दरी ,बैग बनवा Exhibitions द्वारा आर्थिक सहयोग किया। राष्ट्र द्वारा आयोजित 'घर बैठे मतदान' व्यंगात्मक कविता को प्रदेश की श्रीमती कृष्णा जावंदिया को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना। प्रभारी श्रीमती करुणा अटल के अथक प्रयास से तीन संबंध हुए। एक रक्तदान शिविर का आयोजन। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मंजूजी बांगड़ के सानिध्य में Bhawana Society for Disabled Cerebral palsy Week पर दिव्यांग बच्चों को स्मार्ट टीवी, दरी, 18700 राशि से सहयोग, छोटे बच्चों को स्टेशनरी खाद्य सामग्री वितरण लगभग राशि 20000 रु.,

श्राद्ध पक्ष में 100 संतो को फल मिठाई वस्त्र चावल नमकीन दक्षिणा, कपड़े, 14000 राशि से सहयोग। मंगल प्रबोधन में प्रदेश को त्रैमासिक रिपोर्ट में कोहिनूर केटेगरी से नवाजा गया। इंदिराएकादशी वामनद्वादशी पर लड्डू गोपाल जी का वामनअवतार की झांकी, विश्वकर्मा पूजा अनंतचतुर्दशी, बुढ़वामंगल धूमधाम से मनाया। प्रदेश के जिलों में नवरात्रि पर कलश स्थापना, शरद पूर्णिमा चंद्रमा की शीतलता में खीर भोग, करवा चौथ पर प्रदेश द्वारा आयोजित 16 श्रृंगार कर अपने साजन के लिए कोई मनपसंद गाने पर नृत्य प्रतियोगिता में चयनित को पुरस्कृत। त्यौहार से हमारी संस्कृति में जुड़ाव बना रहे इसके लिए संयुक्त परिवार ने एकल परिवार की बहनों के साथ करवाचौथ मनाया। होईअष्टमी पर पुत्रों की लंबी उम्र की कामना, धनतेरस रूप चौदस दिवाली पर गणेश लक्ष्मी पूजन कर पटाखों के शोर के साथ उत्साह से दिवाली मनाई। गोवर्धन पूजा, भाई दूज, यम द्वितीया स्नान, छठ पूजा तुलसी विवाह (देव दीवाली) सभी त्योहार बहनों ने आस्था के साथ मनाया।

अध्यक्ष–सीमा झंवर * सचिव–नीलम मंत्री

सनातन धर्म के मंगल प्रतीक चिन्ह एवं पूजनीय तत्व

ॐ, तिलक, त्रिशूल, स्वस्तिक, दीपक, शंख, श्री, कमल

भारतीय संस्कृति सनातन है, अनादि है। हमारी संस्कृति में चार युग की कल्पना की गई-सृष्टि के प्रारंभ में सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और अब कलियुग है। सतयुग में वैदिक काल तक हमारे यहां निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना थी। तप, बल ही मुख्य था। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि अपने तप के बल से ही महर्षि-योगर्षि, राजर्षि आदि नामों से जाने जाते थे। कालान्तर में विश्वामित्र की अठारहवीं पीढ़ी से महर्षि विश्वामित्र ने सृष्टिकर्ता की विभिन्न शक्तियों के दिव्य प्रतीक आकृतियों का प्रचलन प्रारंभ किया जो कालान्तर में लोकप्रिय होता गया। देवताओं के गुण विशेषण दर्शाते हुए आकर्षक दिव्यतायुक्त चित्रों का चित्रण, उनके आयुधों का चित्रण अर्थपूर्ण ढंग से चित्रित किया गया, जो आज भी मानव को शुभ संदेश देते हुए, कल्याणकारी भावनाओं की समृद्धि करते हुए परिलक्षित हो रहे हैं। वैसे तो हमारे यहाँ अनेक शुभ चिन्ह हैं, जो अपने आकार प्रकार के अनुरूप शक्ति के प्रतीक हैं, उन्हीं मंगल चिन्हों के प्रतीकों का संक्षिप्त में वर्णन निम्नानुसार है :

ॐ – भारतीय संस्कृति में 'ओम' शब्द अत्यधिक महत्वपूर्ण है, इसका एक नाम प्रणव भी है, इसे शब्द ब्रह्म अथवा प्रणव ब्रह्म भी कहा गया है, सभी ग्रंथों में ओम की उपासना श्रेष्ठ बताई है। ओम अनादि है, अनन्त है, शब्दातीत है, अर्थातीत है। वास्तव में समाधि अवस्था में ॐ ध्वनि से साक्षात्कार होता है। इसलिये थोड़े बहुत उच्चारण भेद के साथ ॐ विश्व की सभी आध्यात्मिक संस्कृतियों में पाया जाता है। योग में भी ॐ का मंत्रोच्चार करने से फेफड़ों को फायदा होता है।

तिलक – वैज्ञानिक दृष्टि से भी तिलक का बहुत महत्व है। रोली और चन्दन की प्रकृति ठंडी होती है, जिससे तिलक मस्तिष्क को ठंडक प्रदान करता है। तिलक तीसरी आंख का प्रतिनिधि है, इसका रहस्य है ज्ञान-चक्षु जो हमारे मस्तिष्क में बीचोंबीच स्थित है। यह हमारे आज्ञा चक्र को जाग्रत करता है, जिससे एकाग्रता व आत्मविश्वास को बढ़ाता है। यदि हम दोनों आँखों को बंद कर लें, तो तिलक अप्रत्यक्ष रूप में हमारी तीसरी आँख याने ज्ञान चक्षु जागती रहती है और ध्यान या यौगिक अवस्था में अपना कार्य करती रहती है। याने स्मरण शक्ति एवं पूर्वकालिक जीवन की स्मृति कराती है। भगवान शिव त्रिनेत्रधारी हैं, जिसकी ज्वाला प्रकट होने पर शत्रुओं व दुष्टों का संहार करती है। यह हमारी स्मरण शक्ति, विद्वता, अपूर्व ज्ञान व विद्या का भंडार है। तः हम ललाट पर तिलक लगाकर ज्ञानचक्षु को पूजित करते हैं, जो हमारे जीवन को विजय उत्सव में परिणत करता है।

त्रिशूल – त्रिशुल त्रिगुणात्मक शक्ति के स्वामी शिव का आयुध है, जो रक्षा एवं प्रहार का प्रतीक है। वैसे अन्य कई देवी व देवताओं के पास भी त्रिशूल रहता है। त्रिशूल के तीन फलक-दैहिक, दैविक एवं भौतिक तीनों तापों के प्रतीक हैं। त्रिशूल सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण का प्रतीक माना जाता है। जो मानव को आसक्ति, अज्ञान एवं अहं का कारण बनाता है, परंतु समाधिकाल में मेघों, बादल से एवं बिजली गिरने से साधक की रक्षा करता है।

स्वास्तिक – स्वास्तिक भारतीय संस्कृति का एक अद्वितीय प्रतीक है। किसी भी मंगल कार्य के प्रारंभ में एक मंत्र बोला जाता है, जिसे स्वस्ति वाचन कहा जाता है, जिसमें सबके कल्याण की कामना की जाती है। जब भी कोई मंगल कार्य हो चित्रानुसार स्वस्तिक बनाया जाता है, जिसका सब गुजाओं का विशेष महत्व है, जो चित्र में दर्शाया है। स्वास्तिक शब्द

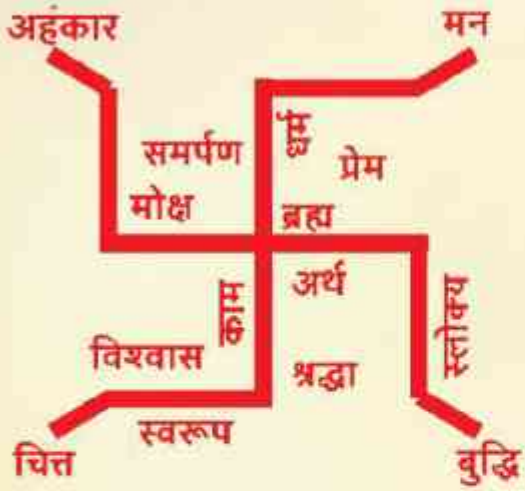

सु+अस् धातु से बना है सु अर्थात् अच्छा, अस् याने अस्तित्व अर्थात् अच्छा अस्तित्व। इसकी चारों भुजायें चार पुरुषार्थ की प्रतीक हैं, चारो दिशाओं से शुभ भाव हमारे अंदर आयें। संक्षेप में स्वास्तिक कल्याण का काव्य सभी दिशाओं का सौरभ, मानवीय पुरुषार्थ का प्रेरक बल, सर्जनहार की सहायता का सूचक और देश तथा काल का सुभग सम्मिलन है।

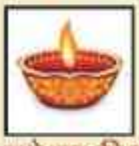

दीपक – दीपक ऐसी ज्योति है, जो अंधकार को मिटाती है और हर ज्योति का उद्गम सूर्य है, अतः जहां भी अग्नि होगी, चाहे यज्ञ की हो या दीपक की वह ऊपर ही उठेगी, अतः सदैव ऊपर उठने की प्रेरणा देता है, अर्थात् आत्मा भी परमात्मा से मिलने को ऊपर उठे। दीपक अन्धकार रूपी अज्ञान को हटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाता है तथा स्वयं को जलाकर अपनी अंतिम सांस तक दुनिया को उजाला बांटता है। इन्हीं परोपकारी गुणों से पूजनीय है। दीपक के जलाने से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है, मन में शांति मिलती है।

शंख – शंख की ध्वनि से स्नायु तंत्र संतुलित होते हैं। वैज्ञानिक भी कहते हैं ब्रेन में जो न्यूरोन्स होते हैं, उन्हें यह ध्वनि संतुलित करती है। शंख की ध्वनि से वातावरण के सूक्ष्म कीटाणु भी मर जाते हैं। वातावरण भी सुद्ध होता है इसीलिये मंदिरों में व घरों में प्रातः एवं सायं आरती के समय शंख की ध्वनि की जाती है। शंख का जल (रात्रि में शंख में 12 तुलसी दल व जल डालकर श्वेत वस्त्र से ढंककर रख दें व सुबह पियें इस जल के पीने से स्वर शक्ति बढ़ती है एवं टीबी की बीमारी दूर होती है। बुद्धि तीव्र होती है। पूजन में शंख को पंचतत्व में आकाश तत्व का प्रतीक मान कर पूजा की जाती है। मान्यता है कि जहां शंख रहता है वहाँ भगवान विष्णु लक्ष्मी सहित विराजमान रहते हैं। जिससे हमारे अमंगल दूर से ही भाग जाते हैं। शंख शब्द में श–मंगल, शुभ व कल्याण तथा ख आकाश का प्रतीक है।

कलश – कलश में संपूर्ण सृष्टि समाहित है। कलश के मुख में विष्णुजी, कंठ में शंकरजी, मूलभाग में ब्रह्माजी, मध्य उदर में मातृका सभी देवियां का वास है। कुक्षी में सातों सागर वास करते हैं तथा सातों द्वीपों की भूमि की मिट्टी रज इसमें है। चारों वेद एवं चारों देवियां गायत्री, सावित्री, शांति, पुष्टि भी इसमें विराजमान रहती हैं। कलश अर्थात् जल से परिपूर्ण पात्र हमें प्रेरणा देता है हम भी अपने हृदय को प्रेम से भरकर रखें एवं जिस तरह जल सबकी प्यास बुझाता है, वैसे ही हम भी सबका सहयोग करें एवं अपने स्वभाव को भी जल की तरह तरल व सरल बनाये।

कमल – कमल सुंदरता का प्रतीक है एवं इसके दर्शन मात्र से हृदय कमल खिल जाते हैं। मां लक्ष्मी को कमल बहुत पसंद है।

अतः सदैव इस पर विराजमान भी रहती हैं एवं दोनों हाथ में धारण भी करती हैं। क्योंकि कमल में संग्रह प्रवृत्ति नहीं है, वह निस्पृह जल में पैदा होता है, परंतु जल को स्पर्श नहीं करता है। सबको संदेश देता है लक्ष्मीवान बनो पर लक्ष्मी के मद में मत डूबो, लक्ष्मी को भोगो नहीं, बल्कि माता की तरह सम्मान देकर विवेक से यथोचित उपयोग करोगे तो सदैव प्रसन्न रहेगी। कमल कीचड़ में खिलता है, संदेश देता है, हृदय कमल को विकारों से मुक्त रखो। योग्यता हासिल करने के लिये धन, वैभव जरूरी नहीं है, परोपकार करके जीवन को सार्थक बनाओ, उन्हें प्रभु स्वीकारते हैं।

श्री – वैदिक सनातन संस्कृति में 'श्री' को शुभ कल्याणकारी और मंगल सूचक माना गया है। श्री लक्ष्मी का प्रतीक है, श्री शक्ति के बिना भगवान भी अधूरे हैं। भगवान विष्णु के सभी स्वरूप नामों के आगे श्री लगाया जाता है जैसे–श्रीहरि, श्री गोविंद, श्री गोपाल, श्रीकृष्ण, श्रीराम, श्री विष्णु आदि श्री सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। इसीलिये हम जिनके लिये शुभ व कल्याणकारी भाव रखते हैं, उनके नाम के आगे श्री, श्रीयुत, श्रीमान एवं महिलाओं के लिये श्रीमती लगाते हैं। किसी बी कार्य के मंगल वाचन का प्रारंभ 'श्री' शब्द से किया जाता है। वही खातों में भी 'श्री' शब्द अंकित किया जाता है। श्री शब्द मंगलकारी है।

श्रीफल (नारियल) नारियल चारित्र्य पूजा की प्रेरणा देता है। बाह्य सौंदर्य के अभाव से लज्जित न होकर उसके अपना आंतरिक सौंदर्य इतना कुसुम सा कोमल और मधुर कर लिया कि वह सर्वप्रिय शीतल प्रदाता होकर श्रीफल नाम से विभूषित हो गया। नारियल को पत्थर पर पटककर कष्ट देने पर भी वह हमें मधुर स्वाद एवं शीतल जल का प्रसाद देता है अर्थात् दूसरों के लिये सदैव मधुर बने रहो।

घंटी – घंटी बजाने से मन में एकाग्रता आती है, उसकी ध्वनि से मन–मस्तिष्क में चल रही अन्य बातों को भूल जाते हैं। मन ईश्वर में एकाग्र होता है।

कलावा/मोली – इसको बाँधने से हमारा रक्त संचार संतुलित रहता है, मन में निर्भयता लाता है एवं सुरक्षा कवच का कार्य करता है, इसे रक्षा–सूत्र भी कहते हैं।

तुलसी व पीपल – तुलसी के पौधे में रोज जल चढ़ाने से सकारात्मक ऊर्जा आती है एवं स्वास्थ्य लाभ भी होता है। भगवान् को भोग लगाने पर जब तक तुलसी दल न डालें वे ग्रहण नहीं करते हैं। ऐसा शास्त्रों में लिखा गया है। हम भी यदि रोज तुलसी के 5 से 10 पत्ते खायें तो स्वस्थ रहेंगे। तुलसी में 800 बीमारियों को दूर करने की शक्ति है।

पीपल को जल चढ़ाना भी धार्मिक मान्यता है, परंतु पीपल का वृक्ष 24 घंटे ऑक्सीजन देता है, उससे हमें जीवन मिलता है। अतः उसका संरक्षण अवश्य करें। वट वृक्ष, आंवला, नीम, बेल सभी का संरक्षण करें, इसीलिये पूजा की जाती है।

सूर्य – अखण्ड ऊर्जा का स्तोत्र, प्रकाश का प्रदाता और संसार में जितने भी जीव मात्र हैं, सबका रक्षक सूर्य है। वह हमारा मित्र है। सूर्य को जल चढ़ाने से नेत्र दृष्टि में वृद्धि होती है। गायत्री मंत्र द्वारा हम कामना करते हैं कि सूर्य की शक्ति हमारी बुद्धि को शुभ कार्य में प्रेरित करे। सूर्य जीवन रक्षक ही नहीं समस्त भूत प्राणियों एवं चराचर जगत का रक्षक है।

यज्ञ – यज्ञ के माध्यम से हम अग्नि देवता की आराधना करते हैं। यज्ञ का स्वरूप छोटे से होम से लेकर बड़े से बड़े अश्वमेघ वाजसनेयी व राजसूय यज्ञ तक विस्तृत है, जिनसे साम्राज्य विस्तार में सहयोग मिलता है।

हमसे जाने–अनजाने जीव हिंसा होती है, उसके प्रायश्चित के लिये आहूति, पितृ यज्ञ (श्राद्ध) देवयज्ञ, वैश्वदेव (अग्नि भोग) एवं गौ ग्रास अवश्य निकालना चाहिये।

(16) गौ माता – हमारी संस्कृति गौ को माँ का स्थान देती है। हमारी कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों को गो कहा जाता है। पृथ्वी अन्याय व अत्याचार से त्रस्त होकर प्रभु के पास अपना भार हरण करने की प्रार्थना लेकर गौ के रूप में ही जाती है। भगवान श्रीकृष्ण भी गौ को बहुत महत्व देते थे। सारे उपनिषदों की तुलना गायों से की है। गाय के पंचगव्य स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है।

इस प्रकार हमारी सनातन संस्कृति में समस्त मंगल चिन्हों, प्राकृतिक पंच तत्वों, वृक्षों, प्राणियों सभी का महत्व वैज्ञानिक तथ्यों के साथ बताया है, ये सब हमारे जीवन के रक्षक हैं, सहायक हैं, प्राण वायु है, अतः सदैव श्रेष्ठ एवं पूजनीय है।

(संकलन : श्रीमती सुशीला काबरा)

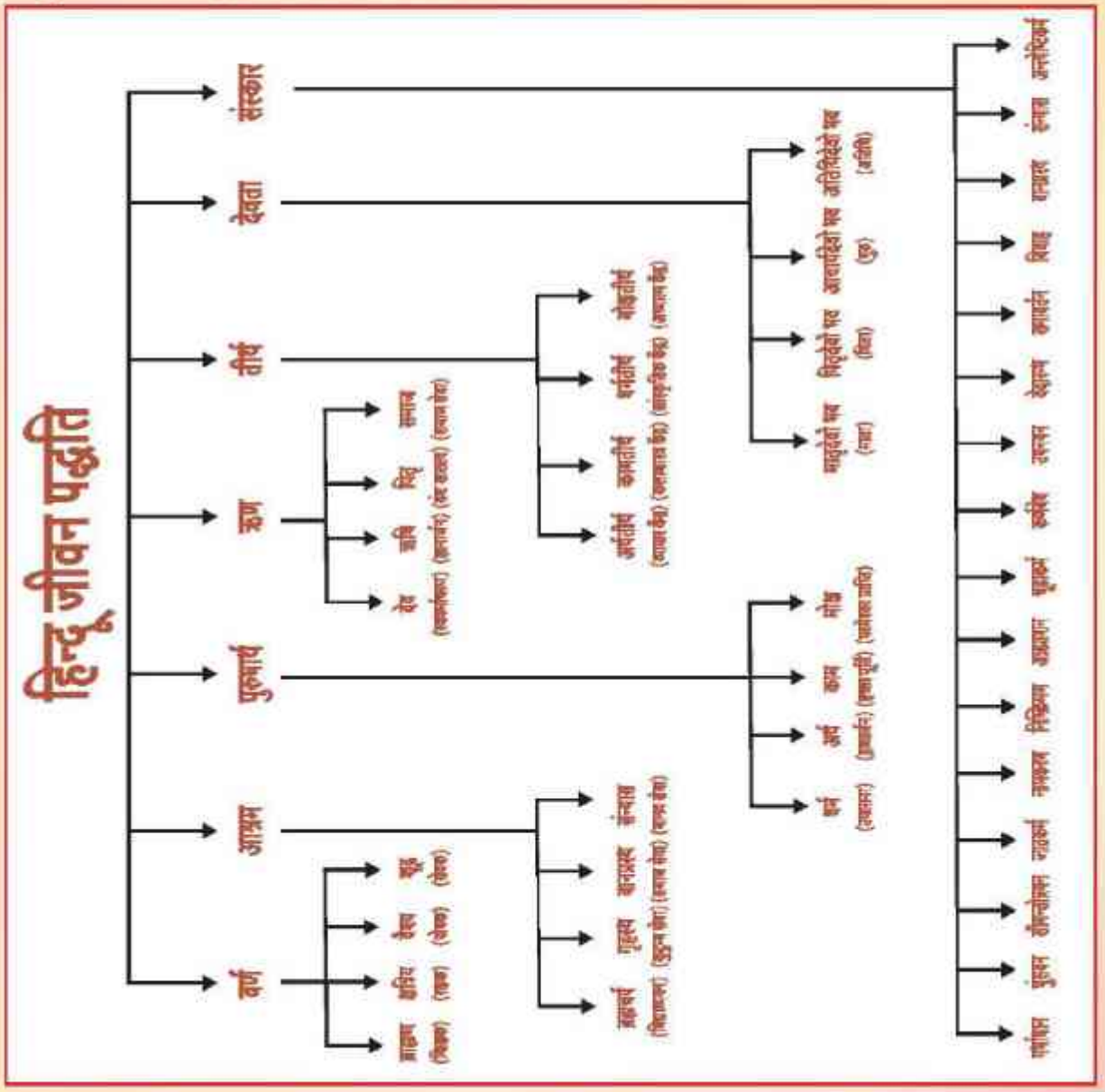

सनातन साहित्य

विश्व की साहित्यिक धरोहर में प्राचीनतम है, सनातन साहित्य। भारत की पावन माटी से उपजे इस साहित्य ने सनातन धर्म की नींव डाली, उसके आध्यात्मिक सिद्धांतों को प्रतिपादित किया, और भारतीय जनजीवन को जीने की कला सिखाई। सनातन धर्म विश्व के अन्य धर्मों की तुलना में अपनी एक अलग, अद्वितीय पहचान रखता है क्योंकि ये कोई धर्म या मज़हब नहीं, अपितु एक सम्पूर्ण जीवन शैली है,जो नित्य,अविरल विकसित होती रही, समयानुसार रूपांतरित होती रही, तथा सामाजिक बदलावों के अनुकूल बदलती रही। इसी सनातन जीवन शैली का जीवंत दस्तावेज़ है सनातन साहित्य। विश्व के अन्य मज़हब यथा यहूदी, ईसाई या इस्लाम आदि, अद्वैतवाद पर आधारित होने के कारण, एक ही धर्मग्रंथ को मान्यता देते हैं; यथा, ईसाई धर्म में बाइबल, इस्लाम में कुरान, अथवा यहूदी धर्म में तोराह। जबकि सनातन धर्म के क्रमिक विकास के चलते, इसका साहित्य भी समकालीन परिवेश, व बहुमुखी समाजिक, राजनैतिक, धार्मिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए लिखा गया। वस्तुतः सनातन साहित्य एक ही ग्रंथ नहीं अपितु विविध ग्रंथों के रचनात्मक समावेश से सिंचित, दार्शनिक, आध्यात्मिक,और समाजिक नियमों का सम्मिश्रित स्वरूप है। सनातन साहित्य की इस यशस्वी परम्परा की कुछ सुविख्यात रचनाएं इस प्रकार हैं: सनातन साहित्य को दो महत्वपूर्ण भागों में बांटा गया है: श्रुति व स्मृति। विश्व के अनेक प्रख्यात विद्वानों यथा मैक्समूलर, जकोबी, बाल गंगाधर तिलक आदि ने शोध द्वारा ये प्रमाणित किया कि भारतीय धर्म ग्रंथ, विशेषतः वेद, ईसा पूर्व 1000 से 3000 हजार वर्ष पूर्व रचे गए थे। प्रश्न ये उठता है कि इतने पुराने ग्रंथ इतनी सदियों तक कैसे जीवित रहे, सुरक्षित रहे? यद्यपि उस समय ताड़पत्र, भोजपत्र, शिलालेख आदि लिखने के संसाधन मौजूद थे, तथापि इतने विस्तृत साहित्य को इन में से किसी पर भी पूरी तरह उकेरना असंभव था। वस्तुतः इन रचनाओं को संरक्षित रखा गया गुरू द्वारा शिष्य को ये ज्ञान सुनाकर। ये वही परम्परा है जिसे हम गुरू शिष्य परम्परा के नाम से जानते हैं। इसी श्रवण परम्परा के कारण वेद आदि ज्ञान परम्पराओं को श्रुति कहा गया। श्रुति द्वारा प्राप्त उस ज्ञान को शिष्य याद रखते थे और इसे आगे अपने शिष्यों को सुनाते थे। याद रखे गए इस ज्ञान का नाम हुआ स्मृति। श्रुति के अंतर्गत आते है समस्त वेद। स्मृति के अंतर्गत है इतिहास, वेद व्याख्याएं, पुराण, महाकाव्य रामायण व महाभारत।

वेद: सनातन के मूलाधार माने गए चार ग्रंथ ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद, अपौरुषेय कहे गए है, अर्थात इनकी रचना किसी पुरुष (मानव) द्वारा हो हो नहीं सकती थी। अपौरुषेयं वाक्यं वेदः। ऐसा कोई ज्ञान नहीं जो वेदों में नहीं। ईश्वर–मनुष्य, इतिहास– समाज, भूगोल– खगोल, रसायन– औषधि, कला– संगीत, गणित –विज्ञान, यानि जीवन के हर पहलू से संबंधित ज्ञान वेदों में निहित है। जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इंडिया में वेदों के बारे में कहा है कि ' 'वेद की ऋचाएं आर्यों की जीवन और प्रकृति के प्रति गहन जिज्ञासा का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।' ऋग्वेद में देवताओं की स्तुतियां हैं, यजुर्वेद में यज्ञ प्रक्रिया के मंत्र हैं, सामवेद संगीत प्रधान है और अथर्ववेद में चिकित्सा, भूगोल खगोल, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान आदि के ज्ञान का बाहुल्य है। उपनिषद: वैसे तो उपनिषदों की कुल संख्या 108 से 200 तक बताई गई है, किन्तु वैदिक दर्शन के लिए 10 उपनिषदों को प्रमुख माना गया है। इन 10 ग्रंथों को वेदों का सार माना जाता है, क्योंकि इनमें वेदों के जटिल अवधारणाओं को सरलता से समझाने का प्रयास है। वेदांत : वेद उपनिषद के सम्पूर्ण ज्ञान का संकलन

हैं वेदांत। ये वेदों के उत्कृष्टता के शिखर की रचनाएं हैं, जिनका मूल उपनिषद माने जाते है। पुराण: पुराण का शाब्दिक अर्थ है 'प्राचीन आख्यान '। इनमें देवी देवताओं, ऋषि मुनियों, राजाओ आदि के विस्तृत वृत्तांत हैं। पुराणों की रचना वैदिक काल के बहुत बाद में हुई। इनकी कुल संख्या 18 है।

गीता: यद्यपि गीता प्राचीन महाकाव्य महाभारत का अंश है, किन्तु यह वेदोपरांत साहित्य की सबसे श्रेष्ठ रचना मानी जाती है। महाभारत के युद्ध में, श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए हुए कर्मोपदेश को ही हम गीता कहते है। ये कृति हर युग में मनुष्य को कर्म की श्रेष्ठता का, व निस्पृह रहने का का संदेश देती है। गीता आज भी उतनी ही उपयुक्त है जितनी हजारों वर्ष पहले थी। यदि वेद सनातन धर्म की ज्ञान पिपासा का उत्कर्ष हैं तो श्रीमद्भगवद्गीता सनातन धर्म के आध्यात्मिक सिद्धांतों का चरमोत्कर्ष मानी जा सकती है।

उपर्युक्त रचनाओं के अलावा, एतिहासिक साहित्य की श्रेणी में आते है महाकाव्य रामायण व महाभारत, जिन्होंने भारत के लोकमानस पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। विशेषतः, 16वी शताब्दी में महाकवि तुलसीदास कृत रामचरितमानस, जिसे उन्होंने महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण से रूपांतरित किया, भारतीय जनमानस के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनी। उपरोक्त साहित्य के अलावा, ब्राह्मण व आरण्यक भी हमारे पौराणिक ग्रंथ माने जाते हैं। सनातन साहित्य परम्परा उस विशाल वट वृक्ष की भांति है जिसकी छांव में समस्त भारतवासी जीवन यापन की शैली सीखते है, आध्यात्म व दर्शन का ज्ञान पाते ही और इसी कारण सम्पूर्ण विश्व में अपनी अनूठी पहचान बनाते है। ये ग्रंथ भारतीय साहित्यिक अस्मिता के वाहक हैं, तथा भारतीय संस्कृति की उत्कृष्टता का जीवंत प्रमाण व प्रतीक हैं।

डॉ उर्वशी साबू, दिल्ली
सह प्रभारी उत्तरांचल,अष्टसिद्धा

मंत्र, तंत्र और सनातन धर्म

सनातन धर्म का तात्पर्य है वह धर्म, जो शाश्वत और शाश्वत मूल्यों एवं सिद्धांतों को धारण करता है। यह न केवल एक धार्मिक प्रणाली है, बल्कि यह एक जीवन प्रणाली भी है, जो रीति, परंपराओं, और मूल्य आधारित जीवन को सिखाती है। सनातन धर्म जिसे हिन्दू धर्म भी कहा जा सकता है व्यक्ति को अपनी आंतरिक शक्ति और ज्ञान के प्रति जागरूक करता है, तथा उसे अपने और दूसरों के प्रति जिम्मेदार बनाता है धर्म पालन में विभिन्न तत्वों का प्रयोग किया जाता है जिनमे मंत्र और तंत्र अपना विशेष स्थान रखते हैं।

मंत्र सिर्फ एक सरल शब्द या वाक्य नहीं हैं, बल्कि वे गूढ़ और शक्तिशाली ध्वनियाँ हैं जो हमारी सोच, भावनाओं और आत्मा के उच्चतम स्तरों तक पहुंचने में सहायता करती हैं। मंत्रों का उपयोग विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा–पाठ, और ध्यान में किया जाता है, और इनका स्थान हिंदू धर्म में एक विशेष महत्त्व रखता है। मंत्र संस्कृत भाषा से निकले हैं, जिसका अर्थ है 'मन की सुरक्षा' या 'सोचने की प्रक्रिया' । ये ध्वनियाँ या वाक्य ब्रह्मांड की ऊर्जा के साथ जुड़ने का एक साधन हैं। यजुर्वेद, सामवेद, ऋग्वेद, और अथर्ववेद में मंत्रों का विस्तृत विवरण मिलता है। इन मंत्रों का उच्चारण करने से व्यक्ति की मानसिक स्थिति में सुधार होता है और वह सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव करता है। मंत्रों का महत्व सिर्फ धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है । वे हमारे जीवन में मानसिक शांति, आत्मविश्वास, और एकाग्रता लाने में भी सहायक होते हैं। जब हम किसी मंत्र का जाप करते हैं, तो हमारे दिमाग में ध्यान केंद्रित होता है, जिससे मानसिक तनाव और चिंता कम होती है। मंत्र जाप के माध्यम से, हम अपने अंदर की शक्तियों को जागृत करते हैं और अपने लक्ष्य

की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं।

प्राचीन युग में, ऋषि-मुनियों ने मंत्रों के माध्यम से ब्रह्मांड की गूढ़ शक्तियों की पहचान की। उन्होंने देखा कि जब सही ध्वनि और ऊर्जा का संयोजन किया जाता है, तो यह अद्भुत परिणाम उत्पन्न कर सकता है। इसलिए, मंत्रों का उच्चारण निश्चित स्वर में और सही तरीके से करना आवश्यक होता है। मंत्रों का एक खास ढंग से उच्चारण करने से उनकी ऊर्जा अधिकतम होती है, और यह मान्यता है कि मंत्रों का सही उच्चारण नकारात्मक शक्तियों को दूर करने और व्यक्ति की आत्मा को शुद्ध करने में सक्षम है। मंत्रों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि ये व्यक्ति को ध्यान की गहराई में ले जाने में सहायता करते हैं। जब हम नियमित रूप से मंत्रों का जाप करते हैं, तो यह न सिर्फ हमारे मन को एकाग्र करता है, बल्कि यह हमारी अंतः चेतना को भी जागरूक करता है। इससे हम अपने भीतर की आवाज़ को सुनने में सक्षम होते और आत्मज्ञान की ओर कदम बढ़ाते हैं।

सनातन धर्म में मंत्रों के विभिन्न प्रकार हैं: साधारण मंत्र, बीज मंत्र, गुप्त मंत्र, और शांति मंत्र। बीज मंत्र वे होते हैं जो ऊर्जा को संकुचित करते हैं। जैसे एक प्रमुख बीज मंत्र है, जो सृष्टि के मूल तत्व का प्रतीक है। बीज मंत्रों का उच्चारण किसी विशेष उद्देश्य के साथ किया जाता है, जैसे किसी शक्ति को जगाना या शांति प्राप्त करना। वहीं, साधारण मंत्रों का प्रयोग साधारण पूजा-पाठ में किया जाता है। शांति मंत्र विशेष रूप से मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए उपयोग होते हैं, जैसे शांतिः शांतिः शांतिः। मंत्रों का सामूहिक जाप भी उच्च मानसिक ऊर्जा उत्पन्न करता है। जब कई लोग एक साथ एक मंत्र का जाप करते हैं, तो वह ऊर्जा प्रभावित होती है और उसके सकारात्मक प्रभाव बढ़ जाते हैं। सामूहिक जाप के दौरान, मन और आत्मा के बीच की दूरी कम होती है, जिससे सामूहिक समर्पण और एकता का अनुभव होता है। यह धार्मिक अनुष्ठानों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो जन समुदाय में समरसता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।

मंत्रों का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वे हमारे जीवन में नकारात्मकता को दूर करने में मदद करते हैं। जब हम नकारात्मक परिस्थितियों या मानसिक दबाव का सामना करते हैं, तो मंत्र का जाप करके हम अपनी ऊर्जा को पुनर्स्थापित कर सकते हैं। मंत्रों के माध्यम से हम सकारात्मकता का संचार कर सकते हैं, जो जीवन में शुभ अवसरों और नई दिशाओं को खोलता है। विशेष रूप से ध्यान करने वाले व्यक्ति के लिए मंत्र का जाप महत्वपूर्ण है। ध्यान के दौरान, मंत्र का उच्चारण करने से एकाग्रता में वृद्धि होती है और मन को स्थिरता मिलती है। यह उच्च ऊर्जा स्तर पर पहुँचने में मदद करता है, जिससे ध्यान का अनुभव और भी गहरा और अर्थपूर्ण हो जाता है।

आईये अब बात करते हैं सनातन धर्म के एक और बहुत रोचक तत्त्व की, जिसे तंत्र कहा जाता है। आमतौर पर तंत्र विद्या से लोगों को तांत्रिक, अघोरी, काला जादू, वशीकरण जैसे रहस्यमयी विषयों का बोध होता है लेकिन तंत्र इनसे कहीं परे है। सनातन धर्म में तंत्र का महत्व एक विस्तृत और गहरा विषय है, जो न केवल धार्मिक प्रथाओं, बल्कि आध्यात्मिकता, ऊर्जा, और जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी समाहित करता है। तंत्र संस्कृत शब्द तन्त्र से निकला है, जिसका अर्थ है विधि या प्रणाली। यह समग्रता, ऊर्जा और अदृश्य शक्तियों को जागरूक करने की एक प्रक्रिया है। तंत्र का उपयोग विशेष रूप से ध्यान, साधना, और ऊर्जा के

काम में किया जाता है, और यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा साधक उच्चतर मानसिक और आध्यात्मिक अवस्थाओं का अनुभव कर सकता है।

तंत्र की जड़ें वेदों और उपनिषदों में पाई जाती हैं। इसे अक्सर रहस्यमय और गूढ़ प्रथा के रूप में समझा जा सकता है। तंत्र में मंत्र, यंत्र, और मुद्रा का उपयोग करते हुए ध्यान की गहराइयों में प्रवेश किया है। इसके माध्यम से साधक अपने भीतर की ऊर्जा को जागरूक कर सकता है और मानसिक शांति प्राप्त कर सकता है। लेकिन यह अपनी विशेषताओं के साथ दूसरों से अलग देखा जाता है, जिसे केवल कुछ विशेष लोगों के लिए ही तंत्र का अभ्यास साधना के माध्यम से किया जाता है, जिसमें विशेष ध्यान, मंत्र जाप और यन्त्रों का उपयोग होता है। मंत्र तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो विशेष ध्वनियाँ और स्वर होते हैं, जिनका उच्चारण ऊर्जा को उत्पन्न करने में सहायता करता है । यन्त्र खास प्रकार के पवित्र चित्र होते हैं, जो अदृश्य शक्तियों को आमंत्रित और सक्रिय करने का कार्य करते हैं । मुद्रा, जो अपने हाथों और शरीर के विशेष अंगों को जोड़ने की विधि है, भी तंत्र का एक अभिन्न हिस्सा है। यह ऊर्जा के प्रवाह को संतुलित करता है और जगाता है। हिंदू धर्म में, तंत्र को देवी-देवताओं की उपासना के लिए भी उपयोग किया जाता है। यह माना जाता है कि तंत्र साधना से देवी-देवताओं की कृपा प्राप्त की जा सकती है, जिससे साधक को जीवन में सफलता और समृद्धि मिलती है। तंत्र के माध्यम से साधक अपनी इच्छाओं को पूरा करने, अवरोधों को दूर करने, और अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारने के लिए प्रयास कर सकता है। इसके माध्यम से, साधक आत्म साक्षात्कार की ओर बढ़ता है और ब्रह्मांड की अनंत शक्ति के साथ जुड़ता है।

तंत्र की प्रथा के अंतर्गत शुद्धता का पालन महत्वपूर्ण है। साधक को मानसिक, शारीरिक, और आध्यात्मिक स्तर पर शुद्धता बनाए रखनी आवश्यक होती है। यही कारण है कि तंत्र साधना में उपवास, आसन, ध्यान, और मंत्र जाप को महत्वपूर्ण माना जाता है। चूंकि तंत्र ऊर्जा के साथ खेलता है, साधक को अपने विचारों और भावनाओं पर नियंत्रण रखना आवश्यक है, ताकि वह सकारात्मकता को आकर्षित करे ।

इसके अलावा, तंत्र का उपयोग चिकित्सा के क्षेत्र में भी किया जाता है। ऊर्जा के संतुलन और सही प्रवाह को बनाए रखने के लिए तंत्र चिकित्सा एक माध्यम है। इससे शारीरिक और मानसिक रोगों को दूर करने में सहायता मिलती है। तंत्र चिकित्सा में, शारीरिक अंगों को सक्रिय करने, ऊर्जा चक्रों को संतुलित करने, और मन को शांति देने के तरीकों का प्रयोग किया जाता है। यह न केवल साधक के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में मदद करता है, बल्कि उसे अधिक जागरूक और संतुलित भी बनाता है। हालांकि, तंत्र की प्रथा को लेकर कई भ्रांतियाँ भी हैं। इस प्रथा को अक्सर गलत समझा जाता है और इसे केवल तंत्र-मंत्र या काला जादू से जोड़ा जाता है। वास्तव में, तंत्र का उद्देश्य अच्छे और सकारात्मक परिणाम प्राप्त करना है। यह आध्यात्मिक विकास का एक मार्ग है, जो व्यक्ति को अपने अंदर की शक्तियों का अनुभव करने के लिए प्रेरित करता है। यह साधक को आत्मा की गहराई में जाने, अपने भीतर की शांति और संतुलन स्थापित करने में मदद करता है।

तंत्र का महत्व केवल साधक के व्यक्तिगत विकास तक ही सीमित नहीं है । इसका व्यापक प्रभाव समाज और समुदाय पर भी पड़ता है। जब एक व्यक्ति तंत्र साधना के माध्यम से अपने भीतर की शक्ति को जागरूक करता है, तो वह न केवल स्वयं को, बल्कि अपने आस-पास के लोगों को भी प्रभावित करता है। सकारात्मक ऊर्जा का संचार पूरे समुदाय में होता है, जिससे सामूहिक भलाई और शांति की स्थापना होती है।

यूं तो मंत्र और तंत्र की प्रथा में गहराई है, फिर भी यह अन्वेषण और अध्ययन का एक अंतहीन विषय है।

डॉ अनुराधा जाजू
प्रभारी-ज्ञान सिद्धा समिति

मूर्ति पूजा का आरंभ और इसकी आवश्यकता

मूर्ति पूजा की शुरुआत का सटीक समय निर्धारित करना कठिन है क्योंकि ये एक धीमी क्रमबद्ध प्रक्रिया है, जो रातोंरात नहीं बल्कि विभिन्न कालखण्डों में विकसित हुई है।

1. अवैदिक कालीन मानव आकाश, समुद्र, पहाड़, बादल, अग्नि आदि प्राकृतिक शक्तियों से परिचित था, उसे पता था, ये मानव शक्ति से अधिक शक्तिशाली है, तो वो इनकी प्रार्थना करता था।

2. पूर्व वैदिक काल (1500 ईसवी पूर्व से पहले) समय के बदलाव से मानव को एहसास हुआ कि इन प्राकृतिक शक्तियों को कोई अदृश्य शक्ति, जो निर्विकार –सर्वशक्तिमान है, संचालित करती है, तो उसे ब्रह्म नाम से अलंकृत किया।

3.वैदिक काल (1500–500 ई.पू) वेदों में ना तो मूर्ति का, ना ही मंदिरों का कोई साक्ष्य मिलता है। यज्ञ–हवनों के माध्यम से जल (वरुण), हवा (वायू देव) बारिश (इंद्र) के अधिपतियों की उपासना होने लगी।

4.उत्तर वैदिक/ महाजनपद काल (500–200 ई पू) गुप्त काल भारतीय कला संस्कृति का स्वर्ण युग माना गया । धार्मिक विचारधाराओं में परिवर्तन आया, जैन एवं बौद्ध धर्म का अभ्युदय हुआ। तीर्थंकरों और बुद्ध की प्रतिमाओं–स्तूपों का निर्माण होने लगा, साथ ही हिंदू धर्म में भी विष्णु (राम कृष्ण) शिव, शक्ति (देवी) की मूर्तियों की पूजा प्रचलित हुई।

सिंधुघाटी सभ्यता (3300–1300 ई पू) के उत्खननों में मूर्तियाँ अवश्य मिली पर उनका धार्मिक उद्देश्य स्पष्ट नहीं। हालांकि त्रेतायुग में श्री राम द्वारा शिवलिंग की पूजा, सीताजी द्वारा विवाह पूर्व गौरी पूजन, अहिरावण द्वारा, पाताल में शक्ति मूर्ति की पूजा से हम अभिज्ञ है। द्वापर में, ब्रज में इंद्र की पूजा–छप्पन भोग, रुखमणि–सुभद्रा का मंदिरों से अपहरण, सर्व विदित है।

विभिन्न भक्ति धारा के सापेक्ष में मूर्ति पूजा का प्रचलन

पूर्व मध्यकालीन भारत 10 वी शताब्दी के अंत में तुर्की और 15 वी शताब्दी में मुग़लों के आक्रमण और धर्म परिवर्तन के रवैये ने दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन का वृक्षारोपण किया, जिसका बीज बोया आलवारो और नयनारो ने, जिसको पल्लवित किया शंकराचार्य, रामानुजाचार्य , वल्लभाचार्य जैसे विचारकों ने। मध्यकाल आते आते ये भक्ति आंदोलन, दो विचार धाराओं में बंट गया– निर्गुण और सगुण। हिंदू धर्म ज्ञान–कर्म–भक्ति की त्रिवेणी में बहने लगा, आचार्य राम चद्र शुक्ल के अनुसार ज्ञान इसकी आँखे है तो कर्म इसके हाथ पैर, तो भक्ति इसका हृदय, जिसके बिना धर्म निष्प्राण है। आइए भक्ति द्वारा धर्म को संजीवन प्रदान करे और इस भक्ति को मूर्त रूप देने के लिए मूर्ति पूजा के महत्व को समझे–

हिंदू धर्म,one solution fits for all के सिद्धांत पर कार्य नहीं करता। बल्कि व्यक्ति को अपने प्रकृति के अनुसार ईश्वर गढ़ने की छूट है, यही तो हिंदू धर्म की सुंदरता है, कि जीवन को उत्सव स्वरूप माना है और मूर्ति पूजा इस आनंद में एक और कोण जोड़ देती है इससे कल्पनाओं को आध्यात्म का स्वरूप मिल जाता है।

1. ध्यान साधना– मूर्ति पूजा द्वैतवाद के सिद्धांत पर आधारित है, पहले ऋषि मुनि एकांत में समाधिस्थ हो कर ध्यान करते थे, पर अब दिनचर्या में बदलाव है, साकार आकृति सामने हो तो भावनाओं की डोर बंधती है। यहाँ क से कबूतर में, कबूतर जानना उद्देश्य नहीं है, उद्देश्य है क अर्थात ईश्वर को जानना।

2. सांस्कृतिक–कलात्मक विकास– भारतीय

शिल्प- स्थापत्य कला के विकास में,मंदिरों- मूर्तियों का योगदान विश्व विख्यात है, कोणार्क- मोधरा सूर्य मंदिर, रामेश्वरम का गलियारा, बाहुबली मूर्ति इसका ज्वलंत उदाहरण है।

3. धार्मिक एवं सामाजिक एकता–मंदिर विभिन्न वर्गों के लिए सामाजिक - सांस्कृतिक एकता का केंद्र होता है।

4. मानसिक एवं बौद्धिक विकास–मनुष्य स्वभाव हमेशा से सौन्दर्य के प्रति आकर्षित होता है, जब ईश्वर की प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठा होती है, तो भावनाएं उसको जीवंत रूप देती है, उनके द्वारा धारित वस्त्र-आभूषण-श्रृंगार ,नयनों को तृप्ति, हृदय की आनद और मस्तिष्क को शांति देते है। कोई भी व्यक्ति, विशेष कर बड़ी उम्र वाले व्यक्तियों को एकाकीपन को दूर भगाने के लिए ठाकुर जी की सेवा ,अति प्रिय लगती है,वो उस मूर्ति स्वरूप में माँ, पिता, स्वामी,सखा, प्रियतम की छवि की कल्पना करने लगता है, उसे नहलाने, सजाने, भोग लगाने, शयन करने में जो आनद आता है उसकी अभिव्यक्ति शब्दों में संभव नहीं। उसके साथ बात करना, हंसना, रूठना- मनाना , अपने आप में एक सहज थेरेपी है।

5. सगुण-निर्गुण का विवाद हमेशा से तर्क का विषय रहा है। सूरदास जी ने इसे गूँगे का मीठा फल कहा है, जिसे वह खा तो सकता है पर बयान नहीं कर सकता। तो कबीर ने इसे कंकड़ पाथर से तुलना की है जिससे बेहतर तो पेट भरने वाली आटा चक्की है। पर ध्यान देने योग्य ये बात है कि ईश्वर कोई वैज्ञानिक अवधारणा नहीं बल्कि एक आस्था है, तो इसकी उपासना पद्धति क्या हो? ये तर्क का नहीं भावना का विषय है। आप इसे सर्व व्यापी बना कर फैलने दे या मूर्त रूप देकर आँखो के माध्यम से हृदयंगम करे, ये आपके स्वभाव- सोच पर निर्भर है। तर्क जाल से निकले, एक रास्ता पकड़े- आपके समानांतर मार्ग में दूसरे लोग भी उसी लक्ष्य की ओर बढ़ रहे है। कर्म नेक हुए तो मंजिल भी एक होगी, लक्ष्य होगा सच्चिदानंद से सानिध्य।

सौ. राजश्री मोहता, दिल्ली

त्रिदिवसीय कार्यक्रम ''क्षितिजा 2025'' 10/11/12 जनवरी

क्षितिजा 2025 10/11/12 जनवरी के त्रिदिवसीय कार्यक्रम की आंशिक रूपरेखा

दिनांक 10/1/2025 – 10:00 बजे मंच पूजन व प्रादेशिक औद्योगिक मेला उद्यम वाटिका का उद्घाटन
11:00 बजे से राष्ट्रीय कार्य समिति व कार्यकारीणी बैठक प्रारंभ
दोपहर 2:00 बजे भोजन अवकाश * शाम 4:00 से 6:00 उद्घाटन समारोह
शाम 7:00 से 8:00 आयोजक संस्था द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम पवनबसंती मैं हूं स्वयंसिद्धा का कर्टन रेजर
दिनांक 11/1/2025 सुबह 7:00 से 8:00 बजे तक योग व विविध मनोरंजक गेम्स
ठीक 10:00 बजे डॉ बी. के. सुनीता दीदी अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता ब्रह्मा कुमारीज द्वारा प्रेरक वक्तव्य
11 से 12:00 बजे तक राष्ट्रीय महिला सेवा ट्रस्ट की बैठक
12 से 2:00 तक आंचलिक कार्यक्रम त्योहारा रो रंग मीठी मारवाड़ी संग
4 से 5:00 बजे तक प्रदेश अध्यक्ष व मंत्री की प्रादेशिक रिपोर्टिंग
बहु प्रतीक्षित कार्यक्रम हां मैं हूं स्वयं सिद्धा
9:00 बजे रात्रि भोजन उसके बाद प्रादेशिक पदाधिकारी के साथ राष्ट्रीय पदाधिकारीयो की बैठक
दिनांक 12/1/2025 सुबह-सुबह होगी रिसॉर्ट की सैर
9:30 से 10:30 तक पुनः प्रदेश अध्यक्ष व मंत्री द्वारा प्रादेशिक रिपोर्ट
10:30 से 12:30 तक कार्यक्रम विविधा दर्पण
12:30 से 1:30 तक कार्यकर्ता सम्मान व समापन समारोह !

पश्चिमी उत्तर प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

शकुंतलाधाम के गुरुकुल में सहयोग एवं हमारी संस्कृति हमारे संस्कार पर आधारित नाटिका का मंचन

प्रादेशिक कार्यकारी बैठक मंथन का सफल आयोजन। जूम पर आयोजित महिषासुर मर्दिनी स्तोत्र कार्यशाला में 130 बहनों ने सामूहिक रूप से जाप किया। तीसरा बच्चा पैदा होने पर प्रदेश द्वारा दंपति को सम्मानित किया गया।

घर बैठे मतदान प्रतियोगिता में 16 संगठनों से प्रविष्टि प्राप्त। शिक्षक दिवस पर शिक्षिका बहनों को सम्मानित किया गया। बरसात के मौसम में कैसे पेड़ों का रखरखाव व सब्जी के छिलकों से कैसे खाद बनानी है, ऑनलाइन कार्यशाला आयोजित कराई गई जिसमें 17 जिलों की सहभागिता रही।

150 बहनों की उपस्थिति लिए 6 नवंबर 2024 दिन बुधवार को तृतीय प्रादेशिक कार्यकारिणी बैठक मंथन का आयोजन शुक्रताल तीर्थ स्थित शिव धाम में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती मंजू जी हरकुट उत्तरांचल संयुक्त मंत्री रही। गणेश वंदना, महेश वंदना, स्वागत नृत्य ने सब का मन मोह लिया। बैठक का मुख्य आकर्षण ''मन की बात'' समस्या है तो समाधान भी है रहा विचारों का मंथन कर मंचासीन पैनल द्वारा 40 समस्याओं का समाधान निकाला गया। कुछ संगठनों द्वारा संगठन हित में उत्तम सुझाव भी प्रेषित किए गए।

शुक्रताल धाम के गुरुकुल के 40 छात्रों को लोई प्रदान कर भोजन व्यवस्था दी गई । गुरुकुल के आचार्य जी को कपड़े एवं नगद धनराशि प्रदान की। हमारी संस्कृति हमारे संस्कार पर आधारित नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के विचारों की मतभेद पर छोटी सी नाटिका का मंचन किया गया। रोचक गेम कराए गए।

चतुर्थ राष्ट्रीय कार्य समिति बैठक मंगल प्रबोधन में कार्यरत पूरी टीम को साड़ी प्रदान कर सम्मानित किया गया। सभी प्रतियोगिताओं के सर्टिफिकेट प्रदान किए गए प्रेरणा गीत एवं आभार के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

17 संगठन द्वारा गोपाष्टमी पर गौशाला में दान,आंवला नवमी पर पूजा पाठ एवं देव दिवाली पर दीप दान किया गया। आगरा एवं डिबाई द्वारा जरूरतमंद कन्याओं के विवाह में कपड़े,ज्वेलरी, बर्तन फर्नीचर विद्युतउपकरण व अन्य जरूरत के समान भेंट किए गए। बरेली संगठन द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित कर 101 यूनिट रक्तदान का पुण्य कमाया।

प्र.अध्यक्ष-मोनिका माहेश्वरी * प्र.सचिव-मनीषा राठी

दिल्ली प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

कृष्णाश्रय तथा बहनों व बच्चों द्वारा राम लीला की अति सुन्दर प्रस्तुति

शारदीय नवरात्रा पर प्रदेश के सभी क्षेत्रों में माता के नव रूपों की मनमोहक झांकी, भव्य डांडिया उत्सव, सामूहिक सुंदरकांड पाठ तथा भंडारा प्रसाद वितरण कार्यक्रम आयोजित। कार्तिक महीने में हरिद्वार गंगा स्नान, दीपदान, अन्नकूट प्रसाद, तुलसी विवाह, बीमार गायों के इलाज़ का सेवा कार्य तथा 4 ग़रीब कन्या की शादी के

सावन में महादेव आए, भादों में श्री गणेश,
अश्विन में आई मां, हरने कष्ट और कलेश।
कार्तिक मास में रही पर्वों की बहार,
शारदीय नवरात्रा,दशहरा, शरद पूर्णिमा, करवा चौथ,
धन तेरस, दीवाली मिलन, गोपाष्टमी सहित
हिल-मिल मनाएं हमने सारे त्यौहार।

सेवार्थ कार्य दिल्ली प्रदेश द्वारा समाज बंधुओं के सहयोग से बेहद जरूरतमंद परिवार को 60,000/- नगद, 42,300/- बिटिया की साल भर की स्कूल तथा ट्यूशन फीस तथा 1,20,000/- की एफडी बनवाकर दी गई है। टोटल 2,22,300/- का सहयोग दिया गया है। 35 बहनों संग आदित्य बिड़ला ग्रुप का न्यू लॉन्चिंग शो रूम इंद्रियां भ्रमण तथा ज्वैलरी की 3 नई डिज़ाइन का इनॉग्रेशन। पंचम राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक मंगल प्रेरणा में दिल्ली प्रदेश को त्रिमासिक रिपोर्टिंग के लिए शालीमार कैटेगरी।

घर बैठे मतदान - व्यंग्यात्मक कविता लेखन प्रतियोगिता में जयश्रीजी भंडारी ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर दिल्ली प्रदेश का नाम रोशन किया। रामजाट रास गरबा और फन गरबा प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित।

अपनी संस्कृति तथा परंपराओं से युवा पीढ़ी को जोड़ने तथा अक्षुण्ण बनाएं रखने हेतु सभी क्षेत्रों की बहनों द्वारा खुब धूमधाम और हर्षोल्लास पूर्वक आयोजन किए गए।

लिए दायजा सामान दिया गया। ज्वॉइन टुगेदर NGO के 50 बच्चों संग भ्रमण कार्यक्रम जो शैक्षिक अनुभव, मनोरंजक गतिविधियों तथा रचनात्मक प्रतियोगिताओं की त्रिवेणी संगम से अविस्मरणीय सैर बन गया। देशभक्ति मेडले, कृष्ण-लीला मंचन के साथ वार्षिकोत्सव कृष्णाश्रय तथा बहनों व बच्चों द्वारा राम लीला की अति सुन्दर प्रस्तुति के साथ भव्य दीवाली मिलन समारोह आयोजित किया गया। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित सभी प्रतियोगिताओं तथा कार्यक्रमों में प्रदेश बहनों द्वारा पूर्ण रूपेण सहभागिता निभाई जा रही है।

अध्यक्ष-श्यामा भांगड़िया * सचिव-लक्ष्मी बाहेती

हरियाणा पंजाब प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

गरीब बच्चों को दिवाली पर दीपक पेंट करवा कर उसकी आय और मुनाफा भेंट किया

हरियाणा पंजाब प्रदेश अंतर्गत कार्यक्रम अभिप्रेरणा –स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं गीता में क्रमशः संजीवन सिद्धा समिति,स्वयं सिद्धा समिति, संस्कार एवं संस्कृति सिद्धा समिति द्वारा बहनों के लिए कार्यक्रम लाया गया। जिसमें बहनों को हृदय रोग से बचने हेतु सलाह दी गई। स्वयं सिद्धा के कार्यक्रम में सुरक्षा और कराटे की जानकारी दी गई, 100 बहनों ने इसमें भाग लिया। गीता पाठन में 70 बच्चे और महिलाएं शामिल रही यह सारी कार्यशाला ज़ूम पर आयोजित की गई।

नवरात्रि पर डांडिया उत्सव किए गए, कन्या पूजन और अखंड दीप जलाया गया। शरद पूर्णिमा पर खीर बनाकर चंद्रमा की शीतल चांदनी से अमृत प्रसाद रूप में ग्रहण किया गया। गरीब बच्चों को दिवाली पर दीपक पेंट करवा कर उसकी आय और मुनाफा भेंट किया गया। बहनों ने अपनी रूचि दिखाते हुए क्रिकेट मैच में सहभागिता दी। गणेश चतुर्थी पर राखी से वॉल हैंगिंग बनाने की प्रतियोगिता रखी गई।

दिवाली पर सभी जगह रंगारंग कार्यक्रम किए गए। रामायण थीम लेकर बच्चों द्वारा प्रेरक प्रसंग किए गए। महिलाओं ने रामायण पर आधारित नृत्य करते हुए दिवाली मिलन की खुशियां बांटी। युगल कराओके प्रतियोगिता रखी गई। गोवर्धन पर छप्पन भोग, तुलसी विवाह इत्यादि की धूम रही। देव दिवाली पर दीप जलाए गए। जरूरतमंद बच्चों की फीस दी जा रही है। वस्त्रम प्रोजेक्ट में बहनों ने सहभागिता देते हुए दान हेतु साड़ियां ली। प्रदेश द्वारा ढाई सौ साड़ियां ली गई। घर बैठे मतदान में प्रदेश से सराहनीय प्रस्तुति रही।

प्र.अध्यक्ष–सीमा मूंदड़ा * प्र.सचिव–अनु सोमानी

दक्षिणांचल

महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

''अक्षिता सिद्धि'' त्रिदिवसीय किशोरी शिविर धुलिया में सम्पन्न

अक्षिता सिद्धि–त्रि दिवसीय 8, 9, 10 नवंबर किशोरी शिविर का आयोजन प्रदेश संस्कार सिद्धा समिति अंतर्गत धुलिया जिला के शिरपूर तहसील NMIMS यूनिवर्सिटी के प्रांगण में संपन्न हुआ। स्वागत अध्यक्ष आ. राजगोपालजी भंडारी भाई साहब, उनके विशेष सहयोग के रूप में हमें ये कैंपस प्राप्त हो सका। उनको समाज भूषण सम्मान से सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

माननीय आ. प्रतिभा ताई पाटिल उनके मनोभाव और शुभ आशीर्वाद वीडियो द्वारा उनकी बेटी आ. ज्योतिजी राठौर से प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष आ. मंजुजी बांगड का शुभकामना संदेश भी विडियो के माध्यम से प्राप्त हुआ।

उद्घाटिका के रूप में रायपुर से पधारे आ. ज्योतिजी राठी (रा.महामंत्री), प्रमुख वक्ता के रूप में सुरत से पधारे आ. विमलाजी साबू (पू. राष्ट्रीय अध्यक्ष), प्रमुख अतिथी आ. प्रो. कल्पनाजी गगडानी (पू. राष्ट्रीय अध्यक्ष) साथ ही बहुत से गणमान्य लोगों ने इस कार्यक्रम कि शोभा बढाई।

स्पीकर के रूप में आ. विमलाजी साबू ने संस्कार और आयुर्वेद के व्दारा हेयर और स्कीन केयर पर जानकारी दी। प्रो. कल्पनाजी गगडानी (अपने जीवन को बनाना और बिगाडना Make it or Brcak it अपने हाथों में होता है।)

आ. निकीताजी मंत्री (Transform your Presence and Communication for greater Success) आ. राधिकाजी कलंत्री – ब्यूटीशियन (अपने आप को प्रेजेंटेबल शॉर्ट सेल्फ़ मेकअप कोर्स पर जानकारी दिए) त्यौहारो का रंग अपनों के संग पर किशोरियों का ग्रुप नृत्य प्रस्तुति हमारे सभी त्योहारों को दर्शाते हुए सभी को अचंभित कर दिया। Online प्रेक्टिस पर शानदार प्रस्तुति। आ. डॉ अल्पनाजी लड्ढा (संजीवन सिद्धा द. सह प्रभारी, प्र. सह संयोजिका) के सहयोग से बच्चियों का रूटीन हेल्थ चेकअप भी करवाए।

HPV जीवन रक्षक वैक्सीन पर विस्तृत जानकारी दिए और Eye Donation Google Form खुद भरने और फ्रेंड से भरवाने का निवेदन किए।

Happy Street में बच्चियों के लिए बौद्धिक एवं शारीरिक खेल कूद के गेम्स रखे गए, जो आज के परिवेश में लुप्त होते जा रहे हैं। आ. सी. ए. भाग्यश्रीजी चांडक (संचार सिध्दा रा. प्रभारी) सायबर सिक्योरिटी पर महत्वपूर्ण जानकारी दी। आ. शीतलजी करवा ने बच्चियों को चाकलेट बनाना सिखाए और किस तरह बिज़नेस पर्पस के रूप में भी इसे

कर सकते, बताया। आ.डॉ अल्पनाजी लड्ढा संचालित टॉक शो आ. रचनाजी फाफट, आ. ममताजी काबर, आ. अंजूजी भराडिया, आ. कृष्णाजी राठी सक्रिय रूप में शामिल होकर अपना सफ़र बताते हुए किशोरियों को जीवन में कामयाबी के लिए टिप्स दिए।समिती संयोजिका आ. शीतलजी भराडिया, सह संयोजिका आ. नीताजी डागा, आ. अंजलीजी बलदवा कौन बनेगी संस्कार सिद्धा खिलवाएँ।

जुंबा, ट्रेजर हंट और महाराष्ट्र प्रीमियर लीग-चझड क्रिकेट खिलवाए। टूटे रिश्ते, बिखरते परिवार क्या सोशल मीडिया है ज़िम्मेदार आ. संजयजी दहाड़ इस विषय पर मार्गदर्शन दिए। आ. कु. किर्ती नंदकिशोरजी भराडियाँ (सोलापुर) श्रीलंका इंडिया Non Stop Swim में कामयाबी पर प्रदेश के तरफ से सम्मान पत्र देकर उनका सम्मान किया गया।

उनके सफ़र कि कहानी उन्हीं के ज़ुबानी दी गई।

किशोरियों का तीन दिन का सफर PPT के माध्यम से दिखाए। बारह ग्रुप में से प्रथम ग्रुप को रु. 3100, द्वितीय ग्रुप 2100 और चार ग्रुपों को रु. 1100 के पुरस्कार दिए गए। किशोरियों को प्रथम दिवस जो गुलाबी टी शर्ट दी, उनके नाम का टोवेल और बहुत से सरप्राइज़ प्राइज़, फ्री हेल्थ चेकअप इत्यादि दिए गए। सभी किशोरियों के साथ यादगार पलों को संजो कर ये शिविर समाप्त हुआ।

आ. शैलाजी कलंत्री (माहेश्वरी महिला पत्रिका अध्यक्ष) हमारे समापन के अतिथि इनका भी संदेश विडियो के माध्यम से प्राप्त हुआ। मनमाड टीम आ. ज्योतिजी करवा, आ. मयूराजी फोफलिया एवं डॉ अर्चनाजी राठी का सहयोग।

आ. सरोजजी गट्टानी ने हमारी बच्चियों को लाने ले जाने का कार्य बहुत ही ज़िम्मेदारी से किया। हम दिल से उनका आभार मानते हैं।

धुलिया जिला अध्यक्ष डॉ रानूजी अजमेरा, सचिव मनीषाजी मूंदडा, प्रकल्प प्रमुख उषाजी काबरा, आ. सपनाजी भांगडिया, आ. रेखाजी मुंदडा (प्र. स्वयं सिद्धा संयोजिका) आ. सुनीताजी चांडक (प्र. ज्ञान सिद्धा संयोजिका) एवं धुलिया कि पूरी टीम, सिरपुर एवं दोंडाईचे कि पूरी टीम हम आप सभी का हृदय से धन्यवाद करते हैं। विशेष तौर पर डॉ विभाजी इंदानी आपका भी हर कार्य में सक्रिय सहयोग रहा है।

आ. कल्पनाजी लोया (उपाध्यक्ष), आ. राधाजी झवर (सह सचिव) आ. शीतलजी भराडिया (संयोजिका) सबके साथ कि वजह से ये संभव हो सका।

ज्ञान सिद्धा समिति ''घर बैठे मतदान'' व्यंग्यात्मक कविता लेखन पर पूरे राष्ट्र में दूसरा स्थान आ. सुनीताजी माहेश्वरी, आ. दीपालीजी रांदड सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

प्रदेश अध्यक्ष का खानदेश विभाग नासिक, धुलिया, नंदुरबार, जलगाँव और सोलापूर जिला का भ्रमण। 30 सितंबर स्वयंभू सिध्दी चतुर्थ कार्यसमिति मीटिंग संपन्न हुई।

प्र.अध्यक्ष-सुनीता पलोड * प्र.सचिव-सुनीता चरखा

मुंबई प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

संजय गांधी नेशनल पार्क में 100 से अधिक आम और जामुन के पौधे लगाए

मुंबई प्रदेश में घाटकोपर और अंधेरी क्षेत्र में डांडिया एवं रास गरबा का जोरदार आयोजन हुआ जिसमें सभी आयु वर्ग के लोग शामिल हुए। दक्षिण मुंबई क्षेत्र द्वारा आयोजित सिद्धिविनायक मंदिर पदयात्रा में 95 समाजबंधुओं ने भाग लिया। रात्रि 8:30 बजे मण्डल भवन चीराबाज़ार में प्रसाद ग्रहण के बाद समाज के कलाकारों द्वारा प्रथम मंज़िल हॉल में भजन संध्या के पश्चात 11:30 बजे पैदल यात्रा प्रारंभ हुई। प्रातः काल 4:30 बजे मंदिर में दर्शन और आरती के दर्शन के साथ पदयात्रा संपन्न हुई। सभी ने इस पदयात्रा का आनंद लिया।

मुंबई प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा सीमाजी बागला, प्रदेश मंत्री और नीलम जी सोडाणी के नेतृत्व में संजय गांधी नेशनल पार्क मुंबई में वृक्षा रोपण का कार्यक्रम किया गया जिसमें 100 से अधिक आम और जामुन के पौधे लगाये गये।

केंद्रीय समिति द्वारा केशव सृष्टि के वृद्धाश्रम और गौशाला में नंदोत्सव मनाया गया। इसमें मां रत्नादेवी काबरा की विशेष उपस्थिति रही। इस अवसर पर वृद्धाश्रम में अनुदान और गौशाला में गौदान और गौ के लिए चारा दिया गया। मुंबई में सभी क्षेत्रो में दीपावली स्नेह मिलन का कार्यक्रम बहुत ही सफलता पूर्वक संपन्न हुआ । सभी जगह पर उपस्थिति बहुत अच्छी रही। पारितोषिक वितरण भजन संध्या एवं अन्नकूट महाप्रसाद सभी क्षेत्र की विशेषता रही है। ज्ञान सिद्धा साहित्य समिति के अंतर्गत संपन्न कार्यक्रम।

दक्षिणांचल द्वारा आयोजित कार्यक्रम साहित्य चक्र के अंतर्गत मुंबई प्रदेश से साहित्य की ग्रन्थ यात्रा विषय पर अति ज्ञानवर्धक चर्चा को पॉडकास्ट विधा द्वारा प्रेषित किया गया, जिसमें हमारे शास्त्र और ग्रंथों की जानकारी को सरल रूप में पहुंचाने के उद्देश्य से सफल प्रयास किया।

तृतीय लेखन प्रतियोगिता ''घर बैठे मतदान'' एक व्यंग्यात्मक कविता का सफल आयोजन किया गया। प्रदेश से प्रथम तीन रचनाएँ भेजी गई, जिनमें श्रीमती रुक्मन लड्ढा और श्रीमती रेनू दम्मानी की रचनाओं को सराहना मिली। पूनमजी गगडानी और उनकी टीम ने The Kreative Chaos संस्कार एवम बाल विकास समिति द्वारा किया गया, बहुत अच्छा रहा, सभी बच्चों ने बहुत एंजॉय किया और बहुत नया सीख कर गए।

अध्यक्षा–अनिता माहेश्वरी * मंत्री–सीमा बागला

कर्नाटक गोवा प्रांतीय माहेश्वरी महिला संगठन

''बचपन से पचपन तक'' नृत्य नाटिका प्रस्तुत

सभी शहरों में गणेश जी का उत्सव व राखी बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इरकल शहर में गणेश जी की थाली सजावट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गणेश चतुर्थी के निमित्त पहले से लेकर 12वीं तक के बच्चों के लिए गणेश जी की तस्वीर सजाने की प्रदेश द्वारा प्रतियोगिता रखी गई व विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। जमखंडी शहर में गणेश उत्सव से अनंत चतुर्दशी तक रोज विष्णु सहस्त्रनाम, रामरक्षा व हनुमान चालीसा का पाठ किया गया।

गंगावती शहर में रंगोली प्रतियोगिता रखी। सरकार द्वारा स्थापित EWS सर्टिफिकेट एवं कैटिगरी की जानकारी व्हाटसएप द्वारा प्रदेश के सभी लोगों को दी गई। बागलकोट शहर में बचपन से पचपन तक इस विषय पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। बागलकोट में अपनी संस्कृति अपनी धरोहर कार्यक्रम के अंतर्गत सभी त्योहारों का नृत्य द्वारा महत्व दर्शाया।

गुलेजगुड शहर में देवझूलनी एकादशी के निमित्त

भगवान का नौका विहार कार्यक्रम हुआ। बीजापुर शहर में स्थानीय संगठन को स्थापित करने वाली किशन प्यारी बाई बाहेती का शॉल उड़ाकर सम्मान किया गया।

पितृपक्ष की महालय अमावस्या के निमित्त प्रदेश के बैंगलुर, गोकाक व अन्य कई शहरों में गौ सेवा की गई 51 हनुमान चालीसा का पाठ किया गया। सभी शहरों में कन्या भोजन करवाया गया। बेंगलुरु में 151 कन्याओं का भोजन करवा कर टिफिन बॉक्स, पेंसिल बॉक्स, चॉकलेट, इत्यादि उपहार दिए गए व अन्य कई शहरों में महानवमी के उपलक्ष में कन्याओं को भोजन करवा कर भेंट दी गई। गुलेजगुड, गोकाक बीजापुर आदि शहरों में नवरात्रि के निमित्त रामायण जी का पाठ किया गया।

इल्कल शहर में बालाजी मंदिर प्रसाद अशुद्धियां को लेकर भव्य रैली का आयोजन हुआ। शरद पूर्णिमा के निमित्त कई शहरों में कार्यक्रम रखा गया । दांडेली में करवा चौथ का सामूहिक उद्यापन समाज की तरफ से करवाया गया। सभी शहरों में करवा चौथ व दीपावली आदि त्योहारों का सभी ने भरपूर आनंद लिया। वृद्ध आश्रम में जाकर बुजुर्गों के साथ त्योहारों के निमित्त भजन व भोजन किए गए।

बेंगलुरु शहर में दिवाली के निमित्त अनाथ आश्रम के करीब 85 बच्चों को एक महीने की खाद्य सामग्री के साथ दैनिक जरूरी का सामान ब्रश, टूथपेस्ट, साबुन, बुक्स पेंसिल आदि का वितरण किया गया साथ ही में दीप जलाकर

उन बच्चों के साथ दीपोउत्सव मनाया गया।

बायोडाटा का आदान-प्रदान एवं अभिभावकों के संग बच्चों की काउंसलिंग का कार्यक्रम हुआ। बागलकोट, गुलेजगुड,बन्हट्टी, आदि शहरों में डांडिया गरबा क्लासेस का आयोजन किया गया व प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। जमखंडी में स्टील के बर्तनों से मंदिर बनाने प्रतियोगिता रखकर विजेताओं को पुरस्कृत किया। बीजापुर में भास्कराचार्य प्राप्त विद्याजी तोषनीवाल द्वारा बच्चों के लिए करियर काउंसलिंग की क्लास ली गई व उन्हें सम्मानित किया गया। विलेज अच्छा शहर से इलकल में पधारे पद्मा जी दरक द्वारा लाइफ वित लालजी कार्यशाला का आयोजन किया गया। सभी शहरों में दिवाली व गोवर्धन पूजा का उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। अपने संस्कार जीवित रहे इसका पूरा-पूरा ध्यान रखा गया।

प्रदेश द्वारा जुम पर दांतों की सुरक्षा स्वास्थ्य जीवन की परिभाषा कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसमें मुख्य वक्ता डॉ संजना सोनी जलगांव निवासी रही और मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिणांचल सह प्रभारी डॉक्टर अल्पना लड्ढा रही। करीब 80 बहनों ने इस कार्यक्रम का लाभ लिया। बागलकोट में कैंसर स्क्रीनिंग टेस्ट का आयोजन किया गया जिसमें 51 महिलाओं ने लाभ लिया।

अध्यक्ष-सरोज कासट * सचिव-सुनीता लाहोटी

तेलंगाना आंध्र प्रदेश प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

सशक्त बनाने हेतू डिजिटल भारत तकनीक की क्लासेस, जरूरतमंद 4 कन्या को दायजा, बुज़ुर्गो को मिठाई नमकीन वितरण

माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा सभी समिती संयोजिका का सम्मान किया गया। तृतीय कार्य समिती बैठक ज़ूम पटल पर आयोजित हुई। श्रीमती अंजली जी तापडिया ने शारदीय नवरात्र नौ माता के रूपों का सुंदर व्याख्यान दिया। आदरणीय श्रीमती सुर्वणा जी मालपानी ने महिषासुर मर्दनी श्लोको से बहनों एवं किशोरी को प्रशिक्षित किया । डॉ अनुराधा जी जाजू द्वारा किशोरियों को उनके उज्ज्वल भविष्य निर्माण हेतु गोल निंधारित करने के टिप्स दिए गए। श्रीमती रेखा जी मुदंडा ने गुणपति गणपति कथा के माध्यम से अपने जीवन शैली से जुडे विकार पर रोशनी डाल कर जीवन मार्गदर्शन पर व्याख्यान दिया। कामकाजी बहनों को सशक्त बनाने हेतू डिजिटल भारत तकनीक की क्लासेस ली गई, कु. ज्योति राठी ने ऑनलाइन बिजनेस का प्रोत्साहन दिया ।श्री अनिल जी मालपानी ने ऑनलाइन तकनीकी ज्ञान सिखाए। करवा चौथ पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। वृद्धाश्रम में 81 बुजुर्गो का शाल द्वारा सम्मान किया एवं दिपावली पर्व पर मिठाई नमकीन पटाखे वितरण किए गए। दीपदान, दिवाली स्नेह मिलन समारोह, अन्नकूट, गोपाष्टमी प्रसादी, गो लापसी भोजन एंव राशी की व्यवस्था, ग्वाल कपडे, साडी वितरण किए गए। विवाह योग्य जरूरत मंद 4 कन्या को दायजा दिया गया ।

मध्यांचल

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

या देवी सर्व भूतेषु, श्रद्धा रूपेण संस्थिता के तहत 1270 कन्या भोजन

प्रादेशिक तृतीय कार्य समिति बैठक नवधा का आयोजन। उसमें धार्मिक यात्रा जगन्नाथ पुरी यात्रा पर चर्चा। राष्ट्रीय महामंत्री ज्योति जी राठी द्वारा 10,11,12 जनवरी नागपुर में होने वाली राष्ट्रीय मीटिंग की विस्तृत जानकारी। राधा अष्टमी प्राक्टय दिवस महिषासुर मर्दिनी स्त्रोत पर प्रशिक्षण का प्रचार एवं प्रदेश से महिलाओं की सहभागिता।

द्वितीय पॉडकास्ट **''रूपम देही जयम देही''** का ऑनलाइन समागार में आयोजन। छत्तीसगढ़ की सफल एवं यशस्वी माहेश्वरी बहनों का साक्षात्कार। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष गीता जी मूंदड़ा एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गिरिजा जी सारडा का महत्वपूर्ण उद्बोधन। निम्न वर्ग बस्ती की महिलाओं को गैस चूल्हा संबंधित उपयोगी जानकारी शिविर। ''घर बैठे मतदान'' राष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित।

माहेश्वरी महिला लेखनी का प्रकाशन रामसापीर बाबा की शोभायात्रा एवं महा आरती, पितृपक्ष में ब्राह्मणों को भोजन, चुनरी मनोरथ गंगा मैया मंदिर में सम्पन्न । पितरों को नमन कार्यक्रम के तहत अपना घर आश्रम रायपुर में भजन, माधव सेवा,वस्त्र दान, पिकनिक का आयोजन इसके आकर्षण रहे म्यूजिकल चेयर, अंताक्षरी, हाउसी और बच्चों का रेन डांस।

5 सितंबर शिक्षक दिवस के अवसर पर सरकारी शिक्षकों का सम्मान। आर्ट ऑफ़ लिविंग के हैप्पीनेस कोर्स का आयोजन। अपना घर आश्रम में न्यूट्रिशन संबंधित विस्तृत जानकारी दी गई। नेत्रदान महादान प्रोजेक्ट अनवरत चालू।

विशेष– दृष्टि आनंद ममता टावरी कोलकाता में बॉक्सिंग टूर्नामेंट में रजत पदक हासिल कर नेशनल के लिए चयनित हुई। श्रद्धा रुपेण संस्थिता जिला स्तरीय कन्या भोज कार्यक्रम करवाया गया। समाचार पत्र बनाओ प्रतियोगिता करवाई गई। कृष्ण लीला विषय पर प्रतियोगिता आयोजित , अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित महिषासुर मर्दिनी स्त्रोत प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश की सहभागिता।

पितृपक्ष में 53 ब्राह्मण को भोजन। नवरात्र के अवसर पर श्रद्धा रुपेण संस्थिता के तहत 1270 कन्या भोजन,फल, अन्य खाद्य पदार्थ का वितरण। कन्याओं को चुनरी ओढ़ाकर पूजन। डोंगरगढ़ जा रहे पदयात्रियों के मध्य 200 किलो फल वितरण। गंगा मैया धाम की पदयात्रा। रामधुनी विशेष भजन मंडल द्वारा शरद पूर्णिमा पर्व में भजनों का आयोजन। महारास, सती दहन, रक्तबीज संघार, नवदुर्गा स्वरूप जैसे कार्यक्रमों की प्रस्तुति। खीर प्रसादी वितरण। धार्मिक यात्रा में भजन, पूजन, पर्यावरण तथा भोजन का आनंद। करवा चौथ के पांच उद्यापन। कार्तिक मास दीपदान कार्यक्रम। चार पीढ़ियों का सम्मान।

कैंसर पीड़ित बच्चों को चादर ,टॉवल , ड्रइंग कॉपी, खाद्य पदार्थ आदि वितरण। अचानक हार्ट अटैक से बचने के बेहतरीन समाधान व जानकारी वीडियो द्वारा फ्रोजन शोल्डर निवारण हेतु योग संजीवनी द्वारा वीडियो प्रसारण। नेत्रदान महादान प्रोजेक्ट अनवरत चालू।

प्र.अध्यक्ष–शशि गट्टानी * प्र.सचिव–रूपा मूंदड़ा

गुजरात प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

द्वितीय स्नेह सम्मेलन का आयोजन

गत 18 नवंबर रात को राजकोट माहेश्वरी समाज का इस सत्र 24–25 का द्वितीय स्नेह सम्मेलन का आयोजन हुआ। दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा होलानी ने नेत्रदान महादान को नजर में रख पूरे समाज से नेत्रदान के संकल्प पत्र भरने की अपील की । डॉक्टर मुकेश पोरवाल रेटिना हॉस्पिटल ने नेत्रदान से कितनी जिंदगियां रोशन होती हैं एवं उसके अन्य क्या–क्या फायदे हैं यह विस्तार से एवं बहुत ही सहज रूप से समझाया ।शिक्षा एवं स्वास्थ के क्षेत्र में अग्रणी समाज जनों ने भी सामाजिक एकता दर्शाते हुए सामूहिक प्रयास किया एवं 57 सदस्यों ने यह संकल्प पत्र भरा। इस कार्यक्रम की यह खूबसूरती रही कि डॉ साहब के उद्बोधन से प्रेरित हो किशोर–किशोरियों ने भी यह संकल्प पत्र भरा । डॉ पोरवाल, सुनीता भदादा, प्रियंका काबरा, शिल्पा भट्टड़ विशेष रूप से उपस्थित थे । समाज के सभी वरिष्ठ,कनिष्ठ सदस्यों ने सुस्वादु भोजन का आनंद ले विदा ली।

सूरत जिला माहेश्वरी महिला संगठन–विशेष बैठक एवं परिचर्चा

सूरत जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा समस्त माननीय राष्ट्रीय पदाधिकारियों के स्वागत एवं संवाद हेतु एक विशेष बैठक एवं परिचर्चा का आयोजन श्री माहेश्वरी सेवा सदन, पर्वत पाटिया में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और गीता बाल संस्कार केंद्र के बच्चों द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुई। संगठन की अध्यक्षा वीणा तोषनीवाल ने स्वागत उद्बोधन दिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्षा मंजू जी बांगड़ ने अपने प्रेरणादायक संबोधन में संगठन में समर्पण और टीम भावना के साथ कार्य करने के महत्व पर जोर दिया। राष्ट्रीय निवर्तमान अध्यक्षा आशा जी माहेश्वरी ने संगठन को मजबूत बनाने और महिलाओं को जागरूक करने की आवश्यकता पर बल दिया। वहीं, राष्ट्रीय भूतपूर्व अध्यक्षा सुशिला जी काबरा ने महिलाओं को सशक्त और समाज में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष किरण जी लड्ढा, संगठन मंत्री ममता जी मोदानी, मध्यांचल उपाध्यक्ष उर्मिला जी कालंत्री एवं अनीता जी जांवदिया, तथा मध्यांचल सह सचिव सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहीं, जिनकी गरिमामयी उपस्थिति ने इस कार्यक्रम को और विशेष बना दिया। विमला जी साबू ने स्वस्थ जीवन जीने के महत्वपूर्ण तरीकों पर प्रकाश डाला। संगठन के कार्यों का प्रतिवेदन सचिव प्रतिभा मोलासरिया द्वारा प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन संगठन मंत्री स्वेता आनंद जाजू ने किया और सांस्कृतिक मंत्री रेखा पोरवाल ने आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में वंदना भंडारी एवं सभी पदाधिकारी का विशेष सहयोग रहा। इस कार्यक्रम में लगभग 165 से 170 बहनों की उपस्थिति रही। यह विशेष बैठक महिला संगठन की सक्रियता, समर्पण और प्रेरणादायक दृष्टिकोण का प्रतीक रही, जिसने समाज की उन्नति में एक नई दिशा प्रदान की।

विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

मैं हूं स्वयंसिद्धा घर का घी, घर घर सेल, प्रोजेक्ट को दिवाली आफर

अष्टसिद्धा व्यक्तित्व विकास एवं नेतृत्व प्रशिक्षण समिति–प्रदेश सचिव निलिमा मंत्री की प्रमुख उपस्थिति में अकोला जिला कार्यकारिणी सभा ली गई, जिसमें प्रदेश सचिव ने रिपोर्टिंग पर मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में 200 बहनो की उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी सभा की समिति अनुसार सदस्य के साथ राष्ट्रीय मंत्राणी ज्योतीजी राठी, मध्यांचल उपाध्यक्षा उर्मिलाजी कलंत्री, संयुक्त मंत्राणी अनिताजी जांवदिया द्वारा टीम के कार्यों पर मार्गदर्शन किया गया।

संस्कार सिध्दा, बाल एवं किशोरी विकास समिति–राष्ट्रीय प्रोजेक्ट किशोरीयो को लैपटॉप के लिये प्रदेश के 80 तहसील तक सर्कुलर भेजे गये एलं आवश्यकता के हिसाब

से चयन करना शुरू है।

प्रदेश के बहनों को स्वरोजगार देने तथा स्वावलंबी बनाने के लिए मैं हूं स्वयंसिद्धा घर का घी घर घर सेल प्रोजेक्ट को दिवाली आफर रखा गया। यह प्रोजेक्ट उद्योजक स्नेहा भट्टड, स्वयंसिद्धा समिति संयोजिका रेणुजी केला और निर्देशिका शोभाजी गट्टाणी के कोशिश से 25 तहसीलों मे चल रहा हैं। 20 स्टाल लगाये जायेंगे।

17 अक्टूबर से 15 नवंबर तक से कार्तिक मास मे 50 बहनों के साथ सामुहिक परिक्रमा का समापन, तुलसी विवाह, कन्यादान और सामुहिक भोजन किया गया जिसमें सभी रीति-रिवाज किये गये। 150 बहनों का सहभाग रहा।

नागपुर जिला द्वारा दीपावली स्नेह मिलन कार्यक्रम मे मुख्य अतिथी पुर्व अध्यक्षा गीताजी मुंदडा का मार्गदर्शन विषय **''उत्सव के रंग राष्ट्रीय पुर्व अध्यक्षा के संग''**।

अकोला जिला सभा में सोच बदलो संस्कार नही पर मार्गदर्शन राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य वैशाली चांडक द्वारा रखा गया। 200 बहनो की उपस्थिती थी ।

ग्राम विकास व राष्ट्रोदय समिति-राष्ट्रीय प्रोजेक्ट - वस्त्रम को प्रदेश के सभी जिला से 600 साड़ियों का सहयोग दिया।

प्रदेश सचिव निलिमा मंत्री द्वारा राष्ट्रीय स्वाश्रिता सिलाई सेंटर प्रोजेक्ट की बहनों को दिपावली भाईदुज पर साडी, चद्दर, मिठाई 251 बहनों को दिये गये।

संजीवन सिद्धा समिति-राष्ट्रीय संगठन द्वारा आये हुए नेत्रदान का विडियो तथा पारिवारिक प्रतिज्ञा पत्र फॉर्म सभी जिला संगठनों में नवंबर माह मे भी भेजे गये।

दिल की क्या आरजू डिबेट प्रतियोगिता का आयोजन

प्रदेश से लक्ष्य त्रीदिवसीय कार्यशाला का बुलढाणा जिला के सहकार विद्या मंदीर मे 120 किशोरियों के साथ 50 कार्यकारिणी बहनो के साथ आज की जरुरत ओर बेटी सर्वगुण संपन्न हो ऐसा सर्वांगिक विकास कराते हुये प्रदेश द्वारा सफल आयोजन, तो जरूरत मंद समाज की 2 बहनोको प्रदेश द्वारा पिकोफॉल की सिलाई मशीन दी गई तीज त्योहार की आवश्यकता घर का घी नाम देकर 20 तहसील की 20 बहनों को स्वयंरोजगार देते हुये स्वयमसिध्दा प्रोजेक्ट की सुरुवात प्रदेश से की गई।

रिपोर्टिंग कैसी होनी चाहिए इसलीये राष्ट्रीय पुर्व अध्यक्षा कल्पनाजी गगराणी का मार्गदर्शन रहा कार्यक्रम ऑनलाईन लिया गया। 44 तहसील का सहभाग मिला ओर आज की सामाजिक समस्या को देखते हुये कम उमर की बहुओं द्वारा **''दिल की क्या आरजू''** डिबेट प्रतियोगिता का आयोजन किया 33 बहनो का सहभाग रहा जजमेंट के लिये राष्ट्रीय अर्चनाजी लाहोटी की उपस्थिती रही बहुओं द्वारा बहुत समस्या सामने आई ओर कुछ निराकरण भी हुआ। मध्यांचल अधिवेशन मे प्रदेश की 50 बहनो की उज्जैन मे उपस्थित रहकर सभी प्रतियोगिता मे प्रदेश ने सम्मान प्राप्त किया। वक्तृत्व स्पर्धा मे प्रदेश से प्रथम वैशाली चांडक तो तृतीय मीनू भट्टड ने मध्यांचल मे स्थान पाया।

''झनक स्वदेश की झलक'' में द्वितीय स्थान तो ''आपकी अदालत'' में चतुर्थ स्थान और ''तितली उडी उडके चली'' नाटीका मे चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। गोदीया जिला मे मनस्वी सभा मे राष्ट्रीय महामंत्राणी ज्योतिजी राठी की उपस्थिति मे सभी प्रतियोगिता के प्रदेश द्वारा पुरस्कार दिये गये। प्रदेश के 11 जिला श्रृंखला बध्द संगठन के तहत समाज के हर क्षेत्र मे बढ़-चढ़कर सुंदर कार्य करते हुये विदर्भ प्रदेश का नाम उचाई पर ले जारही है जिसका ही नतीजा पाचवी बार राष्ट्रीय स्तर पर कोहिनूर कैटेगरी मे चुना गया।

अध्यक्षा -सुषमा बंग * सचिव-निलिमा मंत्री

पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

सिया सृजन और रमा उज्ज्वला प्रोजेक्ट्स के तहत सशक्तिकरण के लिए प्रशिक्षण

सागर में लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला का स्वागत किया गया और भोपाल में प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती रंजना बाहेती को बेस्ट अध्यक्ष सम्मान से सम्मानित किया गया। संगठन से संवाद-संकल्प के साथ अभियान के तहत मध्यांचल संयुक्त मंत्री अनीता जांवदिया, प्रदेश अध्यक्ष रंजना बाहेती, प्रदेश सचिव राजश्री राठी, और संयुक्त मंत्री कविता चांडक ने रायसेन, बरेली, भारकच, गैरतगंज, और उदयपुरा एवं अन्य ईकाईयों में भ्रमण कर 19 परिवारों को संगठन की मुख्य धारा से जोड़ा। अनीता जी जांवदिया, रंजना बाहेती एवं राजश्री राठी द्वारा संगठन की बहनों के साथ संगठन कार्य, प्रोटोकॉल, रिपोर्टिंग, और बहनों को सशक्त बनाने पर चर्चा हुई।

सिया सृजन और रमा उज्ज्वला प्रोजेक्ट्स के तहत महिला सशक्तिकरण के लिए प्रशिक्षण सत्र और मार्केटिंग कार्यशालाएं आयोजित की गई। 90 बच्चों को मिट्टी के गणेश, भगवान के श्रृंगार और झांकियों का प्रशिक्षण दिया गया। शहडोल की तनवी मुंदड़ा ने NEET में 685 अंक प्राप्त कर राज्य में 50वां स्थान हासिल किया। सिहोर में संजा माता -विलुप्त होती लोक कला को पुनर्जीवित किया गया।

रायसेन में श्राद्ध पक्ष में जरूरतमंदों को भोजन करवाया गया। नर्मदा किनारे पर पिंडदान और तर्पण के साथ ब्राह्मणों को भोजन कराया गया। हर सीट-हॉट सीट प्रतियोगिता में रुपाली जी ने और घर बैठे मतदान प्रतियोगिताओं में लक्ष्मी जी काबरा ने पुरस्कार जीते। एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत पौधारोपण जारी रहा।

युगल सिद्धा समिति के तहत 5 विवाह हुए और 41 जोड़े जुड़े। आधुनिकता का चश्मा सब पे चस्पा नाटिका ने पहला पुरस्कार जीता। 15 अक्टूबर को शोभापुर में प्रदेश कार्यसमिति बैठक के अन्तर्गत मुख्य अतिथि श्रीमती अनीता जी जांवदिया की उपस्थिति में आपकी अदालत प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। ग्वालियर में शरद क्वीन और मुरैना में सर्वाइकल कैंसर वैक्सीन शिविर हुआ। रायसेन के बरेली में रक्तदान शिविर और वीणा मूंदड़ा ने देहदान का संकल्प लिया।

प्रादेशिक संगठन ने कोहिनूर खिताब जीता। विभिन्न जिलों में महिलाओं को प्रेरित करने के लिए गरबा, डांडिया, भागवत कथा, अन्नकूट एवं विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजन सम्पन्न हुए। रायसेन के केतन माहेश्वरी ने क्रिकेट में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

प्रदेश अध्यक्ष-रंजना बाहेती * प्रदेश सचिव-राजश्री राठी

पश्चिमी मध्यप्रदेश प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

आओ जीवन की संध्या को खुशनुमा बनाएँ,सांध्य बेला के कुछ पल, नौ निहालो के संग बिताएँ

पश्चिमी मध्यप्रदेश प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के नवम सत्र की तृतीय बैठक ''अक्षतम'' का आयोजन दिनांक 17-12-2024 को अलीराजपुर में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान उमा महेश के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। महेश वंदना खट्टाली की बहनों के द्वारा नृत्य के माध्यम से की गई।

सभी अतिथियों का स्वागत अंचल के आदिवासी स्वागत नृत्य के साथ किया गया। अतिथियों का स्वागत तुलसी के पौधे दे कर किया गया। अलीराजपुर जिला अध्यक्ष श्रीमती अनिताजी कोठारी द्वारा शाब्दिक स्वागत,सभी का धन्यवाद किया। प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती ऊषाजी सोडानी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सकारात्मक सोच रखते हुए समाज को आगे बढ़ाने में सहयोग करना चाहिए। परिवार के सदस्यों को एक साथ बैठकर व बच्चों के साथ भी समय व्यतीत करना चाहिए। प्रत्येक शुभ अवसर पर एक छायादार पौधा अवश्य लगाएँ। उज्जैन में मध्यांचल अधिवेशन अभिप्रेरणा के आय व्यय का ब्यौरा भी पेश किया।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी काबरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम सौभाग्य शाली हैं,हमने भारत भूमि पर माहेश्वरी समाज में जन्म लिया, किंतु सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि हमें अनमोल जीवन मिला। तो हमारा दायित्व है कि हम तन,मन,धन, समय से समाज उत्थान का प्रयास करें। पूर्व न्यायाधीश सुश्री साधना जी शारदा ने कहा कि समाज प्रतिभाओं का खजाना है। उन छुपी हुई प्रतिभाओं को आगे लाने का कार्य संगठनों के माध्यम से किया जाना चाहिए। साथ ही उन्होंने समाज में पनप रही कुरीतियों के निराकरण का आह्वान भी किया। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय माहेश्वरी महिला संगठन की सदस्य श्रीमती डिम्पलजी सोनी ने महिला सशक्ति करण पर जोर दिया। भवन निर्माण के लिए माया, सुंदर दिखने के लिए काया,जरूरी है, सुसंगठित समाज निर्माण के लिए समाज का सुसंस्कृत होना जरूरी है।

मुख्य अतिथि श्रीमती चंद्रकांताजी सोमानी ने महिलाओं की शक्ति पर कहाँ-नारी कोमल अवश्य है,कमजोर नहीं। नारी यदि दृढ़ निश्चय कर ले तो कुछ भी असंभव नहीं है। साथ ही समाज की घटती जनसंख्या पर भी चिंता व्यक्त की। समाज द्वारा संचालित विभिन्न ट्रस्टों की जानकारी राष्ट्रीय अष्ट सिद्धा समिति प्रभारी डॉ नम्रताजी बियानी द्वारा दी गई।

प्रदेश सचिव शोभा जी माहेश्वरी ने सचिवीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया व प्रदेश के 16 जिलों में किए गए कार्यक्रम की जानकारी दी। चिंतन सत्र अन्तर्गत ''आओ जीवन की संध्या को खुशनुमा बनाएँ,सांध्य बेला के कुछ पल, नौ निहालो के संग बिताएँ'' विषय पर परिचर्चा प्रदेश साहित्यिक समिति संयोजक श्रीमती अयोध्या जी चौधरी द्वारा संचालित की

गई। राष्ट्र द्वारा निर्देशित मांडना व पतंग सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। खर्चीली शादी को नवयुगल स्वयं विरोध करें विषय पर लघु नाटिका प्रस्तुति अलीराजपुर की वधू मण्डल की सदस्यों द्वारा दी गई। महिला थाना प्रभारी द्वारा डिजिटल अरेस्टिंग की जानकारी देते हुए सतर्क रहने का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रमिला कोठारी एवं श्रीमती ज्योति कोठारी ने किया। आभार अलीराजपुर जिला सचिव श्रीमती ज्योति कोठारी एवं प्रदेश संगठन मंत्री श्रीमती प्रमिला भूतड़ा द्वारा किया गया। प्रदेश द्वारा पूर्व में आयोजित प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण भी किया गया। इंदौर से प्रदेश सदस्य श्रीमती भावना पवन सोमानी के सौजन्य से पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर अलीराजपुर सभा जिला अध्यक्ष श्रीमान आदित्य जी कोठारी,पश्चिमी मध्यप्रदेश युवा संगठन प्रचार मंत्री श्रीमान गोविंद जी गुप्ता, अलीराजपुर निवृतमान ज़िला महिला संगठन अध्यक्ष श्रीमती शकुंतलाजी कोठारी सहित लगभग 150 महिलाएँ उपस्थित थी।

महिषासुर मर्दिनी स्तोत्र कार्यशाला

महिषासुर मर्दिनी स्तोत्र कार्यशाला में 130 बहनों ने सामूहिक रूप से जाप किया। घर बैठे मतदान प्रतियोगिता में 14 संगठनों से प्रविष्टि प्राप्त।बरसात के मौसम में कैसे पेड़ों का रखरखाव व सब्जी के छिलकों से कैसे खाद बनानी है ऑनलाइन कार्यशाला आयोजित कराई गई जिसमें 16 जिलों की सहभागिता रही। मौसम के अनुसार बीमारी से बचाव हेतु फ्लायर बनाकर स्थानीय स्तर तक प्रेषित किए गए। सभी संगठन द्वारा गोपाष्टमी पर गौशाला में दान,आंवला नवमी पर पूजा पाठ एवं देव दिवाली पर दीप दान किया गया। इंदौर जिले में संगठन द्वारा सार्थक दीपावली पर्व विद्युतउपकरण व अन्य जरूरत के समान भेंट किए गए। प्रदेश के सभी जिलों में दीपावली मिलन समारोह, अन्नकूट महोत्सव के पारिवारिक आयोजन आयोजित किए गए। बुरहानपुर व धार जिला संगठन द्वारा मानव सेवा हेतु रक्तदान शिविर आयोजित कर 85 यूनिट रक्तदान किया गया।

प्र.अध्यक्ष-उषा सोड़ानी ❋ प्र.सचिव-शोभा माहेश्वरी

पूर्वांचल

नेपाल प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

पितृ पक्ष में वृद्धाश्रम में भोजन, गौ सेवा, दान, फायरलैस मिठाई और कार्ड प्रतियोगिता के साथ भव्य डांडिया कार्निवाल सम्पन्न

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन ने अत्यंत प्रभावशाली धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया। पितृ पक्ष में वृद्धाश्रम के 68 निवासियों के लिए भोजन एवं राशन सामग्री वितरित की गई। गौशालाओं में गौ सेवा करते हुए गौ माताओं को चारा, रोटी, गुड़, दलिया इत्यादि अर्पित किया गया। शारदीय नवरात्र के अवसर पर मां दुर्गा का विशेष श्रृंगार, मेहंदी एवं पाठ का आयोजन किया गया।

डांडिया कार्निवाल में 2000 से अधिक लोगों की उपस्थिति रही, जिसमें जयपुर से पधारे डीजे ने उत्सव का आकर्षण बढ़ाया। दिवाली एक्ज़ीबिशन में 350 से अधिक आगंतुकों ने सहभागिता की। गोपाष्टमी एवं आंवला नवमी पर गौ सेवा महोत्सव में गौ माता की पूजा एवं छप्पन भोग का आयोजन हुआ।

मेची माहेश्वरी महिला मंच की अध्यक्षा श्रीमती रीता चितलांगिया को महिला उद्यमी समूह की सदस्य के रूप में निर्विरोध चयनित होने पर मंच ने सम्मानित किया। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के ज्ञान सिद्धा कार्यक्रम में व्यंग्यात्मक कविता लेखन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। संस्कार सिद्धा द्वारा बच्चों के लिए फायरलैस मिठाई और कार्ड प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें पूरे नेपाल से बच्चों ने भाग लिया और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इन सभी कार्यक्रमों ने सेवा, संस्कृति एवं परंपराओं के प्रति समर्पण को प्रोत्साहित किया। नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन ने इन आयोजनों के माध्यम से समाज में एकता, परंपरा एवं सांस्कृतिक जागरूकता को सुदृढ़ किया।

अध्यक्ष–निशा माहेश्वरी * सचिव–मल्लिका राठी

पूर्वोत्तर (आसाम) माहेश्वरी महिला संगठन

कैंसर से पीड़ित व्यक्ति को सहयोग, बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता

हरसीट हॉटसीट सीजन 2 में पूर्वांचल में पूर्वोत्तर तृतीय स्थान पर। आओ सजना संवारना सीखे सौंदर्य कार्यशाला । नवरात्रि पर संस्कार शिविर के बच्चों द्वारा नृत्य, गाने, भजन प्रस्तुति तथा दीपावली पर बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता व माता के नौ रूपों की ज्ञानशाला एवं निःशुल्क चैस प्रशिक्षण । बाल दिवस पर ज्ञानवर्धक रचनात्मक कार्यक्रम आयोजित। धनोपार्जन हेतु लाटरी,दीपावली मेले इतियादी करवाए गए। जीवन की एक रोमांचित घटना पर निबंध प्रतियोगिता। 'घर बैठे मतदान' एक व्यंग्यात्मक कविता में पूर्वोत्तर से 8 बहनों ने भाग लिया जिसमें से रश्मि बाहेती को सांत्वना पुरस्कार एवं विनीता धूत अपने अच्छे प्रयास के लिए चयनित हुई। मासिक कीर्तन, सुंदरकांड रामायण पाठ इत्यादि नियमित रूप से होते हैं। राधा अष्टमी, जलझुलनी एकादशी ,पितृपक्ष इत्यादि पर स्थानीय शाखाओं द्वारा दान पुण्य एवं भजन कीर्तन कार्यक्रम। नवरात्रि पर माता की चौकी, गरबा, कन्या भोज, भैरव पूजन, गरबा क्वीन कॉम्पीटिशन हर्षोल्लास से संपन्न। सभी शाखाओं द्वारा दीपावली स्नेह मिलन, प्रीतिभोज विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ धूमधाम से संपन्न । अन्नकूट पर छप्पन भोग,भजन कीर्तन इत्यादि। देवउठनी एकादशी पर तुलसी विवाह कार्यक्रम भजन कीर्तन के साथ संपन्न ।देव दीपावली पर वृहद् संख्या में दीप दान। गीताजी के 18 अध्यायों का पाठ किया गया ।

पितृपक्ष पर गायों की पूजा अर्चना कर गौशाला में 251 से अधिक वृक्षारोपण ,लापसी एवं चापड़ सवामणी,चारा पानी, रोटी, गुड़, हरा घास, हरी सब्जियां, ब्राह्मणों को भोजन व दक्षिणा, गायों की सेवा हेतु 3100 की धन राशि सहयोग। 2 पानी की मशीन मंदिर व स्कूल में लगवाई गई।

वृद्धाश्रम में बुजुर्गों को मेखला चादर ,मिठाई, दीपक, पटाके आदि देकर दीपोत्सव मनाया गया। सार्वजनिक पार्क में शुद्ध पेय जल मशीन लगवाई गई। संगठन आपके द्वार कार्यक्रम के तहत शादी विवाह में अनावश्यक ख़र्चे व रूढ़िवादी मानसिकताओं का निवारण जैसे ज्वलंत मुद्दों पर विस्तृत परीचर्चा। फोटोग्राफी प्रशिक्षण कार्यशाला। जरूरतमंद कन्या को विवाह सहयोग सामग्री 3100 की धनराशि दी गई। परिचय सम्मेलन में कोलकत्ता से पधारी सुमित्रा जी काबरा की सहभागिता। कैंसर से पीड़ित व्यक्ति के इलाज़ हेतु 21000 की धन राशि का सहयोग ।

अध्यक्ष–पूनम मालपानी * सचिव–मधु झंवर

वृहतर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

गायों के भोजन हेतु 51 ड्रम, बच्चे को किडनी के इलाज हेतु सहयोग

कोलाकाता प्रदेश द्वारा एक छात्रा को बीएड संस्कृत में कोर्स करने के लिए 10000/- फ़ीस दी गई। गोशाला में गायों को 1800 रोटियाँ और 4 किलो गुड़ दलिया की सवामणी ग्वालों व बच्चों के मध्य पैकेट वितरण किये।

माहेश्वरी सभा ,महिलाओं ,युवा द्वारा प्रतिभा सम्मान आयोजन में 90% मार्क्स लाने वाले छात्र छात्राओं व विशेष उपलब्धि वाले छात्र छात्राओं को अवार्ड देकर सम्मानित। प्रदेश के तत्वावधान में आयोजक संस्था रिसड़ा अंचल के साथ नौ दिवसीय श्री राम कथा श्री श्रीनिवास जी शर्मा के मुखारबिंद से 24 सितंबर से 2 अक्टूबर का भव्य आयोजन में विशेष राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मंजुजी बांगड़ व राष्ट्रीय पूर्वांचल उपाध्यक्ष श्रीमती गिरिजा जी सारडा की उपस्थिति रही। नौ दिवसीय श्री रामकथा में नौ दिन तक दर्सों समितियों के सेवा कार्य किए गए। प्रदेश के प्रयास से राष्ट्रीय महिला सेवा ट्रस्ट के द्वारा एक हमारे समाज की ज़रूरतमंद बहन के दवाइयों के लिए 25000/- का सहयोग, श्री रामपुर सभा महेश सेवा ट्रस्ट से हमारे समाज की महिला कैंसर रोगी महिला को 25,000/- की आर्थिक मदद अप्रैल, मई, जून त्रैमासिक रिपोर्ट में राष्ट्रीय द्वारा कोहिनूर कैटेगिरी प्राप्त। 18 नवंबर को इस 47 बहनों की उपस्थिति में द्वितीय कार्यकारिणी एवं अष्टम कार्यसमिति की बैठक संपन्न। Canara Angel for Women Plan की विशेषता बैंक मैनेजर के द्वारा बताई गई। दक्षिण कोलकाता ग्राम विद्यालय में एक नई कक्षा में नए बेंच, स्टूल के लिए 46500/- रुपया की राशि प्रदान साथ साथ बच्चों में फ्रूटी वितरण। पूर्व कोलकाता चाकुलिया में स्थित ध्यान फाउंडेशन में एक गाय को जीवनदान, देवघर स्थित चाकुलिया नवनिर्माण गोशाला में गायों के भोजन हेतु 51 ड्रम दिए। नवयुवती गाय और बछड़ा का गौदान दिया साथ में हरा चारा, हरी सब्जियां, गुड़, चारा का लड्डू गायों को खिलाया गया। हावड़ा आर्थिक रूप से एक कमज़ोर व्यक्ति का हर्निया के ऑपरेशन हेतु 11 हज़ार रुपया की आर्थिक सहायता दी गई। मध्य कोलकाता 25 स्टॉल लगाकर गृहणियों को लघु उद्योग को बढ़ावा देते हुए दीपावली आनंद मेला का आयोजन। बेलघरिया आधा पीठ बालिका आश्रम में बच्चों को नाश्ता बांटा गया। बाली नवरात्रि पर 31 कन्याओं को स्टेशनरी, स्नैक्स और फलों का वितरण। रिसडा एक ज़रूरतमंद बच्चे को किडनी के इलाज के लिए 11000 रुपया की राशि प्रदान। हिंदमोटर देव दिवाली के पर्व पर 251 दीप दान व गंगा आरती की गई। वीआईपी दीपावली प्रीति सम्मेलन हाऊजी, स्वादिष्ट भोजन का लुत्फ़ उठाते हुए हर्षो उल्लास के साथ मनाया गया।

प्रदेश अध्यक्ष-मंजु पेडीवाल * प्रदेश मंत्री-कुसुम मुंदडा

झारखण्ड बिहार प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

नवरात्रि में अनेक स्थानों पर कन्या पाद पूजन एवं शस्त्र पूजन का आयोजन

झारखण्ड बिहार प्रदेश को मई जून की त्रैमासिक रिपोर्ट में कोहिनूर केटेगरी से नवाजा गया । पूर्वांचल के विराट नगर प्रदेश में ऑनलाइन फायर लैस मिठाई बनाओ प्रतियोगिता में देवघर की प्रिशा मूंधड़ा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया । राष्ट्रीय प्रोजेक्ट घर बैठे मतदान के लिए प्रदेश से गुमला से श्रीमती शशि जी मालाणी की रचना श्रेष्ठ 20 मे स्थान मिला। किशनगंज, गुमला, कटिहार, मुरलीगंज, मुजफ्फरपुर, देवघर,जमशेदपुर मे बड़ी धूम धाम से डांडिया प्रोग्राम में एक–दूसरे के साथ सामूहिक उत्साह का आनंद लिया। शिक्षक दिवस पर कटिहार में सीता जी राठी, चाईबासा में मनीषा जी मोहता को भेट देकर आभार प्रकट किया । पटना में प्रीति मूंधड़ा को विगत 20 सालों से जरूरतमंद बच्चों को निस्वार्थ कार्य करने के लिए सम्मानित किया गया। गणेश चतुर्थी के अवसर पर पटना में वृद्ध आश्रम के लोगों के साथ भजन संध्या का आयोजन किया व सभी के लिए प्रसाद की व्यवस्था की गई। गुलाब बाग, किशनगंज फारबिसगंज में रामदेव जी की दूज से दशमी तक रामदेव चालीसा का पाठ व भजनों का आयोजन किया गया । रानी सती दादी का मंगल पाठ बहुत धूमधाम से सभी बहनों ने किया । वामन द्वादशी पर पटोरी में भगवान का भोग लगाकर भजन कीर्तन किया गया । पटना सदस्य ने शक्ति पीठ बड़ी पटन के दर्शन किये। पितृपक्ष में पूरे प्रदेश संगठन मे गौमाता को कुल गुड 300 किलो, चौकर, कद्दू, हरी घास सब्जी 45 किलो रोटी 400, दलिया 10 किलो खिलाया। 15000/– की सेवा राशी चारा के लिये, पक्षी एवं चीटियों के लिए सवामणी जैसे कार्य किये गये । गुमला में टीबी के 5 मरीजों को अच्छी खुराक के हेतु 18,000/ राशि प्रदान की गई। कटिहार संगठन ने तीनगछिया काली मंदिर में छोटे–छोटे बच्चों व बड़ों को दिवाली के उपलक्ष्य में नए कपड़े वितरित किए गए। पटना संगठन में 51, झुमरी तिलैया में 31, पटोरी मे 21 फारबिसगंज, रांची में 65, मुरलीगंज, देवघर मे 51 मुजफ्फरपुर में 21 कन्याओं को पूजन करके उपहार प्रदान किया । मुजफ्फरपुर व देवघर में धनतेरस के दिन आंगनवाड़ी स्कूल में बच्चों को पटाखे एवं मिठाई दी गई। राहगीरों को इडली एवं सांभर और लड्डू खिलाए। करजाइन बाजार में 151 बच्चों को नाश्ता करवाया एवं खाना भी खिलाया। रांची के लक्ष्मी नारायण मंदिर में दशहरे के दिन सभी के घरों में सामूहिक शस्त्र पूजन किया गया। चाईबासा शाखा ने महिषासुर मर्दिनी पर नृत्य नाटिका करवाई एवं ड्रइंग कंप्टीशन में बच्चों को उपहार दिए। कटिहार में उच्च माध्यमिक विद्यालय में लड़कियों के बीच सेनेटरी पैड का वितरण किया गया और उन्हें महामारी के दौरान स्वच्छता पर अवगत कराया गया। जमशेदपुर मे दीपावली

मिलन मे माँ लक्ष्मी के आठ स्वरुप के दर्शन एवं स्तुति की प्रस्तुति की गयी,जिसने पुरे मंडल परिसर को माँ लक्ष्मीमय कर दिया । गुलाब बाग में सोनौली चौक स्थित शिव मंदिर में भगवान गिरिराज धरण जी की गोबर से आकृति बनाकर छप्पन भोग का प्रसाद लगाया। फारबिसगंज मे सामूहिक तुलसी विवाह बडी धूमधाम से मनाया। तुलसी जी को दिया हुआ सामान दो ज़रूरतमंद कन्या को दहेज के रूप दिया गया । कटिहार मे चिल्ड्रन डे मे अमला टोला के आंगनबाड़ी बच्चों के के साथ केक काटा,उपहार, मिठाइयां, चॉकलेट आदि वितरित किया। प्रदेश के सभी संगठन मे दीपावली मिलन, अन्नकूट प्रसाद, गोपाष्टमी, आमला नवमी, तुलसी विवाह, लोक पर्व छठ, देव दीपावली बहुत ही धूम धाम से मनाया गया।

अध्यक्ष – निर्मला लड्ढा * सचिव – संगीता चितलांगिया

पश्चिम बंगाल माहेश्वरी महिला संगठन

गोवर्धन लीला के साथ आकर्षक मयूर डांस की हुई प्रस्तुति

श्री कृष्ण की लीलाओं में है, जीवन का अद्भुत सार
हर लीला में ज्ञान छिपा है, जो मिटाए तम, अंधकार।

पावन दामोदर माह में मालदा माहेश्वरी महिला संगठन ने श्री गोवर्धन पूजा का भव्य आयोजन किया ।

हमारे कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री कृष्णा कल्याणी जी, रायगंज और विशेष अतिथि के रूप में श्री कृष्णेन्दु नारायण चौधरी जी उपस्थित थे ।

श्री कृष्णा कल्याणी जी का स्वागत मालदा माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष श्री गोपाल जी झंवर द्वारा किया गया और श्री कृष्णार्नेदु नारायण चौधरी जी का स्वागत माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री शिवशंकर जी सारडा द्वारा किया गया। फिर दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम की शुरुआत की गई । श्री कल्याणी जी के आशीर्वचनों ने हाल में उपस्थित सभी लोगों के मन में उत्साह भर दिया। पश्चिम बंगाल माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के चेयरमैन श्री जय किशनजी माहेश्वरी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत गोवर्धन पूजा के महत्व को बताते हुए की गई। इसके बाद नाटक और नृत्य द्वारा गोवर्धन लीला दर्शायी गई। पूरा कार्यक्रम डिजिटल किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण मयूर डांस था। छप्पन भोग की प्रथा को समझाते हुए प्रभु को छप्पन भोग लगाया गया।

इसके पश्चात कोलकाता से आई भजन गायिका ललिताजी द्वारा भजनों की मनोरम प्रस्तुति हुई। साथ-साथ भजन housie भी खिलाई गई । श्रीमती राधिका सारडा द्वारा गोवर्धनधारी भगवान कृष्ण की अप्रियतम कलाकृति भी हमारे कार्यक्रम की आकर्षण थी । सम्माननीय अतिथियों और लोगों ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

अध्यक्षा-अमृता सारडा * सचिव-नेहा चितलांगिया

उत्कल (उड़ीसा) प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

राजस्थानी थीम पर डांस कार्यक्रम, शिक्षा से दीक्षा पर प्रकाश

शिक्षा से दीक्षा पर प्रकाश डाला गया व नवरात्रि पर दुर्गा के नौ स्वरूप की नृत्य द्वारा प्रस्तुति। ज्ञान सिद्धा समिति की संयोजिका स्नेह पचीसिया द्वारा आयोजित शिक्षा से दीक्षा सेमिनार का आयोजन जूम सभागार में किया गया।

हमारे प्रमुख वक्ता, पूर्वांचल सह प्रभारी श्रीमती सरोजजी मालपानी ने गहरे अर्थ पर प्रकाश डाला। विशेष अतिथि बड़बिल से विकासजी साबू (संस्कृत भाषा) व कटक से श्री सुनीलजी कोठारी (धार्मिक ग्रंथ), श्री महावीरजी मूंधड़ा (सीए) (धन प्रबंधन), श्रीमती वंदनाजी भरालेवाला (योग और ध्यान), डॉ.पूनमजी झंवर मूंधड़ा (सात्विक भोजन) सभी वक्ताओं ने अपने विषयों पर संक्षिप्त और सारगर्भित विचार साझा किए। इसकी सफलता में सभी सह संयोजिकाओं के समर्पण और कड़ी मेहनत का परिणाम रहा।

संस्कृति सिद्धा समिति की संयोजिका निलिमा राठी द्वारा सभी सह संयोजिकाओं ने नवरात्र पर जिला से नौ दिनों तक दुर्गा के नौ रूपों की प्रस्तुति के विडियो नृत्य द्वारा दिखाए। राष्ट्रीय बैठक मंगल प्रेरणा में उड़ीसा की त्रैमासिक रिपोर्ट को कोहिनूर कैटेगरी प्राप्त हुई।

अंगुल तालचेर ढेंकानाल– एक कन्या के विवाह पर 61 हजार नकद और गहने कपड़े दिए। **ब्रजराज नगर** – डांडिया का आयोजन बेस्ट कास्टयुम, बेस्ट परफॉर्मर्स के आधार पर किया। महिला संगठन ने बैतरणी नदी में स्नान करके गाय दान की। **बड़बिल कैटेंझर**– जिला की बैठक में संस्कृत श्लोक गायन प्रतियोगिता के विजेताओ को पुरस्कार दिया गया। **बरगढ़**– डांडिया कार्यक्रम व दिवाली मिलन किया गया। **ब्रह्मपुर गंजाम**– एक गरीब कन्या के विवाह पर गहने कपड़े और 11000– नकदी दिए। दिवाली सामग्री के पैकेट 100 घरों में बांटे। **बालेश्वर**– माहेश्वरी भवन में सुंदरकांड का पाठ हर महीने करने का तय किया। युवा संगठन के साथ डांडिया नाइट आयोजन किया। **बारीपदा मयुरभंज**– डांडिया के साथ उत्तम वेशभूषा, उत्तम सिंगल डांस,उत्तम जोड़ी,उत्तम ग्रूप डांस प्रतियोगिता रखी। **भद्रक**–महिलाओ की बैठक में सभी बहनों को संगठन में जूड़ कर कार्यक्रम करने के लिए प्रोत्साहित किया। **भुवनेश्वर**–दिवाली मिलन पर महिलाओं ने राजस्थानी थीम पर डांस कार्यक्रम किया। **जाजपुर**– कन्या के रूप में दिविजा झंवर ने नौ दुर्गा का रूप धारण किया। महिलाओं द्वारा सुंदर झांकियां की प्रस्तुति व डांडिया कार्यक्रम किया। **झारसुगुड़ा**– गरबा क्लासेस ट्रेनर प्रीति भट्टर,राधिका भट्टर,वृन्दा भट्टर द्वारा ली गई जिसमें 40 महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

कटक– दिवाली बंधुमिलन के साथ समाज के सभी बुजुर्गों का सम्मान किया गया। **मल्कानगिरी**– बाल संस्कार सिखाऐ, भगवान गणेश का चित्र बनाओ ड्रइंग प्रतियोगिता रखी। **राउरकेला सुंदरगढ़**– प्रांतीय सभा की बैठक में महिलाओ ने स्वागत गीत व सांस्कृतिक कार्यक्रम किया। **संबलपुर**– दुर्गा पूजा कलश यात्रा में 150 लोगों को खाना खिलाया व 115 बच्चों को मिठाई,पटाखे बांटे। चांदनी थीम पर डांडिया किया।

अध्यक्ष–अस्मिता मूंदड़ा * सचिव–शशी डोंगरा

*****

पश्चिमांचल

दक्षिणी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

दीपावली कार्निवाल मेला आयोजित, मूकबधिर एवं विशेष बच्चों के साथ कार्यक्रम

संगठन के अंतर्गत सभी जिलों ने कई सराहनीय कार्य किए। भीलवाड़ा जिले में तृतीय कार्य समिति और द्वितीय कार्यकारिणी मीटिंग बनेड़ा तहसील में राष्ट्रीय संगठन मंत्री ममताजी मोदानी व प्रदेश अध्यक्ष सीमा कोगटा के नेतृत्व में संपन्न हुई। जिलों को सुचारू रूप से चलाने के गुर सिखाए गए। रस्म-रिवाज पर आधारित नाटिका के माध्यम से समाज की अच्छाइयों और बुराइयों पर प्रकाश डाला गया। दीपावली कार्निवाल मेला आयोजित हुआ, जिसमें 70 से अधिक स्टॉल लगे। निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण कार्यक्रम से 11 महिलाएं और 8 बालिकाएं लाभान्वित हुईं। पश्चिम हिमाचल संयुक्त मंत्री शिखाजी भदादा व प्रदेश अध्यक्ष सीमा कोगटा ने बागौर तहसील का भ्रमण किया व संगठन को सुचारू रूप से चलाने की बहनों को जानकारी प्रदान की। उदयपुर जिले में बच्चों को पर्यावरण से संबंधित मॉडल बनाना सिखाया गया और विज्ञान मेला आयोजित हुआ।

चित्तौड़ जिले में बाल दिवस पर मूकबधिर एवं विशेष बच्चों के साथ कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि कुंतल तोषनीवाल थीं। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रदर्शनी लगाई गई। राजसमंद जिले की संस्कृति द्वितीय कार्यकारिणी बैठक कुंवारिया में आयोजित हुई, जिसमें मुख्य अतिथि ममता मोदानी व प्रदेश अध्यक्ष सीमा कोगटा व सुशीला असावा थे। ममता जी ने ट्रस्ट संबंधी जानकारी दी । सीमा कोगटा ने खर्चीले रीति-रिवाज पर रोक लगाने का आह्वान किया। डॉ. सुशीला असावा ने प्रेरणादाई उद्बोधन दिया। पुष्पा राठी ने रिपोर्टिंग कैसे करे के बारे मे बताया।

अध्यक्ष सीमा कोगटा * सचिव-डॉ.सुशीला असावा

मध्य राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

जायल और छोटी खाटू में नए संगठनों का गठन, गौ सुरक्षा हेतु रेडियम बेल्ट लगवाए

हर दिन हो जैसे त्योहारों की मिठास
और नवरात्रि, करवा चौथ,गणेश उत्सव,
हो या हो दीपावली की आस।
भाईदूज में भाई की दुआओं से महके जीवन,
हर पल बहे खुशियों की हवा, यही हो विश्वास।

इन्हीं त्यौहारों से परिपूर्ण मध्य राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वाधान में संपूर्ण प्रदेश में सभी त्योहार काफी हर्षोल्लास से मनाये गए।नवरात्रा में नागौर, टोंक अजमेर सवाई माधोपुर जिले के सभी संगठनों में गरबा रास का आयोजन किया गया।सम्पूर्ण प्रदेश में गणेशोत्सव, कन्या भोज समारोह, दीपावली स्नेह मिलन समारोह आयोजित हुए। अजमेर जिले द्वारा कृष्ण गोठ का आयोजन पुष्कर में किया गया, जिसमें कृष्ण अन्ताराक्षरी, भजन, कृष्ण एक्ट, तंबोला आदि प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक मंगल प्रेरणा में प्रदेश से बहनों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और परम पूज्य राष्ट्रीय संत स्वामी गोविंददेवगिरी जी महाराज के प्रेरक उद्बोधन और मोटिवेशनल स्पीकर अविनाश जी शर्मा की प्रेरणास्पद कार्यशाला का लाभ उठाया। त्रैमासिक रिपोर्टिंग में प्रदेश को पुनः कोहिनूर केटेगिरी प्राप्त हुई। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली सभी प्रतियोगिताओं के लिए प्रदेशाध्यक्ष शशि लड्ढा और प्रदेश सचिव मनीषा बागला के सानिध्य में सभी स्थानीय अध्यक्षों के साथ चर्चा की गई।

प्रदेश में नए संगठन के रूप में जायल और छोटी खाटू दो पुष्प पल्लवित हुए। प्रदेश संगठन मंत्री श्रीमती कृष्णा मंत्री और जिलाध्यक्ष शोभा मूंदड़ा व जिला सचिव सुमित्रा सोमानी के सानिध्य में माहेश्वरी महिला मंडल छोटी खाटू का गठन किया जिसमें सरला जी लोहिया ने अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। इसी प्रकार उर्मिला जी जाखेटिया के नेतृत्व में जायल माहेश्वरी महिला मंडल का गठन किया गया। टोंक,केकड़ी के द्वारा मोती सागर डेम वन विहार का आयोजन किया। देवली में चिकित्सा शिविर लगाकर महिलाओं द्वारा रक्तदान भी किया गया। शिक्षक हमारे मार्गदर्शक है। प्रदेश के सभी संगठनों में शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित कर शिक्षकों का उत्कृष्ट सेवा कार्य के लिए सम्मान किया गया।

एक पेड़ माँ के नाम राष्ट्रीय आह्वान पर संपूर्ण प्रदेश में वृक्षारोपण का आयोजन भी किया गया। मदनगंज में गायों को रात में अंधेरे के दौरान एक्सीडेंट से बचाने के लिए समस्त हाईवे एवं ग्रामीण रास्तों पर, गौ सुरक्षा हेतु रेडियम बेल्ट लगाए गए। इस बेल्ट पर अंधेरे में लाइट पड़ते ही यह चमकने लगता है जिससे गौधन की सुरक्षा होती हैं।

प्रदेश अध्यक्ष–शशि लड्ढा * प्रदेश सचिव–मनीषा बागला

पूर्वी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

''छुपा रुस्तम'' प्रतियोगिता, 57 बहनों द्वारा अयोध्या और बनारस के देव दर्शन

नवरात्रि में कन्या पूजन एवं 30 बालिकाओं का हीमोग्लोबिन टेस्ट करवाया साथ ही, तीन दिवसीय डांडिया उत्सव बड़े उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया ।

प्रदेश ने सतरंगी बैठक का आयोजन छाबड़ा (जिला बारां) में किया गया, जिसमें निवृत्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष आशाजी माहेश्वरी ने ''बदलते परिवेश में कैसे हो हमारे संस्कार'', पश्चिमांचल उपाध्यक्ष मधुजी बाहेती ने श्रृंखलाबद्ध संगठन की जानकारी दी। रा. कार्यसमिति स. कुंती मूंदड़ा ने विधान की जानकारी दी। प्रदेशाध्यक्ष मंजु भराड़िया ने लीडर कैसा होना चाहिए, पर प्रकाश डाला बताया कि लीडर को अपने ईगो से परे, सब को साथ लेकर चलना चाहिए । नीलम तापड़िया द्वारा मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।

संकल्प सिद्धा समिति के अंतर्गत **''मेड इन इंडिया''**, **''अपशिष्ट व कचरा प्रबंधन''**, **''ऊर्जा संरक्षण एवं वर्षा जल संरक्षण''**, **''शुद्ध वायु कैसे मिले''** जैसी सामाजिक समस्याओं के विषय पर नाटिकाओ का मंचन किया गया ।

पूर्वी राजस्थान द्वारा चारों जिले से 57 बहनों को अयोध्या ओर बनारस के देव दर्शन करवाए गए। प्रदेश अध्यक्ष मंजू भराड़िया एवं रा.कार्य समिति कुंती मुंदडा के कुशल नेतृत्व में यात्रा बहुत सुखद व अविस्मरणीय रही। ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा का लाभ उठाकर देवदर्शन सुगमता से किए गए। अयोध्या से बनारस वंदे भारत ट्रेन का सफर बहुत सुखद रहा। यात्रा पर जाने वाली सभी बहनों ने इस यात्रा की भूरी भूरी प्रशंसा करी।

प्रदेश में ''छुपा रुस्तम'' प्रतियोगिता कराई गई इस कार्यक्रम से बहनों की छुपी प्रतिभा उजागर हुई। एक पेड़ मां के नाम राष्ट्रीय कार्यक्रम में चारों जिलों द्वारा 2150 पौधे लगाए गए।

ऑनलाइन परिचय सम्मेलन में चार वीडियो बनाकर भेजे गए। महिला ब्लॉक लिखने में मधु जी बाहेती की रचना मन की पीर प्रकाशित हुई।

51 तुलसी पौधों का वितरण किया गया। सुश्री दीपिका कचोलिया ने सिविल जज न्यायिक परीक्षा में पांचवी रैंक प्राप्त कर समाज का गौरव बढ़ाया उन्हें समाज द्वारा सम्मानित किया गया। प्रदेश द्वारा निरंतर समाज उत्थान कार्य किए जा रहे है।

प्र. अध्यक्ष– मंजू भराड़िया * प्रदेश मंत्री –नीलम तापड़िया

उत्तरी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

दो जरुरतमंद ब्राह्मण कन्याओं को विवाह का सामान और नगद राशि प्रदान

चूरू जिला के अंतर्गत माहेश्वरी महिला मण्डल सरदारशहर द्वारा दो जरुरतमंद ब्राह्मण कन्याओं को विवाह का सामान और नगद राशि प्रदान की गई। महिला मण्डल ने इस पुण्य कार्य की पहल की है । भगवान की असीम कृपा और बड़ों के आशीर्वाद तथा हमारे मंडल परिवार की बहनों के सहयोग से ये कार्य सफल हो सका। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हमारा मंडल ऐसे पुण्य के कार्य आगे भी करता रहेगा।

अध्यक्षा–प्रेरणा लखोटिया * मंत्री–दीप्ति बजाज

बीकानेर माहेश्वरी महिला संगठन का पिकनिक कार्यक्रम

जिला बीकानेर माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा दिनाक 30 नवम्बर अमावस्या को बीकानेर के कावनी गांव के खेत में पिकनिक का आनंद लिया साथ में खेत के लोगो से खेत की पूरी जानकारी ली सभी बहनों ने गोबर के उपले थापे मिट्टी के चूल्हे पर बाजरी रोटी बनाई और पौधा रोपण किया

पश्चिमी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

3 दिवसीय खाटू श्याम कथा का आयोजन व 51 कन्या का पाद पूजन सम्पन्न

राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक मंगल प्रेरणा में प्रदेश को त्रैमासिक रिपोर्ट मूल्यांकन में कोहिनूर कैटेगरी प्राप्त हुई । प्रदेश सचिव रीटा बाहेती द्वारा जालोर जिले की यात्रा की गई । जालोर जिला व स्थानीय संगठन के साथ सामूहिक बैठक ली गई जिसमें प्रदेश की अगली कार्यकारिणी बैठक लेने के लिए जालोर जिले की बहनों को प्रेरित किया गया ।

जोधपुर जिला संगठन द्वारा साइं धाम मंदिर में 3 दिवसीय खाटू श्याम कथा का आयोजन किया गया साथ ही 100 ब्राह्मण को भोजन करवाया गया । जोधपुर स्थानीय पूर्वी क्षेत्र द्वारा 10 दिन का गरबा प्रशिक्षण करवाया जिसमें करीब 150 बच्चों में महिलाओं ने गरबा सीखा साथ ही भव्य गरबा कार्यक्रम आयोजित किया गया। जोधपुर स्थानीय उत्तरी क्षेत्र द्वारा ब्राह्मण परिवार को हरतालिका तीज का उद्यापन करवाया गया और जरूरतमंद महिला की प्रसुति का खर्च उठाया गया । जोधपुर स्थानीय दक्षिण क्षेत्र द्वारा अष्टमी के दिन 51 कन्याओं का पूजन कर भोजन करवाया गया। बाड़मेर जिले द्वारा गणेश उत्सव कार्यक्रन मनाया गया और सोमवती अमावस्या पर गौशाला में सत्संग का कार्यक्रम एवं गायों के गुड़ व चारे की व्यवस्था की गई । वहां टीन शेड के निर्माण हेतु रु. 21000 दिए गए । प्रदेश सचिव द्वारा नवरात्रि में स्वच्छ भारत अभियान के तहत स्वच्छता कार्यक्रम करवाया गया । चौहटन गांव में शरद पूर्णिमा उत्सव एवं महिला व बच्चों को 9 दिन का गरबा प्रशिक्षण करवाया गया एवं सामूहिक गरबा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

पाली जिले द्वारा अपना घर वृद्ध आश्रम में भोजन प्रसादी व भजन का आयोजन किया गया । राधा अष्टमी पर एक दिवसीय पारिवारिक भ्रमण किया गया जिसमें राधा रानी दर्शन एवं ओसियां माताजी मंदिर में चुन्री मनोरथ किया गया ।

जैसलमेर जिला संगठन द्वारा अमावस्या पर 200 गरीब बच्चों को भोजन व गौशाला में गुड़ व लापसी दी गई। 8 अक्टूबर को गरबा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

जालौर जिले व स्थानीय संगठन द्वारा ब्रह्मा कुमारीज बहनों के साथ नवरात्रि की सुंदर झांकियां का आयोजन एवं 9 दिन गरबा नृत्य का आयोजन किया गया । आहोर गांव में करवा चौथ पर महिलाओं ने सामूहिक रूप से पूजा की तथा साथ ही खेल व मनोरंजन के कई कार्यक्रम भी आयोजित किये ।

प्रदेश अध्यक्ष–मनीषा मून्दड़ा * प्रदेश सचिव–रीटा बाहेती

सामजिक संस्थाओं से जुड़े हुए व्यक्तियों के लिए

किसी भी सामाजिक संस्था के सन्दर्भ में कुछ ख़ास बातें जो आपको बहुत काम काम आएंगी

1. आप कुछ नहीं करेंगे तो आप को कोई कुछ नहीं कहेगा 2. आप अगर सक्रिय हैं तो, उंगलिया भी आप पर ही उठ सकती हैं। 3. अगर आप ये नहीं सोचेंगे की श्रेय किसको मिलेगा तो आप बहुत कुछ कर सकते हैं। 4. आप जितना ज्यादा काम करेंगे उतना ज्यादा और काम करना पड़ेगा। 5. जिम्मेदारी उसी की तरफ खिंची आती है जो उन्हें उठाना चाहता है। 6. आप अपने मन से जो भी प्रोजेक्ट करेंगे उसकी सफलता का श्रेय संस्था को मिलेगा और असफलता की जवाबदेही आपकी ही होगी। 7. आप को प्रशंसा तब मिलेगी जब आप उसकी अपेक्षा करना बंद कर देंगे। 8. आप लोकप्रिय तब होंगे जब अपने साथियो के कार्य को सराहेंगे और उनका उत्साह बढ़ाएंगे। 9. आप कब सही थे कोई याद नहीं रखेगा, आप कब गलत थे कोई नहीं भूलेगा। 10. सबसे ख़ास बात सामाजिक कार्यों का उद्देश्य मन की संतुष्टि होता है। इस के लिए बहुत कुछ सहना होता है। 11. कार्य करते हुए कभी कभी कोई आपको जानबूझकर अपमानित भी कर सकता है तो आप कार्य पर ही ध्यान दें। क्योंकि किसी को सम्मान देना या अपमान करना यह उसके स्वयं के विवेक और संस्कार का प्रश्न है। आपकी आत्मसंतुष्टि से बढ़कर कुछ नहीं है।

नववर्ष 2025 की सभी बहनों को हार्दिक शुभकामनाएं

विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या

सौ. प्रेमा बंग

सौ. आशा तखा

सौ. सुनीता मल

सौ. सुशीला गांधी

सौ. शीला टावरी

सौ. विद्या दग्गड़

सौ. सुनीता सोमानी

सौ. सुनीता तापड़िया

सौ. सुनंदा लड्ढे

सौ. सुनीता मैया

सौ. पुष्पा मूंणड़ा

सौ. उषा बाहेती

सौ. शिल्पा चांडक

डॉ. सौ. पद्मा धूत

सौ. संध्या केला

सौ. कल्पना चांडक

सौ. राधिका मूंणड़ा

सौ. शोभा गांधी

सौ. पूनम झंवर

सौ. मीनू भट्टड़

सौ. वैशाली चांडक

सौ. प्रेरणा मूंणड़ा

सौ. स्मिता सोनी

सौ. शीतल मूंणड़ा

सौ.निशि सांवल

सौ. शिल्पा चांडक

सौ. ममता मालाणी

सौ. संगीता राठी

नववर्ष 2025 की सभी बहनों को हार्दिक शुभकामनाएं

विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

सौ. मीना सांवल
सचिव अ.भा. महिला सेवा ट्रस्ट

सौ. भारती राठी
राष्ट्रीय कार्यसमिति

सौ. डॉ. तारा माहेश्वरी
सम्माननीय कार्यसमिति

सौ. सुषमा बंग
प्रदेश अध्यक्ष

सौ. नीलिमा मंत्री
प्रदेश सचिव

सौ. नीलिमा चांडक
कार्यसमिति (रा.अध्यक्ष कोटा)

सौ. ज्योति राठी
आंचलिक प्रभारी

सौ. माधुरी मोदी
आंचलिक प्रभारी

सौ. उषा करवा
सम्माननीय कार्यकारिणी

सौ. लक्ष्मी राठी
महिला सेवा ट्रस्ट कार्यकारिणी

पत्रिका पंजीयन क्र./2001/6505
दिनांक 29/04/2002
पोस्ट पंजीयन क्र. 536

पोस्ट दिनांक

प्रेषक :
माहेश्वरी महिला
22/15, यशवंत निवास रोड
इन्दौर (म.प्र.) मो. 9329211011

प्रकाशक एवं व्यवस्थापक–श्रीमती सुशीला काबरा, माहेश्वरी महिला समिति 22/15 यशवंत निवास रोड, इन्दौर से प्रकाशित एवं अप्सरा फाईन आर्ट प्रिंटर्स, 89, एम.जी. रोड, इन्दौर 2434147 से मुद्रित।